सूरदास मदनमोहन

जीवनी और पदावली

ब्रज-कवि-माला सं० १

सूरदास मदनमोहन

जीवनी और पदावली

रचयिता :
प्रभुदयाल मीतल

प्रकाशक :
अग्रवाल प्रेस, मथुरा.

मूल्य २)

प्रथम संस्करण
वैशाखी पूर्णिमा सं० २०१५ वि०

ब्रज-कवि-माला

मुद्रक :
त्रिलोकीनाथ मीतल, भारत प्रिंटर्स, मीतल निवास, मथुरा.

विषय-सूची

★

प्राक्कथन

हिंदी के भक्त कवियों में सूरदास नामक कई महात्मा हुए हैं। उनमें अष्टछापी सूरदास, सूरदास मदनमोहन और अकबर के दरबारी गायक बाबा रामदास के पुत्र सूरदास विशेष उल्लेखनीय हैं। वे तीनों महानुभाव समकालीन और अपने-अपने क्षेत्रों में आदरणीय एवं महत्त्व-पूर्ण व्यक्ति थे; किंतु भक्ति-भावना, काव्य-महत्त्व और रचना-बाहुल्य के कारण अष्टछापी सूरदास सबसे अधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हुए। इस प्रसिद्धि और लोकप्रियता के कारण कालांतर में विभिन्न सूरदासों की कतिपय जीवन-घटनाएँ अज्ञानता वश अष्टछापी सूरदास की जीवनी में जुड़ गईं और उनकी अनेक रचनाएँ सूरसागर में सम्मिलित हो गईं। सूरदास मदनमोहन की रचनाएँ अष्टछापी सूरदास की रचनाओं से बहुत-कुछ मिलती हुई हैं, अतः उनकी कतिपय पद-सरिताएँ तो सूर के 'सागर' में इस प्रकार समा गईं कि आज चेष्टा करने पर भी उनका पृथक् करना कठिन है।

अष्टछापी सूरदास के बहुसंख्यक पदों के साथ ही साथ सूरदास मदनमोहन के कुछ पद भी सदा से कीर्तन पोथियों में संकलित होते रहे हैं और कीर्तनियों एवं गायकों द्वारा गाये जाते रहे हैं; किंतु एक स्थान पर जो पद अष्टछापी सूरदास के नाम से मिलता है, वही अन्यत्र सूरदास मदनमोहन की छाप से प्रसिद्ध है। ऐसी दशा में यह निश्चय करना निस्संदेह एक समस्या है कि उक्त पद वास्तव में किस का है।

विगत पच्चीस वर्षों से अनेक विद्वानों द्वारा अष्टछापी सूरदास का वैज्ञानिक अध्ययन हो रहा है। इसके फल स्वरूप अन्य सूरदासों की

जीवन-घटनाएँ पृथक कर उनकी जीवनी की एक निश्चित रूप-रेखा बन गई है। अब उनकी रचनाओं का अनुसंधान पूर्वक सुसंपादन कर उनके प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित करने की अत्यंत आवश्यकता है। सूरसागर के नाम से अब तक जितने ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, उनमें काशी नागरी प्रचारिणी सभा का संस्करण ही सर्वोत्तम है। जहाँ तक प्रामाणिकता का प्रश्न है, सभा के संस्करण में भी अनेक त्रुटियाँ हैं, जिनका निराकरण होना आवश्यक है। इसकी सब से बड़ी त्रुटि यह है कि इसमें जहाँ सूरदास के सैकड़ों पद सम्मिलित होने से रह गये हैं, वहाँ अन्य कवियों के अनेक पद इसमें सूरदास के नाम से छप गये हैं!

सूरसागर का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि इसमें जहाँ परमानंददास, कुंभनदास, हित हरिवंश, हरिराम व्यास, गो० तुलसीदास प्रभृति कई भक्त कवियों के अनेक पद हैं, वहाँ सूरदास मदनमोहन के भी कतिपय पद सम्मिलित हैं[1]। गौड़ीय संप्रदाय के बाबा कृष्णदास ने सूरदास मदनमोहन के पदों की एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है। इसमें अष्टछापी सूरदास के भी कुछ पद मुद्रित हो गये हैं[2]। चूँकि अष्टछापी सूरदास और सूरदास मदनमोहन के पदों में नाम-छाप के साथ ही साथ कई दूसरी बातों में भी समानता है, अतः अन्य कवियों के पदों की अपेक्षा इन दोनों के पदों को पृथक् करना अत्यंत दुष्कर है। फिर भी सूरसागर के संशोधन और संपादन से पूर्व सूरदास मदनमोहन के पदों का निश्चय होना आवश्यक है।

---

१. 'भारतीय हिंदी परिषद्' के प्रयाग अधिवेशन में पठित मेरा निबंध—"सूरसागर का संशोधन और संपादन।"

२. श्री सूरदास मदनमोहन की सुहृद वाणी

सूरदास मदनमोहन के पदों का सुसंपादित संकलन निकालने में सबसे बड़ी बाधा यह है कि उनका कोई प्रामाणिक संकलन उपलब्ध नहीं होता है। कीर्तन-संग्रहों में उनके जो थोड़े से पद मिलते हैं, उनके विषय में निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि वे वस्तुतः उनके ही हैं, अथवा अष्टछापी सूरदास के। फिर जो पद उपलब्ध होते हैं, उनका पाठ अत्यंत विकृत और अशुद्ध मिलता है, जो प्रामाणिक प्रतियों के अभाव में शुद्ध भी नहीं किया जा सकता है। यह कठिनाई ब्रजभाषा के सभी प्राचीन कवियों की रचनाओं के संकलन में होती है। हिंदी के मध्य कालीन साहित्य की समृद्धि के लिए इसे अनुसंधान प्रिय विद्वानों की निरंतर चेष्टा से ही दूर किया जा सकता है।

सूरदास मदनमोहन की रचनाओं के संकलन का सर्वप्रथम प्रयास श्री वियोगी हरि जी ने किया था। उनके सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'ब्रज-माधुरी सार' में उनके १४ पद संकलित किये गये। इसके बाद डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल कृत 'अकबरी दरबार के हिंदी कवि' नामक प्रबंध में उनके १२ पद संगृहीत हुए। ये सभी पद विभिन्न कीर्तन-संग्रहों में से संकलित किये गये थे, जिनमें प्रामाणिकता और अपपाठ की अनेक त्रुटियाँ विद्यमान हैं।

गौड़ीय संप्रदाय के निष्ठावान अन्वेषक बाबा कृष्णदास ने वृंदाबन में उपलब्ध प्रतियोंके आधार पर उनके १०५ पद 'श्री सूरदास मदनमोहन की सुहृद वाणी'के नाम से प्रकाशित किये हैं। इस पुस्तक में संपादन और पाठ-शुद्धि का प्रयास किये बिना ही पदों का प्रकाशन किया गया है, जिसके कारण प्रायः सभी पद अत्यंत अशुद्ध रूप में छपे हैं। इसमें अप्रामाणिक और संदिग्ध पदों के अतिरिक्त कुछ पद ऐसे भी हैं, जो निश्चित रूप से अष्टछापी सूरदास के हैं। 'अथ लालजू की बधाई' शीर्षक का एक पद— "नंद जू मेरे मन आनंद भयौ, हौं गोबर्धन तैं आयौ"—ब्रज माधुरी सार में भी है, किंतु यह पद सदा से अष्टछापी सूरदास के नाम से प्रसिद्ध रहा

है। इसका एक अन्य पद—"व्रत धरि देवी पूजी। जाके मन अभिलाष न दूजी।" भी सूरदास का ही समझा जाता है। इसमें होली के कई बड़े पदों का संकलन किया गया है, जिनमें—"खेलत मोहन फाग भरे रंग।" तथा "स्याम संग खेलन चली स्यामा, सब सखियन जोरि।" टेकों के पद सभा के सूरसागर में सं० ३५१० और ३५२५ पर भी मुद्रित हैं। ये पद अष्टछापी सूरदास के ही माने जाते हैं। इसका अंतिम पद—"गहनौ तौ चुरायौ माई, काहू केसौराय कौ।" सूरदास मदनमोहन का नहीं समझा जा सकता है। इन सब त्रुटियों के कारण इस पुस्तक की उपयोगिता बहुत कम हो गई है। इस पर भी यह आज कल अप्राप्य है।

मैं सूरदास की रचनाओं के सुसंपादित संस्करण प्रकाशित कराने की बहुत दिनों से चेष्टा कर रहा हूँ; किंतु यह बहुत बड़ा कार्य है, जिसके लिए प्रचुर परिश्रम और पर्याप्त समय की अपेक्षा है। अपनी इच्छा के अनुसार 'सूरसारावली' का प्रकाशन मैंने करा दिया है। 'साहित्य-लहरी' का कार्य भी निकट भविष्य में पूरा हो जावेगा। सूरदास की सबसे बड़ी और विवाद रहित रचना सूरसागर है, किंतु इसके निश्चित स्वरूप और सुसंपादन की ही कई विवादग्रस्त समस्याएँ हैं। इन समस्याओं में सर्व प्रथम सूरदास मदनमोहन के पदों का प्रथक्करण करना है। प्रस्तुत पुस्तक सूरसागर के सुसंपादन संबंधी प्रयास का ही परिणाम है; यद्यपि इसका स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी कुछ महत्व है।

सूरदास मदनमोहन की रचनाओं के सुसंपादित संकलन के लिए एक मात्र आधार बाबा कृष्णदास की पुस्तक थी, जिसमें विभिन्न कीर्तन पोथियों के उपलब्ध पदों का भी संग्रह हो गया है। इस पुस्तक के पद इतने अशुद्ध हैं कि किसी अन्य प्रामाणिक प्रति से शुद्ध किये बिना उनकी कोई उपयोगिता नहीं है। विद्या विभाग, कांकरौली के सुप्रसिद्ध सरस्वती भंडार में हिंदी विभागीय बंध सं० ४७ की पुस्तक सं० ७ में सूरदास मदनमोहन के पदों का संकलन होना ज्ञात हुआ। इससे आशा हुई कि

उक्त संकलन जहाँ प्रामाणिक पाठ में सहायक होगा, वहाँ उससे कुछ नवीन पद भी प्राप्त होंगे। इसके लिए विद्या विभाग के संचालक श्री कंठमणि जी शास्त्री को लिखा गया। उन्होंने मेरी प्रार्थना पर उक्त पदों की प्रतिलिपि भेजने की कृपा की। इस प्रति में १२६ पद हैं, जिनमें एक पद राजा आशकरण का है। शेष १२५ पदों पर सूरदास मदनमोहन की नाम-छाप है, किंतु उनमें भी कई पद संदिग्ध ज्ञात होते हैं। जहाँ तक पाठ का संबंध है, वह अत्यंत अस्पष्ट और अशुद्ध है। मूल प्रति किसी अनपढ़ लिखिया द्वारा लिखी गई है, जिसमें पदों की प्रत्येक पंक्ति ही नहीं वरन् प्रत्येक शब्दको अशुद्ध लिखा गया है। इस पर भी वे आपस में मिलाकर लिखे जाने से अत्यंत अस्पष्ट होगये हैं। कांकरौली के लिपिक ने उनकी ज्यों की त्यों प्रतिलिपि कर दी है। इसके कारण प्रामाणिक पाठ में इससे कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई। हाँ, इससे नये पद प्रचुर संख्या में अवश्य प्राप्त हो गये।

प्रस्तुत संकलन में १८५ पद हैं। इनमें ८५ पद कांकरौली संग्रह के, ५६ पद सूरदास मदनमोहन की वाणी के और ६ पद कीर्तन-संग्रहों के हैं। शेष ३५ पद वे हैं, जो कई प्रतियों में समान रूप से मिलते हैं। इन पदों का पाठ यथाशक्ति शुद्ध करने की चेष्टा की गई है। जो पद एकाधिक प्रतियों में मिल गये हैं; उनका पाठ ठीक करने में कुछ सुविधा भी हुई; किंतु जो पद किसी एक ही प्रति में मिले हैं, उनका पाठ ठीक करने में बड़ी परेशानी हुई है। फिर भी कई पदों का पाठ किसी प्रकार ठीक नहीं हो सका है। इनकी पाठ-शुद्धि में इतनी मग़ज़पच्ची करनी पड़ी है कि कभी-कभी तो झुंझलाहट से काम को छोड़ देने की ही इच्छा होती थी। जितना परिश्रम इन पदों के संशोधन में हुआ है, उससे कम में तो स्वतंत्र रचना ही लिखी जा सकती थी। ब्रजभाषा साहित्य का यह दुर्भाग्य है कि उसके प्रमुख कवियों की रचनाओं की प्रतियाँ भी ऐसे भ्रष्ट रूप में मिलती हैं।

पुस्तक के अंत में दी हुई पदानुक्रमणिका में जहाँ मुद्रित पदों की आधार-प्रतियों का उल्लेख है, वहाँ क्रम संख्या के कतिपय पदों को पुष्पांकित कर उनसे मिलते हुए अष्टछापी सूरदास के पदों का भी संकेत किया गया है। इस प्रकार के पद २२ हैं। इनमें से १६ पदों का उल्लेख 'जीवनी' प्रकरण में किया जा चुका है। वे सभी पद कांकरौली की प्रति में हैं, अतः उनको सूरदास मदनमोहन की रचना समझा जा सकता है। शेष ६ पद सूरसागर के अतिरिक्त 'सूरदास मदनमोहन की वाणी' और कीर्तन-पोथियों में मिलते हैं, किंतु वे कांकरौली संकलन में नहीं हैं, अतः वे मूल रूप में अष्टछापी सूरदास द्वारा रचे हुए हो सकते हैं। इनके अतिरिक्त जिन पदों की प्रामाणिकता में संदेह हुआ है, उसका उल्लेख पाद-टिप्पणी में कर दिया गया है।

अष्टछापी सूरदास और सूरदास मदनमोहन के पदों की ठीक-ठीक पहिचान तो सूक्ष्म अध्ययन से ही हो सकती है, किंतु स्थूल रूप में भी उनकी कुछ पहिचान होना संभव है। अष्टछापी सूरदास के पद छोटे और बड़े सब प्रकार के होते हैं, और उनके चरण प्रायः सम होते हैं; जब कि सूरदास मदनमोहन के पद छोटे होते हैं और उनके कुछ चरण ध्रुपद की तरह प्रायः विषम भी होते हैं। उनमें छंद-विधान के अतिरिक्त संगीतात्मक लय का अधिक आग्रह होता है।

इस पुस्तक की रचना में कांकरौली संकलन से विशेष सहायता मिली है। इसके लिये मैं विद्याविभाग के अध्यक्ष गो० व्रजभूषणलाल जी और उसके संचालक श्री कंठमणि जी शास्त्री का अत्यंत अनुगृहीत हूँ। बाबा कृष्णदास की पुस्तक भी इसकी रचना में सहायक हुई है, अतः मैं उनका भी आभारी हूँ। आशा है, इस प्रकार के प्रयास से जहाँ एक सुप्रसिद्ध भक्त कवि की रचनाएँ सुलभ हुई हैं, वहाँ सूरसागर के सुसंपादन का मार्ग भी सरल हुआ है।

मीतल निवास,
डैम्पियर पार्क, मथुरा।

—प्रभुदयाल मीतल

विशेष सूचना

इस पुस्तक के पृष्ठ १३ की ८ वीं पंक्ति में 'दूसरों' के स्थान पर 'दूसरी' और 'से' के स्थान पर 'के' पाठ होना चाहिये। इसी पृष्ठ की अंतिम पंक्ति में 'सीमाएँ हुई हैं' के स्थान पर 'सीमाएँ हैं' होना चाहिए।

इस पुस्तक के पृष्ठ २७ से ३३ तक में 'कृष्ण की बाल लीला' के पदों का संकलन हुआ है। उनके मुद्रित होने के पश्चात् निम्न लिखित पद और प्राप्त हुआ है। इसके पाठ में कुछ गड़बड़ है, किंतु इसका भाव-सौन्दर्य द्रष्टव्य है—

जसुमति के आँगन में, आपुनपौं हरि देखौं जब।
रतन जटित लर लटकनि, दँतियन-कांति निरखि,
चहौं चाहैं आरटि, तोतरे बचन कहै मोहि दै रे अब॥
कबहुँक हँसत-किलकत, कबहू रुदन करत,
नैना मूँदि उलटे कर सौं तब।
'सूरदास मदनमोहन' कर-पल्लब गहि सिखवत चलन,
जननि नहीं समुझति, देत तुतरिआ भरन सब॥

इस पुस्तक का ३३ वाँ पद कुछ पाठ-भेद के साथ सं० ११३ पर भी छप गया है। वास्तव में ये दो पद नहीं हैं, वरन् एक पद है। इसका पाठ सं० ११३ के अनुसार ही समझना चाहिए।

सं० ३६ का पद अशुद्ध छपा है। इसका अन्य पाठ बाद में मिल गया, जो मुद्रित पाठ से कुछ अच्छा है। पाठ इस प्रकार है—

सखी के पाछै ठाढ़ी प्यारी कौ बदन नीकौ लागत,
मानौं कंचन-गिरि तैं उदै कियौ ।
मनि नवसत कै स्याम बादर तैं निकस्यौ मानौं,
सोभित बिंदुला माथैं कुमकुम कौ दियौ ।।
नीलांबर रजनी सजनी संग सोहति कुरंगनैनी,
अरु राकाहिं संग लियौ ।
'सूरदास मदनमोहन' के लोचन चकोर
तृपति न पावत मधु-पान कियौ ।।

पदावली की पाद टिप्पणियों में जिन मुख्य आधार प्रतियों का उल्लेख किया गया गया है, उनके संकेत इस प्रकार हैं—

१. कांकरौली विद्या विभाग का हस्त लिखित संग्रह (संग्रह)
२. श्री सूरदास मदनमोहन की मुद्रित वाणी (वाणी)
३. नित्योत्सव, वर्षोत्सव एवं वसंत-धमार के कीर्तन (कीर्तन)

सूरदास मदनमोहन

जीवनी और पदावली

१. जीवनी

जीवन-वृत्तांत की समीक्षा—

सूरदास मदनमोहन की प्रामाणिक जीवनी का विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है। नाभा जी कृत भक्तमाल, प्रियादास कृत भक्तमाल-टीका और नागरीदास कृत पद-प्रसंग-माला में उनके जीवन-वृत्तांत के जो थोड़े-बहुत सूत्र मिलते हैं, वे भी उनसे संबंधित किंवदंतियों पर ही आधारित ज्ञात होते हैं। इन्हीं के आधार पर हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में उनका अति संक्षिप्त चरित्र लिखा गया है।

नाभा जी ने उनके गेय काव्य की बड़ी प्रशंसा की है, किंतु उनके जीवन-वृत्तांत के संबंध में उन्होंने कुछ भी नहीं बतलाया है। प्रियादास और नागरीदास ने उनके जीवन-वृत्तांत की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डाला है। उनके कथन से ज्ञात होता है कि सूरदास मदनमोहन अकबर के राज्य काल में संडीले के अमीन थे। इससे उनका समय सं० १६०० के आस-पास का सिद्ध होता है। वे ब्राह्मण थे और साधु-सेवा में विशेष रुचि रखते थे। अंत में अपनी राजकीय नौकरी और घर-बार को छोड़ कर वे वृंदावन चले गये। वहाँ पर गौड़ीय

संप्रदाय के सेवक होकर ठाकुर मदनमोहन जी के अनन्य भक्त वन गये। उनके जन्म-संवत्, जन्म-स्थान और आरंभिक जीवन के संबंध में कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ऐसा अनुमान होता है, वे गृहस्थ थे। राजकीय नौकरी छोड़ने पर ही वे विरक्त होकर वृंदाबन में जाकर रहने लगे थे। फिर अंतिम समय तक वे वृंदाबन छोड़ कर कहीं नहीं गये। उनका देहावसान भी वृंदाबन में ही हुआ। उनकी रचनाओं में सूरदास मदनमोहन की छाप मिलती है। इसी नाम से उनकी प्रसिद्धि भी है। उनका मूल काम क्या था, इसके संबंध में कोई निश्चित प्रमाण प्राप्त नहीं है।

श्री रूपकला जी और श्री वियोगीहरि जी ने उनका मूल नाम सूरध्वज बतलाया है[1]। श्री मिश्रबंधुओं ने उन्हें मदनमोहन का शिष्य लिखा है[2]। डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल ने उन्हें कायस्थ माना है[3]। भक्तमाल-टीका के अनुसार इन विद्वानों के मत ठीक नहीं मालूम होते हैं। श्री प्रियादास जी ने इनके संबंध में लिखा है—

सूरदास नाम नैन कंज अभिराम फूले ......।
सूरद्वज द्विज निज महल टहल पाय,
चहल-पहल हिये जुगल प्रकास है।

---

१. भक्तमाल (लखनऊ, तीसरा सं०), पृ० ७४६
और ब्रज माधुरी सार (सातवाँ सं०), पृ० १००
२. मिश्रबंधु विनोद (प्रथम सं०), पृ० ३५४
३. अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ० ४६

मदनमोहन जू हैं इष्ट, इष्ट महाप्रभु,
अचरज कहा कृपा-दृष्टि अनायास है[1] ॥

उक्त उल्लेख के अनुसार उनका नाम सूरदास था । उनके नेत्र कमल के समान सुंदर थे, अर्थात् वे इसी नाम के सुप्रसिद्ध अष्टछापी सूरदास की तरह नेत्र-हीन नहीं थे । वे सूरध्वज ब्राह्मण थे और उनके इष्ट ठाकुर मदनमोहन जी तथा महाप्रभु चैतन्य जी थे ।

नागरीदास कृत पद-प्रसंग-माला से भी उनका ऐसा ही वृत्तांत उपलब्ध होता है—

एक सूरधज ब्राह्मण गृहस्थ, उनकें नेत्र तो आछे हे, परंतु नाम सूरदास जी, पातसाही एक परगना के दिवान हे । ...... एई सूरधज सूरदास गृहस्थ कों त्याग करि वृंदाबन आय बेठे। ठाकुर श्री मदनमोहन जी के सेवक आसक्तवान हे, केवल सिंगार रस हि के पद बनावते, जहाँ अपनौं भोग पद सें धरते, तहाँ सूरदास मदनमोहन या भाँति धरते ।

इन स्पष्ट कथनों के होते हुए भी उनके नाम, वर्ण और गुरु के संबंध में उक्त विद्वानों को क्यों भ्रम हो गया है, समझ में नहीं आता है । ठाकुर मदनमोहन जी चैतन्य महाप्रभु के प्रधान पार्षद श्री सनातन गोस्वामी के उपास्य देव थे । उक्त गोस्वामी जी ने ही वृंदाबन में ठाकुर मदनमोहन जी को प्रतिष्ठित किया था और वे ही अपने अनुज रूप गोस्वामी सहित सूरदास मदनमोहन के समय में वृंदाबनस्थ गौड़ीय संप्रदाय के संरक्षक थे । इसी लिए गौड़ीय विद्वानों की मान्यता है कि वृंदाबन

१. भक्तमाल, भक्तिरसबोधिनी टीका, कवित्त ४९८, ५०२

आने पर सूरदास मदनमोहन सनातन गोस्वामी के शिष्य होकर ठाकुर मदनमोहन जी के अनन्य भक्त बन गये थे। मदनमोहन जी के प्रति उनकी अनन्यता इसी से प्रकट है कि उन्होंने अपनी समस्त रचनाओं में अपने नाम के साथ मदनमोहन जी का नाम भी यमल भ्राता के समान अटल शृंखला द्वारा जोड़ लिया है। श्री नाभा जी ने इसका भक्तमाल में इस प्रकार कथन किया है—

अंगीकार की अवधि यह, ज्यों आख्या भ्राता जमल।
श्री मदनमोहन सूरदास की, नाम-सृंखला जुरी अटल॥

मध्यकालीन भक्ति-साहित्य में सूरदास नामक कई भक्त कवियों का उल्लेख मिलता है। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय अष्टछापी सूरदास हैं। इसी लिए विभिन्न सूरदासों की जीवन-घटनाएँ अज्ञानवश अष्टछापी सूरदास की जीवनी में जोड़ दी गई हैं। सूरदास के आरंभिक जीवनी-लेखकों और आलोचकों की रचनाओं में उनके जीवन-वृत्तांत से संबंधित अनेक भ्रमात्मक कथन मिलते हैं। इधर सूर-चरित्र की वैज्ञानिक शोध होने से उनकी जीवनी की एक निश्चित रूप-रेखा बन गई है। इसके फलस्वरूप अन्य सूरदासों से संबंधित घटनाएँ अष्टछापी सूरदास की जीवनी से पृथक् की जा रही हैं।

सूरदास नामधारी भक्त कवियों में अष्टछापी सूरदास के पश्चात् सूरदास मदनमोहन ही अधिक प्रसिद्ध हैं, अतः जिन घटनाओं का संबंध अष्टछापी सूरदास से नहीं रहा, उन्हें अब

सूरदास मदनमोहन से संबंधित बतलाया जा रहा है। आईने अकबरी, मुंतखिब-उल-तवारीख तथा मुंशियात अबुलफजल नामक फारसी ग्रंथों में सूरदास संबंधी कुछ सूचनाएँ मिलती हैं। सूर-साहित्य के आरंभिक विद्वानों ने इन्हें अष्टछापी सूरदास से संबंधित मान कर उनके जीवन-वृत्तांत के साथ जोड़ दिया था। अब इनका संबंध सूरदास मदनमोहन के साथ बतलाया जा रहा है[१]।

आईने अकबरी में अकबर के दरबारी गायक ग्वालियर निवासी बाबा रामदास के पुत्र सूरदास का उल्लेख है, जो स्वयं भी अकबरी दरबार का गायक था। मुंतखिब-उल-तवारीख में बैरामखाँ द्वारा लखनऊ के रामदास गायक को उसकी गायन-कला के लिए पुरस्कार देने का उल्लेख है। मुंशियात अबुल-फजल में अकबर की आज्ञा से काशी के किसी सूरदास को अबुलफजल द्वारा लिखा हुआ एक पत्र है। उस पत्र में अकबर बादशाह के शीघ्र ही इलाहाबाद पहुँचने की सूचना दी गई है और सूरदास की भक्ति और उनके महात्मापन की अत्यंत प्रशंसा करते हुए उन्हें बादशाह से मिलने के लिये इलाहाबाद आने का निमंत्रण दिया गया है। उस पत्र में लेखन-तिथि का उल्लेख नहीं है, किंतु 'अकबर नामा' के अनुसार उसका संवत् १६४२ सिद्ध होता है। यही संवत् उक्त सूरदास के बनारस-निवास का भी हो सकता है।

१. अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय, पृष्ठ १६२ तथा डा० बड़थ्वाल कृत सूरदास पृ० १९ की संपादकीय टिप्पणी।

डा० दीनदयाल जी गुप्त का मत है, उक्त तीनों फारसी ग्रंथों में ग्वालियर के गायक रामदास और उनके पुत्र सूरदास का उल्लेख है। उन दोनों बाप-बेटों का अकबर के दरबार से संबंध था। उक्त सूरदास ही संडीले के अमीन सूरदास मदनमोहन थे, जिनका भक्तमाल छप्पय १२६ में उल्लेख हुआ है[1]। यदि इस मत को माना जाय, तब रामदास के कारण सूरदास मदनमोहन के जीवन की ऐसी रूप-रेखा बनती है, जिसका समर्थन भक्तमाल तथा चैतन्य संप्रदायी ग्रंथों से नहीं होता है।

सूरदास मदनमोहन चैतन्य संप्रदायी सनातन गोस्वामी के शिष्य और मदनमोहन जी के निष्ठावान सेवक थे। उन्होंने अपना अंतिम जीवन मदनमोहन जी की सेवा और भक्तिपूर्ण पद-रचना करते हुए वृंदाबन में बिताया था। भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास जी चैतन्य संप्रदायी भक्त और वृंदाबन-निवासी थे। अतः यह मानना होगा कि सूरदास मदनमोहन के जीवन-वृत्तात के संबंध में जो अनुश्रुति संप्रदाय में परंपरा से प्रचलित थी, उससे वे पूर्णतया परिचित थे। वैसे भी अपने संप्रदाय के होने के कारण उनके प्रति उनकी सहज आत्मीयता थी। यदि सूरदास मदनमोहन महान् गायक बाबा रामदास के पुत्र और स्वयं भी अकबर के जग-विख्यात् दरबारी गायकों में से होते तो प्रियादास इसका अवश्य उल्लेख करते। किंतु

---

१. अष्टछाप और बल्लभ संप्रदाय, पृष्ठ १६२

उन्होंने उन्हें संडीले का अमीन बतलाने के अतिरिक्त उनके अकबरी दरबार के गायक होने के संबंध में एक शब्द भी नहीं लिखा है।

सनातन गोस्वामी का वृंदावन-आगमन सं १५७३ में और उनका देहावसान सं० १६२१ में हुआ था[1]। अतः सूरदास मदनमोहन इसी अवधि में उनके शिष्य हुए होंगे। उनका अकबरी दरबार का गायक होना भी सं० १६२१ से पूर्व का नहीं माना जा सकता, क्यों कि अबुलफजल ने जिन दरबारी गायकों की सूची में सूरदास का उल्लेख किया है, उनकी मंडली का पूरा संगठन सं० १६२१ के बाद ही हुआ था। उस मंडली का नेता तानसेन स्वयं सं० १६२१ में अकबर के दरबार में आया था। तब क्या सूरदास मदनमोहन अकबरी दरबार में आने से पूर्व ही संडीले से भागकर वृंदाबन चले गये थे ? उस समय तो वे राजनैतिक उथल-पुथल के कारण अपने पिता रामदास के साथ कई राज-दरबारों में घूमते फिरते थे। फिर वे अकबर के दरबारी गायक होने के साथ ही साथ संडीले के अमीन कब और क्यों बनाये गये ? प्रिया-दास जी ने उनका दरबारी गायक और रामदास का पुत्र होना क्यों नहीं लिखा,जब कि उनके संडीले के अमीन होने की बात उन्होंने बड़े विस्तार से लिखी है ? इन प्रश्नों का जब तक समाधानकारक उत्तर प्राप्त नहीं होता, तब तक अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास के पुत्र सूरदास को सूरदास मदनमोहन

१. वैष्णव दिग्दर्शिनी (बंगला ग्रंथ) के आधार पर।

नहीं माना जा सकता है। 'मुंशियात अबुलफजल' में जिन सूरदास का उल्लेख है, वे तो सूरदास मदनमोहन कदापि नहीं हो सकते, क्यों कि अपने गुरु सनातन गोस्वामी की मृत्यु के २१ वर्ष पश्चात् सं० १६४२ में उनका बनारस में रहना किसी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकता है। सं० १६४२ से बहुत पहले वे वृंदाबन-निवास करने लगे थे, जहाँ की निकुंज-माधुरी का रसास्वादन और प्रिया-प्रियतम की केलि-क्रीड़ा का गायन छोड़ कर वे कहीं भी नहीं गये।

जीवनी की रूप-रेखा—

सूरदास मदनमोहन के जन्म-संवत् का निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ऐसा अनुमान होता है, वे सं० १५७० के लगभग उत्पन्न हुए थे। उनके जन्मस्थान, माता-पिता और आरंभिक जीवन के संबंध में भी कोई बात ज्ञात नहीं है। भक्तमाल-टीका से स्पष्ट होता है कि उनका मूलनाम सूरदास था; किंतु वे अष्टछापी सूरदास की तरह नेत्रहीन नहीं थे, वरन् सुंदर नेत्रों से युक्त थे। वे जाति के सूरध्वज ब्राह्मण थे।

अकबर के शासन-काल में वे लखनऊ के निकटवर्ती संडीला प्रदेश के अमीन थे। राजकीय नौकरी करने पर भी वे भगवद्भक्ति और साधु-सेवा में अधिक रुचि रखते थे। संडीले में रहते हुए वे वृंदाबन के गौड़ीय संत सनातन गोस्वामी के उपास्य ठाकुर मदनगोपाल जी में अत्यंत श्रद्धा रखते थे। अपनी श्रद्धांजलि के रूप में वे अपने उपास्य देव के लिए भेंट भी भेजा करते थे।

आज कल संडीले के लड्डू प्रसिद्ध हैं। सूरदास मदनमोहन के समय में वहाँ का गुड़ बहुत अच्छा होता था। उन्होंने ठाकुर मदनगोपाल जी के भोग के लिए बीसगुना दाम व्यय करके एक छकड़ा भरकर गुड़ वृंदाबन भेजा। वह गुड़ वहाँ पर सायं-काल को पहुँचा, किंतु उनकी श्रद्धा-भक्ति के कारण उसी समय उसके पूआ बनवा कर ठाकुर जी का भोग लगाया गया। उनके विषय में प्रसिद्ध है कि उनके पास जो कुछ होता था, उससे वे साधु-सेवा करने में अपना अहोभाग्य मानते थे। कहा जाता है, एक बार सरकारी मालगुजारी का आया हुआ तेरह लाख रुपया उन्होंने साधुओं को खिला दिया! रुपया भेजने की पेटियों में कंकड़-पत्थर भर कर और पर्चा रखकर बादशाह के भेज दिया गया। आप रात्रि के अंधकार में संडीला से भाग कर वृंदाबन चले गये। जब वे पेटियाँ अकबर के खजाने में खोली गईं, तब उनमें कंकड़-पत्थर के साथ निम्न लिखित आशय का पर्चा भी निकला—

तेरह लाख सँडीले उपजे, सब साधुन मिल गटके।
सूरदास मदनमोहन, वृंदाबन कों सटके॥

इस पर्चे को पढ़कर गुणग्राही बादशाह उनकी उदारता और सरलता पर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने माफीनामा भेज कर उन्हें अपने पास बुलाया, किंतु वे वृंदाबन छोड़कर कहीं जाने के लिए तैयार नहीं हुए। कहते हैं, वे बलपूर्वक राजधानी में ले जाये गये, जहाँ शाही वित्त मंत्री टोडरमल की आज्ञा-नुसार उनको कारागार में डाल दिया गया। अंत में अकबर

ने उनको बंधन मुक्त कर दिया। वे वृंदाबन जाकर पुनः भक्ति-भाव में तल्लीन हो गये। इसका वर्णन प्रियादास जी ने इस प्रकार किया है—

सूरदास नाम नैंन कंज अभिराम फूले,
भूले रंग पीके नीके जीके और ज्याये हैं।
भए सो अमीन यों सँडीले के नवीन,
रीति प्रीति गुड़ देखि दाम बीस गुने लाये हैं॥
कही पूवा पावै आप मदनगोपाल लाल,
परे प्रेम-ख्याल, लादि छकरा पठाये हैं।
आये निसि भए, स्याम कियौ आज्ञा जोग लैकै,
अब ही लगाबौ भोग, जागे फिर पाये हैं॥
पृथीपति-संपति लै साधुनि खवाइ दई,
भई नहीं संक, यों निसंक रंग पागे हैं।
आये सो खजानौ लैन, मानी यह बात अहो,
पाथर लै भरे, आप आधी निसि भागे हैं॥
रुक्का लिखि डारे, 'दाम गटके ये संतन नें,
यातें हम सटके हैं, चले' जब जागे हैं।
पहुँचे हुजूर, भूप खोलिकै संदूक देखे,
पेखे आँक कागद मैं, रीझ अनुरागे हैं॥

वृंदाबन में वे साधु-सेवा, भगवत्-भजन और पद-रचना करते हुए अपना जीवन बिताते थे। उन्होंने एक बार विनय का एक पद बना कर गाया, जिसकी अंतिम तुक इस प्रकार थी—

'सूरदास मदनमोहन' लाल-गुन गाऊँ।
संतन की पानहीं कौ रच्छक कहाऊँ॥

इसे सुन कर एक साधु ने उनकी परीक्षा करने का विचार किया। एक दिन जब वे मदनमोहन जी के दर्शनार्थ गये, तब उस साधु ने अपनी जूती उन्हें सोंपते हुए कहा, "मैं दर्शन कर अभी आता हूँ। आप तब तक इनकी रखवाली कीजिये।" वह साधु मंदिर में जाकर बैठ गया और वे द्वार पर उसकी जूती लिए खड़े रहे! मंदिर के गोसाईं जी ने उनको कई बार बुलाया, किंतु वे अंदर नहीं गये और उसी प्रकार खड़े रहे। उनकी इस सेवा-भावना को देख कर सब लोग उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करने लगे। प्रियादास जी ने उक्त घटना का इस प्रकार वर्णन किया है—

पद लै बनायौ, भक्ति-रूप दरसायौ,
'सब संतन की पानहीं कौ रच्छक कहाऊँ मैं।'
काहू सीखि लियौ साधु, लियौ चाहै परचै कौं,
आये द्वार मंदिर के खोलि कही, "आऊँ मैं।"
रह्यौ बैठि जाय, जूती हाथ मैं उठाय लीनीं,
कीनीं पूरी आस मेरी, निसि-दिन गाऊँ मैं।
भीतर बुलाये श्री गुसाईं बार दोय-चार,
सेवा सौंपी सार कह्यौ जन पग ध्याऊँ मैं॥

अकबर बादशाह के एक उच्च पदाधिकारी की ऐसी नम्रता, उदारता, साधु-सेवा, भक्ति-भावना और रचना-माधुरी की ख्याति चहुँ ओर फैल गई। वे भी आनंदपूर्वक वृंदाबन-बास करते हुए अपने जीवन को सफल करते रहे। अंत में वहाँ पर ही उनका देहावसान हुआ। उनकी समाधि मदनमोहन जी के पुराने मंदिर के निकट अभी तक बनी हुई है।

काव्य-रचना—

सूरदास मदनमोहन ने शृंगार-भक्ति के अनेक सरस पदों की रचना की है। उनके रचे हुए पद इतने सुंदर होते थे कि उनकी रचना होते ही वे तत्काल रसिक-समाज में प्रचलित हो जाते थे। नाभा जी ने उनकी प्रशंसा करते हुए उन्हें गान-काव्य के गुणों की राशि बतलाया है। उनका कथन है कि उनके मुख से निकले हुए काव्य की प्रसिद्धि इतनी शीघ्र और व्यापक होती थी, मानों वह हजारों पाँवों से दौड़ गया हो—

> गान-काव्य गुन-रासि, सुहृद सहचरि-अवतारी।
> राधाकृष्ण उपास्य रहसि-सुख के अधिकारी॥
> नव रस मुख्य सिंगार, बिबिध भाँतिन करि गायौ।
> बदन उच्चरत बेर, सहस पाँयन ह्वै धायौ॥
> अंगीकार की अवधि यह, ज्यों आख्या भ्राता जमल।
> मदनमोहन सूरदास की, नाम-सृंखला जुरी अटल॥१२६॥

प्रियादास ने उनके पदों की व्यापक प्रसिद्धि के विषय में इसी प्रकार का कथन किया है—

> आये वृंदाबन, मन माधुरी मैं भीजि रह्यौ,
> कह्यौ जोई पद, सुन्यौ रूप-रस रास है।
> जा दिन प्रगट भयौ, गयौ सत जोजन पै,
> जन पै सुनत भेद, बाढ़ी जग प्यास है॥

ध्रुवदास ने भी उनके काव्य की इसी प्रकार प्रशंसा की है—

> सूरदास अति प्रीति सौं, कवित रीति भल कीन।
> मदनमोहन अपनाइ कै, अंगीकृत करि लीन॥६७॥

सूरदास मदनमोहन की समाधि

[वृंदावन में पुराने मदनमोहन जी के मंदिर के निकट]
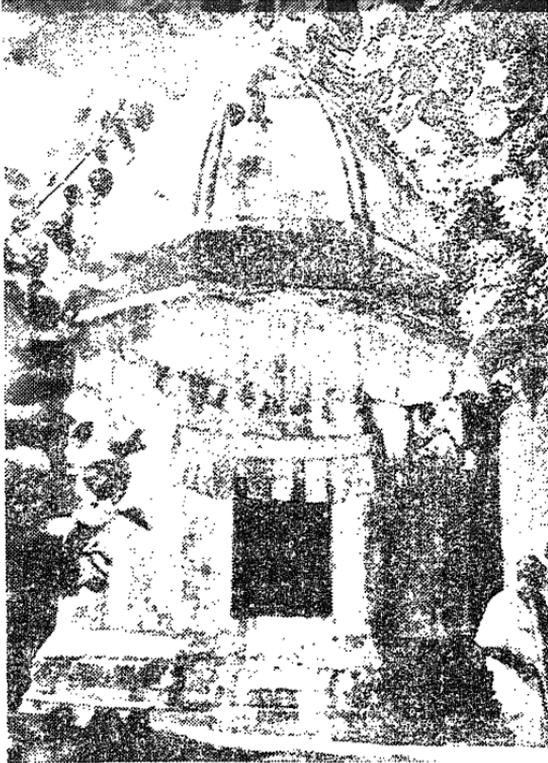
मदनमोहन की जोगपीठ द्वादसादित्य ढिग जानौं ।
तहाँ तैं मदनमोहन अद्वैत प्रभु हित प्रगटे मानौं ।।
सूरदास जो मदनमोहन भए भगत, छोड़ि पतिसाही ।
तिनकौ दरवाजौ समाधि इक, राजत है तरु ठाँही ।।

—गोपाल कवि कृत "श्री वृंदावन-धामानुरागावली"

ऐसा मालूम होता है, सूरदास मदनमोहन के पदों की यह प्रसिद्धि कालांतर में अष्टछापी सूरदास की लोक-प्रियता बढ़ जाने से कम हो गई थी। सूरदास की रचनाओं का रसिक-समाज और गान-काव्य प्रेमियों में इतना व्यापक प्रचार हुआ कि इस नाम के अन्य कवियों की रचनाएँ भी भ्रांति वश उनमें मिल गईं। सूरदास मदनमोहन और अष्टछापी सूरदास की रचनाएँ भक्ति-भावना, रस-माधुरी और भाषा-शैली में भी एक दूसरों से इतनी निकट हैं कि वे आसानी से आपस में मिल सकती हैं। वैसे इन दोनों कवियों की नाम-छाप पृथक् होने से उनकी रचनाओं को पहिचानने में कठिनता नहीं होनी चाहिए। किंतु जिन रचनाओं में भ्रांति वश नाम-छाप भी बदल गई है, उनका पहिचानना वास्तव में कठिन है। यही कारण है, सूरदास मदनमोहन की नाम-छाप के बदले हुए अनेक पद सूरसागर में मिलते हैं। सूरदास के भी कुछ पद सूरदास मदनमोहन के पद-संग्रहों में मिल गये हैं। इस पुस्तक में हमने यथा संभव सूरदास मदनमोहन के प्रामाणिक पदों का संकलन करने की चेष्टा की है।

सूरदास मदनमोहन और अष्टछापी सूरदास——

हम लिख चुके है, सूरदास मदनमोहन और अष्टछापी सूरदास की रचनाएँ भक्ति-भावना, रस-माधुरी और भाषा-शैली के दृष्टिकोण से बहुत-कुछ एक दूसरी से मिलती हुई हैं फिर भी उनके काव्य-महत्व की अपनी-अपनी सीमाएँ हुई हैं;

सूरदास मदनमोहन निस्संदेह उत्कृष्ट कवि और उत्तम गायक थे, किंतु उनको अष्टछापी सूरदास की तुलना में कदापि नहीं रखा जा सकता है। अष्टछापी सूरदास ब्रजभाषा भक्ति-साहित्य के मुकुटमणि हैं। उनके काव्य-महत्व की तुलना केवल गो० तुलसीदास की रचनाओं से ही की जा सकती है। सूरदास मदनमोहन अथवा कोई अन्य कवि उनके काव्योत्कर्ष के उच्च धरातल तक नहीं पहुँच सकते।

हिंदी काव्य के मर्मज्ञ विद्वान श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुणा ने नाभाजी कृत भक्तमाल के आधार पर सूरदास मदनमोहन और अष्टछापी सूरदास के काव्य-महत्व पर एक विचारोत्तेजक लेख लिखा है[१]। उनका मत है, अष्टछापी सूरदास अनुप्रास, वर्ण-विधान, शब्द-अर्थ-निर्वाह तथा उक्ति-खोज में पटु होते हुए भी 'महा तुकधारी' ही थे, किंतु सूरदास मदनमोहन नव रसों के कवि, शृंगार का विविध भाँति से वर्णन करने वाले और गान-काव्य-गुण की राशि थे। उनका निष्कर्ष है कि सूर-सागर की 'जितनी रसमय गान-काव्य-गुण संपन्न पदावली है, वह सूरदास मदनमोहन की ठहरती है, महा तुकधारी बल्लभ संप्रदायी सूरदास की नहीं।' इसके साथ ही 'सूरसागर के राधा संबंधी पद भी सूरदास मदनमोहन की ही देन हैं।'

---

१. ब्रजभारती, वर्ष ९, अंक ३ में 'नाभा जी के सूर और सूरदास' नामक लेख।

'ब्रज-भारती' में जिस समय यह लेख छपा था, उस समय इन पंक्तियों का लेखक ही उक्त पत्रिका का संपादक था। बहुगुणा जी की इस भ्रांति का समाधान संपादकीय टिप्पणी में कर दिया गया था। यहाँ पर प्रसंग वश उसका संक्षिप्त कथन किया गया है।

बहुगुणा जी के उक्त लेख से ऐसी ध्वनि निकलती है कि 'गान-काव्य-गुण' में सूरदास मदनमोहन की रचना अष्टछापी सूरदास की रचना से बढ़ कर है। इस प्रकार का कथन निस्संदेह संतुलित समालोचना की सीमा का अतिक्रमण है। सूरसागर के राधा संबंधी पदों को भी सूरदास मदनमोहन की रचना बतलाना भ्रमात्मक है। सूरसागर की प्राचीनतम प्रतियों में ये पद मिलते हैं, जब कि सूरदास मदनमोहन के किसी पद-संग्रह में ये पद उपलब्ध नहीं हैं।

नाभा जी ने सूरदास और सूरदास मदनमोहन दोनों के महत्व का कथन किया है, किंतु प्रियादास जी ने सूरदास पर कुछ न लिख कर सूरदास मदनमोहन के माहात्म्य का ही विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। प्रियादास जी के सूरदास विषयक मौनावलंवन पर भी बहुगुणा जी ने निराधार कल्पना की है। प्रियादास जी की टीका में वस्तुतः उन्हीं भक्तों का वर्णन है, जिनके चरित्र की चमत्कार पूर्ण बातें उनके समय में प्रसिद्ध थीं।

अष्टछापी सूरदास के चरित्र से ज्ञात होता है कि वे एक दरिद्र ब्राह्मण के पुत्र थे और बाल्यावस्था में ही घर से निकल भागे थे। उनके अपूर्व काव्य-महत्व की तो प्रसिद्धि थी, किंतु

उनकी जीवन-घटनाओं से लोग अपरिचित थे। गो० हरिराय जी ने उनके जीवन-वृत्तांत का अनुसंधान कर उसकी कुछ घटनाओं का उल्लेख चौरासी वार्ता के स्वरचित भावप्रकाश में किया था, किंतु उसका प्रचार भी बल्लभ संप्रदायी भक्तों तक ही सीमित रहा। इसके विरुद्ध सूरदास मदनमोहन अकबर बादशाह के उच्च पदाधिकारी थे। उन्होंने सरकारी कोष का लाखों रुपया साधु-सेवा में लगा कर राजकीय कोप को सहन किया था। वे अपना सर्वस्व त्याग कर भिक्षुक के वेश में वृंदाबन वास करते थे। उनके इस अपूर्व त्याग की चर्चा सभी भक्तों में, विशेषतया उनके चैतन्य संप्रदाय में, परंपरा से प्रचलित थी। प्रियादास जी चैतन्य संप्रदायी भक्त और वृंदाबन निवासी थे, अतः वे सूरदास की अपेक्षा सूरदास मदनमोहन की गौरव-गाथा से विशेष परिचित थे। यही कारण है, उन्होंने सूरदास मदनमोहन के चारित्रिक महत्व का विशेष कथन किया है।

श्री बहुगुणा जी के मतानुसार सूरसागर की समस्त 'रस-मय गान-काव्य-गुन सम्पन्न पदावली' और 'राधा संबंधी पद' तो निश्चय पूर्वक 'सूरदास मदनमोहन की देन' नहीं हैं; किंतु फिर भी उनके कुछ पद सूरसागर में अवश्य मिलते हैं। सूरसागर के मुद्रित संस्करणों में नागरी प्रचारिणी सभा का संस्करण सर्वोत्तम है, किंतु उसमें भी अन्य कवियों के साथ ही साथ सूरदास मदनमोहन के कुछ पद कवि-छाप के परिवर्तन सहित छप गये हैं। यहाँ पर ऐसे कुछ पदों की सूची सूरसागर की पद-संख्या के उल्लेख सहित दी जा रही है—

पदों की प्रथम पंक्तियाँ		सूरसागर की क्रम संख्या
१. अरुझी कुंडल लट बेसर सौं,	... ...	१७६७
२. आधौ मुख नीलांबर सों ढांकि, बिथुरी अलकैं सोहैं		२८०६
३. गुरुजन मैं डटि बैठी स्यामा, स्याम मनावन जाहीं	(परि.२)	२६१
४. चटकीलौ पट लपटानौ कटि पर,	...	२०१९
५. नंदनंदन सुघराई बाँसुरी बजाई,	...	१७६९
६. पिय संग खेलत अधिक भयौ स्रम,	...	१७७०
७. पाछै ललिता आगै स्यामा, आगै पिय फूल बिछावत जात		३२३४
८. बड़े-बड़े बार जु एडिनि परसत,	...	३२३५
९. बरन-बरन बादर मन हरन उदै करन	...	२७९५
१०. ब्रज की खोरहिं ठाड़ौ साँवरौ,	...	२५३६
११. बाँहि जोरि प्रात कुंज तें निकसे,	...	२७९६
१२. मया करिऐ कृपाल प्रतिपाल,	...	८७०
१३. मोहनलाल के संग ललना यौं सोहै,	...	१७६८
१४. लाल अनमने कतहिं होत हौ,	...	३३७८
१५. सखियन के सँग कुंवरि राधिका, बीनति कुसुमन-कलियाँ,		३२३८
१६. सीतल छहियाँ स्याम हैं बैठे,	...	१०८८

ये पद कांकरौली विद्याविभाग में सुरक्षित सूरदास मदन-मोहन के प्राचीन संकलन की प्रति में भी हैं। सूरसागर के इन पदों में कवि की नाम-छाप के परिवर्तन के साथ ही साथ पाठांतर भी बहुत है। इसके कारण पदों का भाव-सौंदर्य कम हो गया है। उदाहरण के लिए यहाँ पर कुछ पद दिये जाते हैं। सूरसागर में मुद्रित संख्या १७६८ का पद इस प्रकार है—

राग अडाना

मोहन लाल के सँग, ललना यौं सोहैं,
ज्यौं तमाल ढिग तरु सुमन जरद कौ ।
बदन अनूप कांति, नीलांबर इहिं भाँति,
नव घन बीच ससि मानहु सरद कौ ॥
मुक्ता-लर तारागन, प्रतिबिंब बेसरि कौ,
चूनैं मिलि रंग जैसैं होत है हरद कौ ।
सूरदास प्रभु मोहन-गोहन छबि बाढ़ी,
मेटति निरखि दुख मैन के दरद कौ ॥१७६८॥

उपर्युक्त पद का पाठ कांकरौली की प्रति में इस प्रकार है—

छाया नट

मोहन लाल के संग ललना यौं सोहै,
जैसै तरु तमाल ढिग फूलौ सुमन जरद कौ ।
बदन-काँति अनूप भाँति, नहिं समाँति नीलांबर,
गगन मैं यौं प्रगट्यौ ससि सरद कौ ॥
मुकता-आभूषन द्युति प्रतिबिंबित अंग-अंग;
चूनौ मिलि रंग दूनौ होत है हरद कौ ।
सूरदास मदनमोहन गोहन की छबि बाढ़ी,
मेंटति दुख नैन निरखि काम के दरद कौ ॥

उक्त पद में मोहन लाल के संग ललना की अपार रूप-शोभा का वर्णन है । सूरसागर के पद की प्रथम पंक्ति में जहाँ 'जरद सुमन' मात्र पाठ है, वहाँ काँकरौली के पाठ में 'फूलौ सुमन' है । इससे ललना के विकसित रूप-सौंदर्य का बोध होता है । सूरसागर के पद की दूसरी पंक्ति में नीलांबर स्थित बदन की अनूप कांति का वर्णन है, किंतु काँकरौली के पाठ में उस

कांति का नीलांबर में न समाने का भी उल्लेख है। इस पद के 'नीलांबर' शब्द में श्लेष का जो चमत्कार है, वह सूरसागर के 'नव घन' पाठ से नष्ट हो गया है। जिस प्रकार शरद के चंद्रमा की कांति बादलों में न समाती हुई उभर आती है, उसी प्रकार ललना के मुख की शोभा भी उसके नीलांबर में नहीं समा पाती है। सूरसागर के पद की तीसरी पंक्ति में मोतियों की लड़ी को तारागण के साथ लगाना तो कुछ ठीक भी हो सकता है, किंतु बेसरि का प्रतिबिंव निरर्थक है। काँकरौली के पाठ में न तो तारागण हैं और न बेसरि का प्रतिबिंव। उसमें बतलाया गया है कि मोतियों के आभूषणों की द्युति से प्रतिबिंवित ललना के अंग-प्रत्यंगों की शोभा इस प्रकार बढ़ गई है, जैसे चूने के मिलने से हरदी का रंग तेज हो जाता है। इस पाठ में सूरसागर के पाठ की सी निरर्थकता नहीं है। कहना नहीं होगा, काँकरौली के पाठ में जो सार्थकता और सौंदर्य है, वह सूरसागर के पाठ में नहीं है।

सूरसागर में मुद्रित संख्या १७६९ का दूसरा पद देखिये—

राग पूरवी

नंद-नँदन सुघराई, बाँसुरी बजाई।
सरगम सु नीकैं साधि, सप्त सुरनि गाई॥
अतीत अनागत संगीत, बिच तान मिलाई।
सुर ताल ऽरु नृत्य ध्याइ, पुनि मृदंग बजाई॥
सकल कला गुन प्रबीन, नवल बाल भाईं।
सूरज प्रभु अरस परस, रीझि सब रिझाईं॥१७६९॥

इस पद का पाठ काँकरौली की प्रति में इस प्रकार है—

नंदनँदन सुघर-राय, मोहन बंसी बजाय,
स र ग म प ध नि सप्त सुरनि गावै ।
अतीत अनागत संगीत सुघर,
सुर नीके औघट तान मिलावै ॥
सुर ध्याय, ताल ध्याय, नृत्य ध्याय निपुन,
लघु-गुरु जति-पुलक भेद मृदंग बजावै ।
सूरदास मदनमोहन सकल कला-गुन प्रबीन,
आपुन रीझि रिझावै ॥

इस पद में चतुर-शिरोमणि नंदनंदन के बंशी बजाने का वर्णन है । बंशी-वादन में संगीत-कला के जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, उनका भी इसमें उल्लेख किया गया है । सूरसागर के पद की प्रथम पंक्ति में आया हुआ 'सुघराई' पाठ ठीक नहीं है, जब कि काँकरौली के पद का 'सुघर-राय' पाठ ठीक है । सुघर-राय का अर्थ है, चतुर-शिरोमणि और वह नंदनंदन का विशेषण है । यह अर्थ 'सुघराई' पाठ का नहीं होता है । सूरसागर के पद की दूसरी पंक्ति में सप्त स्वरों का उल्लेख होते हुए भी चार स्वर 'सरगम' ही लिखे गये हैं, जब कि कांकरौली के पाठ में सातों स्वरों के नाम हैं ।

सूरसागर के पद की शेष पंक्तियों में भी संगीत का अधूरा और त्रुटिपूर्ण वर्णन है, जब कि काँकरौली के पाठ में संगीत के सभी अंग-प्रत्यंगों का नामोल्लेख हुआ है । इससे सिद्ध है, सूरसागर में सूरदास मदनमोहन के जो पद भ्रमवश संकलित हो गये हैं, उनका पाठ भी शुद्ध नहीं है ।

काव्यालोचन—

सूरदास मदनमोहन का रचा हुआ कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। उनके रचे हुए स्फुट पद कीर्तन-संग्रहों में मिलते हैं। इन पदों की रचना अत्यंत सरस और मधुर है। नाभा जी के मतानुसार उन्होंने शृंगार रस का विविध प्रकार से गायन किया है। उनके उपलब्ध पदों में भी राधा-कृष्ण की केलि-क्रीड़ाओं और दान, मान, अनुराग, बसंत, होली, फूलडोल, वर्षा विषयक सरस लीलाओं का मनोरम कथन हुआ है। उनके समस्त पद संगीत के ताल-स्वरों में बँधे हुए हैं, अतः वे संगीत-गोष्ठियों और कीर्तन-मंडलियों में विशेष प्रिय रहे हैं। यद्यपि वे स्वयं गौड़ीय संप्रदाय से संबंधित थे, तथापि उनके पद सभी संप्रदायों के मंदिरों में समान श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। बल्लभ संप्रदायी कीर्तन-पोथियों में उनके अनेक पद संगृहीत हैं, जो उक्त संप्रदाय के मंदिरों में सदा से गाये जाते रहे हैं। उनके पदों की सरस रचना-शैली और उच्च भक्ति-भावना का यह स्पष्ट प्रमाण है।

उनके अधिकांश पद अशुद्ध रूप में लिखे मिलते हैं, जिसके कारण रसास्वादन में बाधा उपस्थित होती है; तथापि उनकी रचना-माधुरी पाठकों और श्रोताओं को हठात् अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। उनके पदों में प्रिया-प्रियतम की अनुराग लीलाओं का तो मार्मिक कथन है ही, किंतु कुछ पदों में बाल-चरित्र का भी मनोरम चित्रण हुआ है। ऐसा ही एक पद देखिये—

राग गौरी

देखि री, रुनक-झुनक पैंजनि पग, डगमगी चाल,
लाल कैं त्रिभुवन की सोभा संग लागी डोलैं आँगन ।
पचरंग पाट की कौंधनी कटि पर बाँधैं,
कनक नूपुर सच जगमगे, धूरि धूसर, तन नगन ।।
जब चलि जात, तब जननी डरपावत, इतही उलटि आय,
चितै-चितै डरति, जसोमति उर लगन ।
सूरदास मदनमोहन लीला-सागर गुन-आगर,
ब्रज-नारी, सुर-नर-मुनि मगन ।।

उक्त पद में बाल-प्रकृति का कैसा स्वाभाविक वर्णन हुआ है । श्री कृष्ण के साथ त्रिभुवन की शोभा का लगा फिरना उनकी अनुपम बाल-छवि के कथन की अपूर्व चमत्कारपूर्ण उक्ति है । इसी प्रकार का एक दूसरा पद देखिये—

राग ईमन

झनक-मनक चलै तनक से छँगना ।
न्हैनी-न्हैनीं सोहति दूध की दतियाँ,
किलकि-किलकि लागै छतियाँ, रज झारत री झपगना ।।
गोद लिएँ हुलराय खिलावै,
ग्रीवा लावै, कंठ सोहै सुभ बघना ।
सूरदास मदनमोहन संग लागी-लागी डोलै,
लाड़िलौ घुटुरुवन रैंगत री अँगना ।।

इस पद में बाल कृष्ण की मनोरम क्रीड़ा और उनके प्रति माता की सहज ममता का मनमोहक कथन है । वात्सल्य रस

की अभिव्यक्ति में पद की शब्दावली का विशेष योग हुआ है। इस प्रकार का रचना-कौशल सूरदास के अतिरिक्त अन्य कवि के काव्य में मिलना कठिन है। श्री राधा-कृष्ण के प्रेमानुराग की प्रारंभिक अवस्था का अत्यंत मनोहर कथन निम्न पद में देखिये—

राग विभास

ब्रज की खोर साँकरी ॥
जब-जब भेंट अचानक होगै, हौं सकुचति उर, उलटचौ चाह री।
जित-जित ह्वै मग रोकत-टोकत, डगर तजति पग गड़त काँकरी ॥
ज्यौं-ज्यौं हौं सब अंग दुरावौं, त्यौं-त्यौं चिबुक गहि आय धाँकरी।
सूरदास मदनमोहन केतौ करौ बोलिवे कौं, मैं तबहूँ न 'हाँ' करी ॥

ब्रज के संकीर्ण मार्ग में श्रीकृष्ण से अचानक भेंट होने पर राधा की मनोदशा का इस पद में वर्णन है। संकोच और प्रेमालाप की इच्छा का कैसा मनोवैज्ञानिक कथन हुआ है। राधा के उपबन में जाने के समय उनकी सुकुमारता और श्री कृष्ण की अधीनता का कोमल कथन निम्न पद में देखिये—

राग पूर्वी

पाछैं ललिता, ता आगैं स्यामा प्यारी,
ता आगैं पिय मारग फूल बिछावत जात।
कठिन कली बीनि करत न्यारी-न्यारी,
प्यारी के चरन कोमल जानि, सकुचित गड़िबे डरात ॥
अरुझी लता सु कर निरवारत,
पाछैं डारत द्रुम पल्लव-पात।
सूरदास मदनमोहन पिय की अधीनताई,
देखत मेरे नैंन सिरात ॥

सूरदास मदनमोहन की रचना में मान के पद प्रचुर संख्या में मिलते हैं। मान जनित क्षणिक विरह से संयोग के स्थायी आनंद में वृद्धि होती है, इसी लिए भक्त कवियों ने इस प्रकार के पदों की प्रचुर संख्या में रचना की है। फिर मान के अवसर पर ही सखियों को अपनी वाक्-चातुरी से प्रिया-प्रियतम को पुनः मिलाने का सुख प्राप्त होता है; जो वस्तुतः भक्त कवियों की निजी भावना होती है। वे प्रिया-प्रियतम के पुनर्मिलन के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करने और उनके संयोग-सुख का अलौकिक आनंद प्राप्त करने के सदैव अभिलाषी रहते हैं।

निम्न पद में सखी द्वारा मानवती प्रिया की अद्भुत चेष्टाओं का वर्णन करते हुए स्वयं प्रियतम से ही उसे मनाने का आग्रह किया गया है—

राग पूरवी

कवहु हरषि, कबहू डरपति सी, कबहु क्रोध आँसू ढारति,
स्याम ! समुझो जू, यह कौन भाव।
नहीं मान, अभिमान नहीं और नहिं हठ, नहिं रिस,
रस नहीं, तुम ही जानौ वाकौ सुभाव॥
बहुत बेर मैं ही जु मनाई, अब कैं मैं देखी औरै कछु,
तब मेरे जिय उपज्यौ आन उपाव।
सूरदास मदनमोहन प्रभु आपुन ही चलिऐ, सोच कहा ?
सोई खेल खेलिऐ, जैसौ ई परै दाव॥

इस प्रकार के अनेक शब्द-चित्र उनकी पद-रचनाओं में मिलते हैं। अवश्य ही वे शृंगार-वर्णन के कतिपय प्रसंगों तक ही सीमित हैं; किंतु इस सीमा में वे निस्संदेह प्रशंसनीय हैं।

---

२. पदावली

विनय— [१] राग विलावल

मया करियै कृपाल प्रतिपाल, संसार-उदधि-जंजाल तें पारंपार।
काहू कैं चंडिका, काहू कैं महेस, काहू कें नरेस, देस एक कैं,
प्रभु ! मेरे तौ तुम ही हो आधार ॥
दीन दयाल, दया करियै जिय, वह अपराध अगाध,
जासै मेरे सब दुख दूर होंहि बिकार।
'सूरदास मदनमोहन' पिय तुम अंतरजामी,
जगत के स्वामी सौं कहा कहैं बारंबार[1] ॥

[२] राग देश

मेरी गति तुमहीं, अनेक तोष पाऊँ।
चरन-कमल-नख-मनि पर, विषै-सुख बहाऊँ ॥
घर-घर जो डोलौं, तौ हरि तुम्हैं लजाऊँ।
तुम्हरौ कहाय, कहौ कौन कौ कहाऊँ ॥
तुमसौ प्रभु छाँड़ि, कहाँ दीनन कौ धाऊँ।
सीस तुम्हैं नाय, कहौ कौन कौं नबाऊँ ॥

---

१. संग्रह ३७. यह पद सूरसागर में भी मिलता है, किंतु कांकरौली की प्रति में होने से इसे सूरदास मदनमोहन का ही समझा जा सकता है। सूरसागर का पाठ इस प्रकार है—

मया करिऐ कृपाल, प्रतिपाल संसार उदधि जंजाल तें परौं पार।
काहू के ब्रह्मा, काहू के महेस, प्रभू मेरे तौ तमहीं अधार ॥
दीन के दयाल हरि, कृपा मोकौं करि, यह कहि-कहि लोटत बार-बार।
सूर स्याम अंतरजामी स्वामी जगत के, कहा कहौं, करौ निरवार॥८७०॥

कंचन उर हार छाँड़ि, कांच क्यौं बनाऊँ ।
सोभा सब हानि करौं, जगत कौं हँसाऊँ ।।
हाथी तैं उतरि कहा, गदहा चढ़ि धाऊँ ।
कुमकुम कौ लेप छाँड़ि, काजर मुख लाऊँ ।।
कामधेनु घर मैं तजि, अजा क्यौं दुहाऊँ ।
कनक-महल छाँड़ि क्यौं, परन-कुटी छाऊँ ।।
पाइन जो पेलौ प्रभु, तौ न अनत जाऊँ ।
'सूरदास मदनमोहन' जनम-जनम गाऊँ ।
संतन की पानहीं कौ रच्छक कहाऊँ[1] ।।

---

१. वाणी १. ब्रज-माधुरी-सार, पृ० १०५.

यह पद कुछ पाठांतर से सूरसागर में भी मिलता है, किंतु अनुश्रुति के अनुसार इसका संबंध सूरदास मदनमोहन से है। नागरीदास कृत 'पद-प्रसंग-माला' में भी इसे सूरदास मदनमोहन की रचना बतलाया गया है। सूरसागर के पद का राग मारू और पाठ इस प्रकार है—

मेरी तौ गति-पति तुम, अनतहिं दुख पाऊँ।
हौं कहाइ तेरौ, अब कौन कौ कहाऊँ ?
कामधेनु छाँड़ि कहा अजा लै दुहाऊँ।
हय गयंद उतरि कहा गर्दभ चढ़ि धाऊँ ?
कंचन-मनि खोलि डारि, काँच गर बँधाऊँ ?
कुमकुम कौ लेप मेटि, काजर मुख लाऊँ।
पाटंबर-अंबर तजि, गूदरि पहिराऊँ ?
अंब सुफल छाँड़ि, कहा सेमरि कौं धाऊँ ?
सागर की लहरि छाँड़ि, छीलर कत न्हाऊँ ?
सूर कूर आँधरौ, मैं द्वार परयौ गाऊँ ? ॥१६६॥

माहात्म्य— [३] राग कान्हरौ

एक प्रीति बस जिनि किये मोहन, याही तैं ब्रज-रीति नियारी ।
जाकी माया जगत नचायौ, ताहि नचावत घोष की नारी ।।
जाकी चरन-रज ब्रह्मादिक दुर्लभ, सो रज ब्रज-बधू बगर बुहारी ।
'सूरदास मदनमोहन' जिनके हरि नैन-प्रान, कहा कहूँ बुद्धि अनुसारी[1]

उपदेश— [४] राग गौरी

घरी-घरी घरियाल रटति समुझि रे,
तेरी आयु घटति, हटति क्यौं न बिकार तैं ।
पाप पूर्न होत जात, इंद्रियनि के रंध्र-गात,
ज्यौं बेली भरि बुढ़ात, क्रम-क्रम जल-भार तैं ।।
निस-बासर मनिया ज्यौं काल गिनत रहति सदा,
टेरि-टेरि जम कहै मौंगरी प्रहार तैं ।
'सूरदास मदनमोहन' भजियै तजि कै प्रपंच,
भक्ति-भजन करि छूटहु मोह-जंजार तैं[2] ।।

कृष्ण की बाललीला— [५] राग आसावरी

जसोदा मैया लाल कौं झुलावै ।
आछे बारे कान्ह कौं हुलरावै ।।
कनियाँ-कनियाँ अईयाँ-अईयाँ यौं कहि लाड़ लड़ावै ।
हुलुलुलु हुलुलुलु हां-हां-हां कहि गोद लिएँ खिलावै ।।
दोउ कर पकरि जसोदा रानी, ठुमकी पाँय धरावै ।
घननन घननन घुँघरू बाजैं, झाँझरिया झमकावै ।।

---

१. वाणी ५८, २. वाणी २.

'सूरदास मदनमोहन' कौं, याही भाँति रिझावै ।
मंमंमंमं पप् पप् पप् पप् चच् चच् चच् चच् तत् ताथेई,
या बिधि लाड़ लड़ावै[1] ।।

[६]   राग ईमन

झनक-मनक चलै तनक से छँगना ।
न्हैनी-न्हैनी सोहति दूध की दतियाँ,
किलकि-किलकि लागै छतियाँ, रज झारत री झपगना ।।
गोद लिएँ हुलराय खिलावै,
ग्रीवा लावै, कंठ सोहै सुभ बघना ।
'सूरदास मदनमोहन' संग लागी-लागी डोलै,
लाड़िलौ घुटुरुवन रैंगत री अँगना[2] ।।

[७]   राग गौरी

देखि री, रुनक-झुनक पैंजनि पग, डगमगी चाल,
लाल कैं त्रिभुवन की सोभा, संग लागी डोलै अँगन ।
पचरंग पाट की कौंधनी कटि पर बाँधै,
कनक नूपुर सच जगमगे, धूरि धूसर, तन नगन ।।
जब चलि जात, तब जननी डरपावत, इतही उलटि आय,
चितै-चितै डरति, जसोमति उर लगन ।
'सूरदास मदनमोहन' लीला-सागर गुन-आगर,
ब्रज-नारी, सुर-नर-मुनि मगन[3] ।।

---

१. वाणी १४, कीर्तन भाग १, पलना के पद, सं. २३
२. संग्रह ३४, वाणी १२, कीर्तन भाग १, बाललीला के पद सं. ७
३. संग्रह १६, वाणी ६, कीर्तन भाग १, बाललीला के पद सं. १

[८] राग भैरव

मधु के मतवारे स्याम, खोलौ प्यारे पलकैं।
सीस मुकुट लटा छुटीं और छुटीं अलकैं ।।
सुर-नर-मुनि द्वार ठाड़े दरस हेतु किलकैं।
नासिका कौ मोती सोहै, बीच लाल ललकैं।।
कटि पीतांबर, मुरली कर, स्रवन कुंडल झलकैं।
'सूरदास मदनमोहन' दरस देहु मिलकैं[1] ।।

[९] राग भैरव

स्याम लाल प्रात भयौ, जागौ बलि जाऊँ ।
चुटिया मुरझाइ बीच सुमन हौं गुथाऊँ ।।
उगत सूर्य ज्योति भई कुलहिरी बनाऊँ ।
पाँय बाँधि घूँघरू सु चलिबौ सिखाऊँ ।।
'सूरदास मदनमोहन' गुन तिहारौ गाऊँ ।
हरखि निरखि गोबिंद-छबि, जीवन-फल पाऊँ[2] ।।

[१०] राग भैरव

छगन-मगन प्यारे लाल कीजियै कलेबा ।
छींके तै सगरौ दधि ऊखल चढ़ि काढ़ि लेहु,
पहरि लेहु झगुली, फैंट बाँधि लेहु मेबा ।।
जमुना-तट खेलन जावो, खेलन मिस भूख न लगै,
कौन परी प्यारे लाल, निसि-दिना की टेबा ।

---

१. वाणी ११, कीर्तन भाग ३, जगायवे के पद सं. १९
ब्रज माधुरी सार, पृ० १०६
२. वाणी १०, ब्रज माधुरी सार, पृ० १०६

'सूरदास मदनमोहन' घर ही क्यौं न खेलौ लाल,
दै हौं चकडोर, बंगी, हंस, मोर, परेवा[१]।

[११]

आजु कछु भोरही तैं माई, मोहन करति है अति आरि।
लुठत धरनि, नहिं करत कलेऊ, दूध-दही देत चरनन ढारि।।
काहू की दृष्टि लगी जनु माई, जलपति है सुत बारंबारि।
'सूरदास मदनमोहन' पियत उठि बैठे,
जब संग देखी राधे, जैसें मीन पायै बारि[२] ।।

[१२]

सुंदर साँवरौ हो इहिं बिधि खेलत ।
एकनि कै पाछै धावत, एकनि कौं बैठि बचावत,
एकनि कै चलावति बेलाह रे ।।
हाथ चाटी दै भाजत, कहति सोई राजा,
जो पहिलै मोहि छिए, आय कदम की छाँह रे ।
'सूरदास मदनमोहन' ग्वालन मैं बीरी बाँटत,
लाल धरि-धरि अटपटे नाँव रे[३] ।।

[१३] राग सामरी

गोबिंद आवहु तात बुलावै ।
राम सहित बैठे हैं, तुम बिनु भोजन कियौ न भावै ।।
अति आतुर चित, हरि कौं जननी बार-बार गहि लावै ।
खेलन हित मन नव सखान नित, कर छिड़ाय उठि धावै ।।

---

१. वाणी १३. कीर्तन भाग ३, कलेऊ के पद सं० १
२. संग्रह ७, ३. संग्रह ३२

सुत के बाल-बिनोद जसोमति देखि-देखि सुख पावै ।
'सूरदास मदनमोहन' सुत कौं हँसि-हँसि कंठ लगावै[1] ॥

[१४] ताल जति

मन चोरै, दधि चोरै, ब्रजपति ढोंटा,
नैन-बैन, कर-चरन बस करतु, आवत कौन अगोरै।
सोवत सिसु जगाइ घर-घर के, बँधे बछरुआ छोरै।
दुराय धरयौ गोरस लै सखि री,कछु पीवै, कछु ढोरै ॥
सुंदर मुख देखत हँसि दीजै, उत्तर कोटिक जोरै।
'सूरदास मदनमोहन' देखत कौन त्रिया मुख मोरै[2] ॥

[१५]

जहाँ दुराय धरैं दधि-माखन,
मोहन कोटिक आँखिन चितवै ताहीं आनि तकै ।
जो कहियै तौ अँचरा फारै, चपल नैन करि आँसू ढारै,
ऊतर देत न हारै, उनकौं कहि को आजु सकै ॥
आपुन खात, खबावत ग्वालै, भाजन भरि उघारि ढरि भाजै,
धावत हू न धरै।
'सूरदास मदनमोहन' सुत के औगुन सब जिय भावत,
तातैं उतर न देति जसोमति, कब की ठाढ़ी ग्वालि बकै[3] ॥

[१६] राग सारंग

आज अति आनंद ब्रजराय ।
धन्य दिवस बन चलत प्रथम दिन, कान्ह चराबन गाय ॥

---

१. संग्रह १२, २. संग्रह ४३, ३. संग्रह २०.

नव पीतांबर, लकुट-मुरलिका, अरु चौखंड बनाय ।
प्रीति सहित अवलोकि गहति हरि, मात-पिता के पाय ।।
गोरोचन दधि-दूध औ रोरी, माथे अच्छत लाय ।
निरखत सुख पावत गोपी जन, जननी लेत बलाय ।।
ग्वाल मुदित भये मिलत परस्पर, घर-घर तैं सब धाय ।
'सूरदास मदनमोहन' सुत मुदित जसोदा माय[1] ।।

[१७]

धूमरि-धौरी, काजर-पीरी, गही सघन कुंज माँहि ।
नैक इतै किनि फिरि चितवौ हौ, हेरत-टेरत हार्‌यौ,
तुम हौ अपुने रंग के राजा, चलत देखि नहिं छाँहि ।।
आपुन उलटि चलियै जौलौं ग्वाल गोधन बहोरैं,
अपनी टेर सुनाइयै, जासैं स्याम अगाड़ी न जाँहि ।
'सूरदास मदनमोहन' कै तुम गाय चरावहु नीकैं,
कै रहौ घरही बैठि, कहि नंद बबा सौं नाँहि[2] ।।

[१८]

बन-बन डोली, बोलनि बोली, धौरो मनु अंबुद मृदु गाजै ।
ग्वालन संग पय-पान करत है, पलास-पत्र बाम कर राजै ।।
सखा-मंडली जानि तहाँ चले, अलिगन ज्यौं मुरली-धुनि बाजै ।
'सूरदास मदनमोहन' छबि निरखत, रति-नायक हू लाजै[3] ।।

---

१. कीर्तन, भाग २, गोपाष्टमी के पद सं० १७

२. संग्रह १६

३. संग्रह १७

[१६] राग सारंग

सीतल छहियाँ स्याम ठाड़े हैं, जान भोजन की बिरियाँ ।
बाम हस्त सखा स्कंध दीन्हें, दच्छिन गहि द्रुम-डरियाँ ।।
रहहुजु नैक गायन घेरहु रे,बलरामहिं कहु बोलि लै आपुन ओरियाँ
सूरदास मदनमोहन सुंदर बर ठाड़े, कदम की छैयाँ,सुख की घरियाँ[1]

[२०]

अपुने हाथ बनावत छतना, नव किसोर तोरहिं पात नीको ।
कछुक पुराने पात,कछुक पलास-पत्र,कछुक नव दल जलजातन कौ
नाँचत-गावत, बेनु बजावत, अति ही रसिक वर रस-बातन कौ ।
सूरदास पिय मदनमोहन संग, खेलत खेल भाँति-भाँतिन कौ[2] ।।

राधा की बाललीला— [२१]

प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की, भानु गोप कै आय ।
अदभुत रूप देखि ब्रज-बनिता रीझीं, लेत बलाय ।।
नहिं कमला, नहिं सची, नहीं रति, उपमा हू न समाय ।
जा हित प्रगट भए ब्रजभूषन, धन्य पिता, धनि माय ।।
जुग-जुग राज करौ दोऊ जन, इत तुव, उत नँदराय ।
उनकै मदनमोहन, तेरै स्यामा, सूरदास बलि जाय[3] ।।

---

१. संग्रह १५, यह पद सूरसागर में इस प्रकार है—

सीतल छहियाँ स्याम हैं बैठे, जानि भोग की बिरियाँ ।
बाम भुजाहि सखा अंस दीन्हे, दच्छिन कर द्रुम-डरियाँ ।।
गाइनि घेरि, टेरि बलरामहि, ल्यावहु कहत अबिरियाँ ।
सूरदास प्रभु बैठि कदम तर, खात दूध की खिरियाँ ।।१०८८।।

२. संग्रह ११, इसका पाठ ठीक नहीं है ।

३. यह पद अष्टछापी सूरदास का भी हो सकता है किंतु 'सूरदास मदनमोहन की वाणी' में और 'ब्रज-माधुरी-सार' में यह सूरदास मदन-मोहन के पदों में संकलित है ।

[२२] राग धनाश्री

बरसाने बर सरोबर प्रगट्यौ अदभुत कमल ।
वृषभान-किरन-प्रकास पोष्यौ,
रहति प्रफुलित सदा ही, यह सरस-सुंदर-अमल ।।
सखी चहुँ दिसि केसर दल-करनिका,
आकार राजत राधिका-जस धवल ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय नव मरकंद हित,
सेवित सदा अति नलिन अलि[1] ।।

[२३] राग ललित

अहो मेरी लाड़िली सुकुमारि पालनै झूलै ।
मृदु मुसकान निरखि नैनन सुख, कीरति जू मन ही मन फूलै ।।
कबहुँक चटकोरा चटकावत, झाँझन झुँझना झूलन झूलै ।
कबहुँक लेति उछंग अंक भरि, अंतरगत की हरति है सूलै ।।
श्री वृषभान गोद लै बैठे, मन-क्रम-बचन साधुता तूलै ।
'सूरदास महनमोहन' के अंतरनिधि की खान सो खूलै[2] ।।

---

१. कीर्तन, राधा जी जन्म बधाई, पद ५. इसका पाठ ठीक नहीं है ।

२. ब्रज-माधुरी-सार, पृ० १०२.

यही पद वर्षोत्सव कीर्तन में इस प्रकार है—

राग विलावल

**अहो मेरी लाड़िली कुंवारि, कंचन पालने झूलै ।
मृदु मुसिकानि निरखि नैन सुख, कीरति मनहिं मन फूलै ।।
कबहुँक चटकोरी चटकावति, कबहुँक बोलन बोलै ।।
'सूरदास मदनमोहन' पिय के, आनँद की रसखान खोलै ।। १।।**

कृष्ण-रूप वर्णन— [२४] राग मालव

बड़ी-बड़ी अँखियन साँवरो ढोटा अति लौनों ।
अब ही तें मनमथ-मन मोह्यौ आगैं अजहू हौनों ॥
कहा री कहौं अँग-अँग की बानक, नख-सिख रूप सु ठौनों ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय की चितवन मैं कछु टौनों[1] ॥

[२५] राग अडाना

चटकीलौ पट, लपटानौ कटि, बंसीबट-जमुना के तट, नागर नट ।
मुकुट-लटक अरु भ्रकुटी मटक देखि, कुंडल की चटक
सौं अटक दृगन भई, चरन लपेटी आछी कंचन-लकुट ॥
टटकीली बनमाल, कर गही द्रुम-डार,
ठाढ़े हैं नवल लाल, छबि छाई घट-घट ।
'सूरदास मदनमोहन' कौं एक टक देखैं गोपी-ग्वाल,
टारे टरत न इत-उत, निपट निकट आवै सौंधे की लपट[2]॥

---

१. संग्रह १५, कीर्तन भाग ३, भोग के पद १२

२. संग्रह ३१, बाणी २४

सूरसागर में इस पद का पाठ इस प्रकार है—

चटकीलौ पट लपटानौ कटि पर,
बंसीबट जमुना कैं तट राजत नागर नट ।
मुकुट की लटक, मटक भृकुटी की लोल,
कुंडल चटक आछी सुबरन की लुकट ॥
उर सौहै बनमाल, कर टेके द्रुम डाल,
टेढ़े ठाड़े नंदलाल, सोभा भई घट-घट ।
सूरदास-प्रभु की बानक देखैं गोपी-ग्वाल,
निपट निकट, पट आवै सौंधे की लपट ॥२०१६॥

[२६]　　　　　राग कान्हरो

सुरँग लटपटे पेचनि चीरा ।
पीतांबर बनमाला सोहैं, तन घनस्याम किये चंदन-खौरि,
ठाड़े पौरि साँवरौ, कर मुख बीरा ॥
गजमोती बर द्वै लर, ग्रीवा सीमा मानौं रूप की,
तिन मधि जगमगात दुति हीरा ।
'सूरदास मदनमोहन' देखे तिहिं जाने,
कै जानै मेरौ जियरा[१] ॥

[२७]　　　　　राग गौरी

माई री, यह अदभुत रंग ।
अंग-अंग की बानक मोपै कहि न परै,
काम कौ मन हरै, भृकुटि भंग ॥
त्रिभुवन की सोभा एक रोम पर वारि डारौं,
उपमा सकल डोलत लागी संग ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय सोभा-सिंधु,
पार न पावैं छबि के तरंग[२] ॥

[२८]　　　　　संकराभरन

बदन सुधा सरसी, तामैं नैन कमल रँगमगे ।
बरुनी के उपल दल, चंचल चितवनि, पगन गमन डगमगे ॥
मकरंद-पान भार भरे, फिर उड़ि बैठत, कुटिल अलक सगबगे ।
'सूरदास मदनमोहन' ठाड़े गो-दोहन समैं, कुंडल रबि जगमगे[३] ॥

---

१. वाणी ३४, इस का पाठ ठीक नहीं है ।
२. वाणी १०४.　　३. संग्रह ५२.

[२९] छायानट

लंगर एक आवैगौ, नंद जू कौ ढोटना सुहावैगौ ।
तैसौई काम-मूरति, रीझिहु सूरति पर,देखत ही चतुर कहावैगौ ।।
चंचल चित्त कौ चोर, ब्रज मैं परचौ है सोर,
बिन देखै ना रहौ, को पाछै पछितावैगौ ।
'सूरदास मदनमोहन' कछु कहति न बनै,रति सँग काम लजावैगौ[1] ।।

[३०]

कै मेरे स्याम लाल हो, नैन बिसाल हो ।
मोही तेरी लटकनी मराल चाल हो ।।
सीस मुकट की डोलनी, मुख मुरली कल मंद ।
जनु तमाल तरु सिखा-सिखी नाँचत आनंद ।।
चरन कमल अवलंबित राजत बन-माल ।
द्वै लता मनौं प्रफुलित ह्वै, चढ़ी तरु तमाल ।।
चपल चितवनि मनोहर, सोहत भ्रुव भंग ।
धनुष बान डारत बस होत कोटि अनंग ।।
मकराकृत कुंडल छबि, राजत लोल कपोल ।
ईषद मुसकानि सखी, मधुर-मधुर बोल ।।
पीतांबर-छबि निरखत, दामिनि अति लजात ।
चमकि-चमकि सम न परति, घन में दुरि जात ।।
बदन सुधा कौ सरोबर, कुटिल अलक-बार ।
ब्रज-जुबती मृगि दिसि रची, तिनकौं फंदा बार ।।
सूरदास या छबि पर, बारै तन-प्रान ।
मदनमोहन देखत सखि, क्यौं रहै मति मान[2] ।।

---

१. संग्रह ३०, २. संग्रह ५३

राधा-रूप वर्णन—   [३१]   राग सारंग

मैं देखी सुता बृषभान की।
जननी संग आई ब्रज-रानी, सोभा-रूप निधान की।
नैन सुहावते, भ्रकुटी टेढ़ी, बैनी सरस कमान की।
नैंक कटाच्छ हरत चित-बित ही, चितबनि निपट अयान की॥
पग जेहरि कंचन रोचन सी, तनक सी पौहोंची पान की।
खगबारी गले द्वै लर मोती, तनक तरौनी कान की॥
लै बैठी हँसि गोद जसोदा, मन मैं ऐसी बान की।
'सूरदास मदनमोहन' हित जोरी सहज समान की[१]॥

[३२]

ए री, पाँयन की चंचलता, क्रम-क्रम ऊँचे चढ़ि-चढ़ि,
सु दीरघ द्दगनि गई।
उत तैं उतरी सिथिलताई, मंद-मंद गति तिन पाई,
चरननि की सरन लई॥
उरु-नितंब स्थूल होत, अति अनूप सबल मध्य देस,
तातैं ऐसै ही कटि छीन भई।
'सूरदास मदनमोहन' पिय जोबन-सैसब झगरत जाने,
तब रोमाबलि मरजादा दैकै, तन मैं ठाहर दुहनी दई[२]॥

[३३]   राग भूपाली

बड़ी-वड़ी अँखियाँ अमिय-सरोबर राजत अबनी ओर।
मानहुँ ज्यौं-ज्यौं पबन लगत,
त्यौं-त्यौं उठत तरंग, ऐसी ढरनि ढोर॥

---

१. वाणी ६   २. संग्रह ४४

मोन कटाच्छ बल नीके कुसुम आस-पास,
मृगमद तिलक, कल रोर ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय रीझे, भींजे सींचि हरोर[1] ॥

[३४]

तन-देस मध्य सब ही कुमारता कौ राज,
तामैं जोबन-नृप कियौ चहै अपनी प्रभुताई ।
नैन चंचल कारे तुरंग बस करन कौ,
अंग-अंग काम-कटक संग सहाई ॥
उर-सिंघासन बैठनि कत, सहसा ही आय न सकत,
तिन हूँ सखियनि पै काम-केलि कथा सुनि यातैं सुधि पाई ।
'सूरदास मदनमोहन' बयक्रम की संधि जानि,
जोबन पौगंड हटकि, थपी सौत राई[2] ॥

[३५] राग कान्हरा

आभूषन अंग-अंग तेरेई अनुचर संग लीनें,
रूप भूप राजत सोभा पाय ।
नव जोबन छत्र धारि, सौभगता चौंर ढारि,
गरब सिंघासन बैठ्यौ आय ॥
मानहु नैना तुरंग, उरज सुभट कंचुकी-पट कुटिका आगे कियौ,
मिलौ अनंग मंत्री, लावन्य सहाय ।
गज बर चालि, अंग अंचर ढाट ढरकनि, सूरदास मदनमोहन
आपु नहिं जाय मिले, मान-दान दीनौं मुख मुसिकाय[3] ॥

---

१. वाणी ६० २. संग्रह ३४, इसका पाठ ठीक नहीं है ।
३. संग्रह ३३, पाठ ठीक नहीं है ।

[३६] राग बिलास

सखी के पाछै ठाढ़ी, बदन नीकौ लागत,
मानौं कंचन-गिरि तैं उदय रासि नवसत कियै।
सोहत री माथे बिंदुला कुमकुम कौ,...... कर दिये लियै ॥
नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंग नैनी राका री संग दियै।
'सूरदास मदनमोहन' के लोचन आतुर चकोर,
तृप्त होत नाहीं मधु-पान कियै[1] ॥

[३७]

छूटे केस सौंधे सगबगे, नग जगमगे रँगमगे,
माथे सोहति सुभग जराय कौ टीकौ।
सीस-गगन तैं मानहुँ माँग-मग उतरि नवग्रह,
सुधा-पान कौं ससि आदर करि लियौ सबही कौ ॥
अँखियनि अंजन मिटि गयौ, अरु स्रवननि ताटंक बिराजति,
मानहुँ चक्र डर गयौ, बिद्युत भाजि तबही कौ।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारे छबि निरखत, उपमा जु बढ़ावत
पल-पल बाढ़त आनंद जी कौ[2] ॥

[३८] राग रामकली

तरुनाई तरुन किरन प्रगट होत,
सूखन लागु बहिक्रम-जल।
सैसबता सरसी मैं काम-गयंद मगन भयौ,
निकसत आवत कुच-कुंभस्थल ॥

---

१. वाणी ७३, पाठ ठीक नहीं है।
२. संग्रह २८

कछुक कानि, कछु मुसकानि जु भोर होत,
बिगसत सु ईषद कमल ।
'सूरदास मदनमोहन' रीझे जू, जल घटत
मीन आतुर जु होन लागै नैन चपल[1] ॥

[३९] राग टोड़ी

आधौ मुख नीलांबर सौं ढाकैं, आधौ मुख अलक बिथुरी सोहै ।
एक दिसा मानौं मकर-चाँदनी, एक दिसा मानौं बिजुरी कौंधे,
जब हँसि हरि-मन मोहै ॥
कबहुँ कर-पल्लब सौं केस निरबारत, पाछै ढारत,
तब निकसत संपूरन ससि, सनमुख जब जोहै ।
'सूरदास मदनमोहन' छिनु-छिनु न्यारी-न्यारी छबि सोहै,
और त्रिभुवन मैं उपमा कौं को है[2] ?

[४०] राग धनाश्री

नवल नागरी, सब गुन आगरी, सौभग सीमा, हरि भुज ग्रीवा ।
गौर-स्याम छबि पावती । स्याम छबीले मन भावती ।।ध्रुव।।
सिसुता मैं हे सखी री, जोबन कियौ प्रवेस ।
कहा कहूँ छबि रूप की, नख-सिख परम सुदेस ॥

---

१. संग्रह १, पाठ ठीक नहीं है ।

२. वाणी ४१, संग्रह ६

इस पद का पाठ सूरसागर में इस प्रकार है—

आधौ मुख नीलांबर सौं ढंकि, बिधुरी अलकैं सोहै ।
एक दिसा मनु मकर चाँदनी, घन बिजुरी मन मोहै ॥
कबहुँ केस पाछै लै डारति, निकसत ससि ज्यौं जोहै ।
सूर स्याम प्यारी छबि देखत, त्रिभुवन उपमा को है ॥२८०६॥

ब्रजपति-केलि सरोबरी, सैसब-जल भरपूर ।
प्रकटित कुच उर-स्थल, सोषित जोबन सूर ।।
छुटे केस मज्जन समै, देखि बिरुध अहि भोर ।
मोर कुहू निस मेरु तैं, उतर चले उहिं ओर ।।
कंचन तन मज्जन कियौ, केसर हेम कलाय ।
मानहुँ चंदन तरु-बटी, नाग रहे लपटाय ।।
त्रिबेनी नख खोल ही, छबी बनी यह भाँति ।
मनौं कमल मुकुलित किये, बाल-भृंग की पाँति ।।
सीस सचिक्कन स्याम कच, दियौ सीमंत सँभार ।
पसरी किरन पतंग तैं, भई द्विधा तम हार ।।
खितुला सुभग जड़ाव के, मनि-मुकता छबि देत ।
उदय भयौ घन मध्य ससि, मनौं नछत्र समेत ।
केसर-आड़ लिलार है, बिच सिंदूर कौ बिंद ।
चक्र तरौना नयन मृग, रथ बैठौ मानौं इंदु ।।
नैनन ऊपर हे सखी री, यौं राजत भ्रू-भंग ।
जुआ बनावत चंद्रमा, चपल होत सारंग ।।
चंचल नैन बिसाल है, मधि भलकै घनस्याम ।
अंबुज दल मानों मुख दिये, लघु-लघु सालग्राम ।।
चंपकली सी नासिका, राजत अमल उदोस ।
ऊपर मुकता ज्यों लसै, परचौ भोर कन ओस ।।
बेसर मैं मुकता-मनी, दै नासा ब्रज-नारि ।
गुरु-भृगु-सनि बिच भौम है, ससि समेंत गृह चारि ।।
मुकता आप बिकाय कै, उर बिच छिद्र कराय ।

अधरामृत हित तप करै, अध मुख ऊरध पाँय ॥
गुंजा जैसी छबि बनी, मुकता अति बड़ भाग ।
नैनन की लिएँ स्यामता, अधरन कौ अनुराग ॥
सुंदर सुभग कपोल हैं, मुख तमोल भरपूर ।
कंचन संपुट द्वै पला, मध्य भरयौ सिंदूर ॥
पीत कांति दसनावली, रही तमोल-रंग भीजि ।
बदन ससी मैं बोय हैं, मध्य अनार के बीज ॥
अधरन की छबि कहा कहूँ, सदा स्याम अनुकूल ।
बिंब प्रबाली राजहीं, मुसकनि बरषत फूल ॥
चिबुक दिठोना जब दियौ, मो मन धोखैं जात ।
निकसत अलि-सुत कंज तैं, मानौं भये परभात ॥
देखि बदन कौ रूप सखी री, मोहन रहे लुभाय ।
इकटक रहे चकोर ज्यौं, दृष्टि न इत-उत जाय ॥
यह मारग बन-बाटिका, निकसत सहज सुभाय ।
मधुप कमल बन छाँड़ि कैं, संग रहे लपटाय ॥
तोहि स्याम सौं हे सखी री, बढ़ी निरंतर प्रीत ।
आप रहे आधीन ह्वै, पाये हैं हरि जीत ॥
जहिं-जहिं तू पाँयन धरै, तहीं-तहीं मन साथ ।
तू ही तन-मन स्याम के, चित-बित तेरे हाथ ॥
धनि-धनि मात प्रभावती, धन्य पिता वृषभान ।
जहँ कुल जन्मी राधिका, सुंदर चतुर सुजान ॥
मदनमोहन मोहे सखी री, अति प्रबीन नँदलाल ।
सूरदास गावै सदा हो, कीरत बिषद बिसाल[१] ॥

राधा-कृष्ण की बालक्रीड़ा— [४१] राग गौरी

सखियन संग राधिका कुँवरि, बीनति कुसुम-कलियाँ ।
एक ही बानिक, एक बैस-क्रम,
स्याम बाल के हाथ रंगीली डलियाँ ।।
एक अनूपम माल बनावति,
एक परस्पर बैनी गूँथति, सोभित कुँद-कलियाँ ।
'सूरदास मदनमोहन' आय अचानक ठाड़े भये,
मानी है रँग-रलियाँ[१] ।।

[४२]

ईंडुरिया के पलटै मुरली लै भाजी ।
ठाड़ी हँसति दूर भयें ग्वालिनि कर पल्लब लै
अधर धरि, देखत अति सोभा राजी ।।
चितबत ही चित चोरचौ स्याम कौ, तन-मन सुख बढ्यौ,
जब ही कल धुनि बाजी ।

---

१. कीर्तन भाग १, साँझी के पद ७, वाणी २७, संग्रह १६.
यह पद 'सूरसागर' में भी है । कांकरौली संगृह और 'सूरसागर' के पाठ कुछ भिन्न हैं ।
सूरसागर का पाठ पूरवी राग में इस प्रकार है—
सखियनि के सँग कुँवरि राधिका, बीनति कुसुमनि-कलियाँ ।
एक बहिक्रम एकहि बानक, एक रूप-गुन अलियां ।।
सुंदर स्याम लाल के सोहत, करनि रंगीली डलियाँ ।
एक अनूपम माल बनावति, भ्राजति कुंजन गलियाँ ।।
एक परस्पर बेनी गूंथति, मन भावति रंग रंलियाँ ।
'सूरदास' प्रभु संग मिलि हरषित, प्यारी अंकम भरियाँ ।।३२३८।।

'सूरदास मदनमोहन' पिय अब तब दैहौं,
जब मोसौं कहौगे 'हा-हा' जी[१] ॥

[४३]

ठाड़ी कुँवरि राधिका, अँखियाँ मूँदी हैं हरि आय ।
अति चंचल बिसाल अनियारे, हरि-हाथनि न सँमाय ॥
छिनु तजि, छिनु मूंदति हरि नागर, मुख रिस मन मुसकाय ।
जो मनिधर मनि छाँड़ि बहुरि फिरि फनतर रहति दुराय ॥
सुभग अँगुरियनि मध्य बिराजत, आतुर अति दरसाय ।
कंचन मरकत जुत पिंजरनि मैं, जुग खंजन अकुलाय ॥
अपने करन कमल हरि कै, बल सौं लेत छिड़ाय ।
अंबुज चार कुमुद द्वै अलि मिलि, ससि सौं बैर गँमाय ॥
गौर-स्याम बिच चपल तीर बनि सोभा बढ़ी सुभाय ।
जुग इंदीबर गह्यौ सुधाकर, बिबि रवि संघ सुहाय ॥
उपमा कहा कहूँ, कछु सम नहिं, बहुतहिं देखि बनाय ।
'सूरदास मदनमोहन' देखत, रति संग काम लजाय[२] ॥

---

१. संग्रह १६ २. संग्रह २१, यही पद सूरसागर में इस प्रकार है—

ठाढ़ी कुँअरि राधिका लोचन मीचत तहँ हरि आए ।
अति बिसाल चंचल अनियारे, हरि-हाथनि न समाए ॥
सुभग आँगुरिनि मध्य बिराजत, अति आतुर दरसाए ।
मानौ मनिधर मनि ज्यौं छाँड़्यौ फन तर रहत दुराए ॥
गो-सुत भयौ जु गाधि गह्यौ बर रच्यौ जु रबि सँग साए ।
अपने काम न मिलत हरी, जो बिरहा लेत छुड़ाए ॥
अंबुज चारि कुमुद द्वै मिलि कै, औ ससि-बैर गंवाए ।
'सूरदास' अति हरि परसत ही, सकल बिथा बिसराए ॥१२६३॥

[४४]

आजु तिहारे खरिक मैं, हमारी गौरी गैया आई ।
आपु कुंज ह्वै चलियै सोधन, गोधन देहु बताई ॥
मैं वृंदाबन अरु व्रज सोध्यौ, करम-करम सुधि पाई ।
मो तन-मन चटपटी रही, यहि आजु न दई दिखाई ॥
वाकी टेब सदा इहि, मुरली-धुनि सुनि आवति धाई ।
वाहू मो बिन रह्यौ न परै छिनु, तैसिय मोहि सिखाई ॥
तब वृषभानु कह्यौ मोहन सौं, काहै न लेहु बुलाई ।
लै आज्ञा, तजि सकुचि, स्याम तब बंसी मधुर बजाई ॥
अंतःपुर धुनि सुनि-सुनि सुंदरि, देह-दसा बिसराई ।
आतुर ह्वै चढ़ि अटा देखि मुख, पल सौं पल न लगाई ॥
अंतरगत अनुराग दुहूँ दिसि, प्रीति न प्रगट जनाई ।
बढ्यौ संकेत सैनहिं सैननि, नागरि-कुँवर कन्हाई ॥
हौ घोषहिं आयौ अब सुन जू, आन खरिकहिं लखाई ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय डगरि चले मुसकाई[1] ॥

दान लीला-- [४५] राग बिलावल

छबीली नागरी अहो रूप की आगरी, मेरौ मन मोहि लियौ ।
दधि कौ दान लैहों प्यारी, तब तुमही जान दैहों ॥
और सखिन कौं जानि दै तू, सुनि न्यारी ह्वै बात ।
रहि-रहि ढोटा नंद के, कित एतौ इतरात ॥
बरजि सखा आपने, ये करत अति अनीत ।
दधि-भाजन पटकति है, झटकति हैं, नई रीत ॥

१. संग्रह २४

घेरौ किन ठाढ़ी करी, उतर हीं घाट ।
दान के मिस लूटत हौ, नित अबलान की बाट ।।
दान काल्ह लै आवहीं, हम दान निबेरैं काल्ह ।
बूझौ जाय नंदबाबा सौं, कब तैं है यह चाल ।।
दधि-माखन सबहीन के, सबै डार तुम दैहौ ।
एकौ बूँद न दैहौं, जब नाम दान कौ लैहौ ।।
मिस ही मिस झगरत ही, दिन गयौ बन माँझ ।
अदल-बदल मन लियौ हो, उलटि चली घर साँझ ।।
करी प्रीति-गाँठ हृदै, छोड़ो नहीं अब जाय ।
मुख रिस मन आनंद, इत-उत परत न पाँय ।।
दधि लियौ सब नंदलाल, दई सुख की रास ।
मन हरि कौ तब हर लियौ, परी प्रेम की पास ।।
ब्रजबधू मानों ध्वजा बसन रही तन फहरात ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय पाछैं चले जात[1] ।।

युगल छवि— [४६]

मैंहदी स्यामसुंदर कै रचि-रचि हाथन-पाँय लगावैं ।
आई समिट सकल ब्रज-सुंदरि, गीत पुनीतहिं गावैं ।।
कनक-थार भर धौरैं धरे हैं अति आनंद अंबर छवि पावैं ।
देत सबन कौं महरि-रोहिनी आनंद रंग बढ़ावैं ।।
अपने-अपने पानि लपेटैं पुनि इन छबि सौं भीड़ छुड़ावैं ।
कनकलता सी कोऊ-कोऊ सुंदरि जसुमति कौं आनंद दिखावैं ।।
बैठि परियंक मदनमोहन पिय बिहँसि सकुचि सकुचावैं ।
सूरदास निज महल टहल मैं ब्याह सुहाग लड़ावैं[2] ।।

१. कीर्तन भाग १, दान के पद ३६, वाणी १०३ २. वाणी ३२

[४७]   राग धनाश्री

दूलह मदनगोपाल, राधा नव दुलही ।
मानौं तरु तमाल मिलि नूतन कनक-बेलि उलही ।।
रूप-भूप युबराज बिराजत, बैस किसोर एक तुलही ।
मदनमोहन प्रभु सूर सु जीवनि, जिय मैं हुती सु लही[१]।।

[४८]   राग विहाग

लाल और ललना जू बाँह जोरि उठे प्रात,
पबन लगत कमल लपटात ।
यह अचरज मोपै कहत न वनि आवै,
दोउन कौ प्रतिबिंब देखि, दृग न सँमात ।।
नागर बनि-ठनि सौंधे ही अरगजा ऐसै,
भींजे मधुकर तिनपै उड़्यौ न जात ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय प्यारी पर बारत,
तन-मन, देखत नाँहि अघात[२] ।।

[४९]

नागर नागरी आनंद भरे दोऊ री, सघन कुंज बसत ।
सुख की सींवा ग्रीवा, भुज मेलि करत केलि,
सुखद सुने मैं, किलकि-किलकि हँसत ।।
जमुना के कूल फूल बीनत दोऊ लालन, चिकुर गुहति,
ललना कर लेत देत स्याम, रीझे दोऊ घन-दामिनी ज्यौं लसन ।
'सूरदास मदनमोहन' के अंग संग सगरी रैन बिहानी,
अब भोर हू नाहिंन त्रसत[३] ।।

---

१. वाणी २५. २. वाणी ४०, कीर्तन भाग २, जगायवे के पद १
३. संग्रह ३५.

[५०] राग कान्हरा

नवल किसोर नवल नागरिया ।
अपनी भुजा स्याम-भुज ऊपर, स्याम-भुजा अपने उर धरिया ।
करत विनोद तरनि-तनया-तट,स्यामा-स्याम उमँगि रस भरिया ।।
यौं लपटाइ रहे उर अंतर, मरकत मनि कंचन ज्यौं जरिया ।
उपमा कौं घन-दामिनि नाँहीं, कंदर्प कोटि बारने करिया ।।
'सूरदास मदनमोहन' बलि जोरी, नंद-नँदन बृषभान-दुलरिया[१]।

[५१] राग विहाग

बैठे ब्रजराज कुँवर प्यारी संग जमुना-तीर,
सीतल बयार सखी मंद-मंद आवै ।
माला बैजयंति उर, स्याम अंग सोभा देत,
कंठ भुज मेलि, दोऊ हँसि-बिहँसि गावै ।।
झीनौ पट दिपत देह, प्रीतम सौं अति सनेह,
गौर-स्याम अँग सोभा देत,कहत न बनि आवै ।
'सूरदास मदनमोहन' मोहिनी सखियन दोऊ,
हँसि-हँसि जात, अंग अरगजा लगावै[२] ।।

---

१. वाणी ३९, यह पद सूरसागर में इस प्रकार है—
नवल किसोर नवल नागरिया ।
अपनी भुजा स्याम-भुज ऊपर, स्याम-भुजा अपनें उर धरिया ।।
क्रीड़ा करत तमाल तरुन तर, स्यामा-स्याम उमँगि रस भरिया ।
यौं लपटाइ रहे उर-उर ज्यौं, मरकत मनि कंचन मैं जरिया ।।
उपमा काहि देउँ, को लायक, मन्मथ कोटि बारने करिया ।
'सूरदास' बलि-बलि जोरी पर, नंद-कुँवर बृषभानु-दुलरिया।।१३०६।।

२. कीर्तन भाग ३, पृ० १९२, वाणी २९

[५२] राग धनाश्री

तू तौ चंपक बरनी री मोहन बेलि,
जमुना पुलिन उदित भई सघन कुंज सहेलि।
सींचत तोहि स्यामसुंदर, प्रीति सुधा नैननि पुट,
बहु जतननि बारि किएँ राखत तोहि ब्रज महेलि॥
तरु तमाल लालन उर लपटाइ रही री प्रेम कुसुम,
कुच जुग फल लालन गल बहियाँ मेलि।
धनि सुहाग भाग अनुराग तेरौ री राधे,
'सूरदास मदनमोहन' प्रीतम संग करति केलि[१]॥

[५३] राग सारंग

कुंजन माँझ बिराजत मोहन राधिका सुंदर स्याम की जोरी।
जैसे ये सुंदर स्याम अनूपम, तैसी ये सुंदरि राधे जू गोरी॥
गोपी-ग्वाल सखा संग लीने, मधुर मुरलि सुर बाजत थोरी।
'सूरदास मदनमोहन' पिय चिरजीवो,
नवल किसोर नवल किसोरी[२]॥

[५४] राग सारंग

चंदन कौ बागो बन्यौ, चंदन की खोर किएँ,
चंदन के रूख तर, ठाड़े पिय-प्यारी।
चंदन की पाग सिर, चंदन कौ फैंटा बन्यौ,
चंदन की चोली, तन चंदन की सारी॥

---

१. वाणी ५७
२. वाणी ५६

चंदन की आरसी निहारत हैं दोऊ जन,
चंदन के जल के फुहारे छुटत, छबि भारी।
'सूरदास मदनमोहन' चंदन के महल बैठे,
गावत सारंग राग, रंग रह्यौ भारी[1] ॥

[५५] राग सारंग

चंदन-महल में पौढे पिय-प्यारी मिलि हसत परस्पर।
चंदन-सेज सँभारि बिरच कर, चंदन-पंक चहुँ दिसि छिरकत,
निरखत नैन अति भर ॥
चंदन-पंखा सखी निवारत, रूप निहारत अति चौंप कर।
'सूरदास मदनमोहन' चंदन के महल पौढ़े,
बार-बार सहचरि तोड़ैं तृन तर[2] ॥

[५६] राग आसावरी

स्याम निकट बैठी सन्मुख ह्वै स्यामा,
कंचन-मनि आभूषन पहिरै।
साँवरे तन मैं प्रतिबिंबित यौ मानौं,
स्नान करन कौं पैठी जमुना-जल गहरै ॥
अंग-अंग आभास तरंगनि, गौरता-स्यामता,
सुंदरता-सोभा की लहरै।
'सूरदास मदनमोहन' पिय के हिय-जिय मैं जु रही सँमाय,
कहि न जाय मोपै, दृष्टि न ठहरै[3] ॥

---

१. कीर्तन भाग १, अक्षय तृतीया के पद २, वाणी ८७

२. कीर्तन भाग १, अक्षय तृतीया के पद १

३. संग्रह ३८, वाणी ७४

[५७] छाया वट

मोहन लाल के संग ललना यौं सोहै,
जैसै तरु तमाल ढिग फूलौ सुमन जरद कौ
बदन-काँति अनूप भाँति, नहिं समाँति नीलांबर,
गगन मैं यौं प्रगट्यौ ससि सरद कौ ॥
मुकता-आभूषन द्युति प्रतिबिंबित अंग-अंग,
चूनौ मिलि रंग दूनौ होत है हरद कौ ।
'सूरदास मदनमोहन' की छबि बाढ़ी,
मेंटति दुख नैन निरखि काम के दरद कौ[1] ॥

[५८]

चौंप चौपरि तलप रचि-रचि, सुभग पुलिन बिसात सँवारि ।
कटाच्छन की गिनति नहीं, बैठे सनमुख दोऊ,
खेलत स्यामा-स्याम, दृग पाँसे ढारि ॥

---

१. संग्रह ३८, कीर्तन भाग १, यह पद सूरसागर में इस प्रकार है—

राग अडाना

मोहन लाल के सँग, ललना यौं सोहैं ज्यौं,
तमाल ढिग तरु सुमन जरद कौ ।
बदन अनूप कांति, नीलांबर इहिं भाँति,
नव घन बीच ससि सरद कौ ॥
मुक्ता-लर तारागन, प्रतिबिंब केसरि कौ,
चूनैं मिलि रंग जैसै होत है हरद कौ ।
सूरदास प्रभु मोहन-गोहन छबि बाढ़ी,
मेटति निरखि दुख मैन के दरद कौ ॥१७३८॥

दोऊ चतुर प्रबीन, जुग प्रीति न छूटै,
हाव-भाव तरंग तेई रंग रंगसारि ।
'सूरदास मदनमोहन' प्रिया नव-नव खेल रचति,
लग्यौ तन-मन दोऊ, जीत न हारि[1] ॥

[५६]

बाँहि जोरि निकसे कुंज तें प्रात, रीझि करी हँसि बात ।
कुंडल झलमलात, झलकति बिबि घात,
चकचौंधि सी लागत, मेरे नैना लटपटात ॥
पल नहिं ठहरात, रीझि करी हँसि बात, राधा-मोहन,
बर घन-चपला तन चमकि-चमकि मेरी पूतरी मैं सँमात ।
'सूरदास मदनमोहन' देखैं मोहि रहे,
चलि न सकति अब, मोय भूली पाँच अरु सात[2] ॥

[६०]

माई री, राधा-बल्लभ बल्लभ-राधा, वे इनमैं उनमैं वे बसत ।
घाँम-छाँह इत घन-दामिनी, उत कसौटी-लीक ज्यौं लसत ॥
दृष्टि-नैन ज्यौं, स्वाँस-बैन त्यौं, ऐन-मैन ज्यौं गसत ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय-प्यारी मैं देखे सन्मुख हँसत[3] ॥

---

१. संग्रह ३३

२. संग्रह ४०, इसी से मिलता हुआ सूरसागर का पद है----

राग अड़ानौ

बाहाँ जोरि प्रात कुंज तें निकसै रीझि-रीझि कहैं बात ।
कुंडल झलमलात झलकत अति चकाचौंध नैन न ठहरात ॥
राधा मोहन घन चपला ज्यौं चमक मेरी पुतरी न समात ।
सूर स्याम के मधुर बचन सुनि भूल्यौ मोहिं पांच औ सात ॥२७९६॥

३. संग्रह २६, वाणी २६, पाठ-भेद है ।

[६१] राग सारंग

मोरन के चंदवा माथे धरै, राजत रुचिर सुदेस री।
बदन कमल ऊपरि अलि मानौं, घूंघरारे केस री।।
भौंह धनुष दृग पनच सखी री, भाल तिलक मानौं बान री।
भोर भये रवि अंधकार कौं, कियौ ऊर्द्ध संधान री।।
सुभग नासिका मुक्ता सोहै, झलमलात छबि होत री।
भृगु-सुत मानहु अमल बिमल नव घन मैं कियौ उद्योत री।।
अधर अरुन ससि सुख मृदु बोलत ईषद कछु मुस्कात री।
मानहु पक्व बिम्ब तैं सखीरी अति अनुराग चुचात री।।
मनिमय जटित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोल री।
कालिंदी मैं प्रतिबिंबत रबि, चंचल पवन झकोर री।।
चिबुक चारु मुक्ता मनि द्युति छबि राजत त्रिबली ग्रीव री।
मानौं सैनी तीन रेख करि कामरूप की सींव री।।
भुज बिसाल चंदन चर्चित सखि, कर गहै मुख धरै बंसरी।
मानहुँ सुधा-सरोबर के ढिंग राजत युग कल हँस री।।
दसन-दमक दामिनि सी चमकति सोभा कहत न आवै री।
याही तैं दाड़िम उर फाटत तिनहुँ की सम नहिं पावै री।।
उर उन्नत बिसाल राजत सखि ता पर मुक्ता-हार री।
मानहु स्यामल गिरि तैं सरिता अध उतरित द्वै धार री।।
नाभि गंभीर सुधा सरसी मानौं त्रिवली सिढ़ी बनाई री।
ब्रजबधू नैन मृगो आतुर ह्वै अति प्यासी ढिंग आई री।।
कंचन बरन पीति उपरैना राजत स्यामल अंग री।
मानहु धाबत आगै पीछै निस-बासर इहिं संग री।।

कटि प्रदेस सुंदर सुदेस सखी ता पर किंकिनि राजै री ।
निबिड़ नितंबन की अति सोभा देखत भृगुपति लाजै री ।।
सुभग पिंडुरिया असम सखी री चरनांबुज नख लाल री ।
मंद-मंद गति आवत मानहु मत्त द्विरद की चाल री ।।
वृंदाबन मैं बिहरत दोऊ मम प्रभु स्यामा-स्याम री ।
सूरदास उर बसहु निरंतर मदनमोहन अभिराम री[1] ।।

[६२]

बनि-ठनि कै दोऊ बैठे स्यामा-स्याम री, परस्पर देति टीके ।
रूप-रासि दोऊ अरु न घाटि कोऊ,
दोउन के बदन देखत नैन लागत नीके ।।
नील कमल अरु नील मनि की छबि बारि डारौं स्याम के तन,
स्यामा के आगै नव केसर कुंदन लागैं फीके ।
'सूरदास मदनमोहन' लाल-ललना की या छबि देखत,
कहा कहौं आनंद आपुने जी के[2] ।।

[६३]

प्यारी, तू मोहनलाल रिझावति,
मधुर-मधुरताननि गावति, सुख-समूह बढ़ावति ।
रूप-गुननि की सरि कौऊ न पावति,

---

१. वाणी १०२,
यह पद सूरसागर (पद संख्या १८२२) में भी मिलता है । बहुत संभव है, यह पद मूल रूप में अष्टछापी सूरदास का ही हो ।

२. संग्रह ३९

तेरी उपमा तू ही बनि आवति,
जब तव भृकुटी-भंग काम नँचावति ॥
कोक-संगीत सकल कला निपुन उघटत सब्द,
तिकट ततथेई-थेई मृदंग बजावति ।
'सूरदास मदनमोहन' रीझे, तब दियौ है,
अपुनपौ की रानी कहावति[1] ॥

[६४]

तेरौ री बदन-कमल अमल री, ताकौं नंदलाल नैना मधुप लोचत ।
जद्यपि नीलांबुज पर राजत री, मानौं अति लालची तजि
न सकति, इहाँई उड़िबे कौ उनकौं सोचत ॥
अति अनुराग ताहि बरन भए दुहुँ दिसि तैं मेचक ना
मधि रहे, गहे वे छबि री, ताकौं नाहिंन मोचत ।
'सूरदास मदनमोहन' जोहन पर रीझे, मनौं भव रोचत[2] ॥

[६५]

स्यामा जू अपुनौ रूप देखि रीझि-रीझि,
नैक हु दर्पन दूरि न करति ।
आपुनी छबि जु निहारति, आपुनौ तन-मन बारति,
बिबस होत प्रतिबिंब के पाँयनि परति ॥
कबहुँ स्याम तैं सकुचि मानति, जिय अनुमानित,
याहीं सौं जु प्रीति करै, इहि डर डरति ।

---

१. संग्रह ४८, २. संग्रह ४७, पाठ ठीक नहीं है ।

'सूरदास मदनमोहन' पिय पाछै दुरि देखत,
दृष्टि न इत-उत टरति[1] ॥

[६६] राग कान्हरा

बड़े-बड़े बार जु एड़िनि परसत, स्याम पाछै आने अंचर मैं लिएँ।
बेनी गूँथन हित फूल सुगंध फैंट भरैं डोलत,
बोलत नाहिंन सकुचि हिए ॥
कसूँभी सारी मैं अलक झलक तन,
मानौं अहि-कुल चंदन बंदन सौं पूजे,
यहि छबि निरखति लालन नैननि सुख दिएँ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय तन-मन लिएँ,
प्यारी चितवै कनखियनि आनाकानी किए[2] ॥

[६७]

हौं बारी छवि ऊपर मेरैं राधा-मोहन आवहीं,
मेरे नैन निरखि सुख पावहीं ।
बंसी मधुर बजावहीं, धुनि सुनि सुर मिल गावहीं,
आनंद-सिंधु बढ़ावहीं ॥
बीनत डोलत फूल,जमुना-कूल करनि कबहू बैठिकै बैनी गुँथावहीं।
'सूरदास मदनमोहन' कबहू रीझिकै, पट लपटावहीं[3] ॥

---

१. संग्रह ४६, वाणी ७५ ३. संग्रह ५०

२. संग्रह ४१, वाणी ७०, सूरसागर में इसका पाठ इस प्रकार है—
बड़े बड़े बार जु एँड़िन परसत, स्यामा अपनै अंचल मैं लिएँ।
बैनी गूथन फूल सुगंध भरे, डोलत हरि बोलत न सकुच हिएँ॥
कुसुभी सारी अलक झलक मनौ, अहि-कुल बंदन सौं पूजा किएँ।
सूरदास प्रभु नैन प्रान सुख,चितए मिलि प्रिया कनखियनि दिएँ॥३२३५॥

प्रेमानुराग— [६८]

तनसुख की सारी सेत सोहति तन गोरे,
नव तरुनी सुता वृषभान की ।
मज्जन करि सौंधे के सगबगे भीने बसन सिलसिलाहट जानि,
अहि-कुल कै चुराने छबि कनक-खंभ लपटान की ।।
एक सखी दरपन लै दिखावति, स्याम आय पाछै देखत छबि,
प्रतिबिंब मैं मुसकान की ।
'सूरदास मदनमोहन' मोहे और बिबस भए,
जब लागी है हूल नैन-बान की[1] ।

[६९]

तेरे तन कौ बरन, तम-हरन देखि-देखि,
स्याम नव पीतांबर उर धारचौ ।
तैं धारचौ नीलांबर और स्याम मनि कंठ,
नैननि अंजन दै चिबुक स्याम बिंदु न्यारौ ।।
मन तौ एक हुतौ पहिलै ही, या तन अदलि-बदलि,
एक भयौ, यातैं एहि बिचारचौ ।
'सूरदास मदनमोहन' स्यामा प्रीति परस्पर,
दोउन अपुनपौ बारचौ[2] ।।

[७०] राग बिलावल

कौन बटावनी सी ठाड़ी ।
कर दोहनी मोहनी सी, मानौं मथि सोभा-निधि काढ़ी ।।
भूलि परी सी चकित बिलोकति, दसन बसन गहि, कंचुकी गाढ़ी ।
'सूरदास मदनमोहन' देखि–देखि, बचन चतुरई बाढ़ी[3] ।।

१. संग्रह ३६, २. संग्रह ३६, वाणी ५१, ३. संग्रह १, वाणी २२

[७१] राग सारंग

हौं क्यौं जाऊं री खरिक, मो तन बार-बार हरि हेरै।
जब हौं नीची दृष्टि किएं डगर आवति,
तब ही गौरी-गौरी गैया झूठेहिं मिस करि टेरै॥
हौं आरज-पथ लाजनि सकुचति,
मोहि आन आड़ौ ह्वै घेरै।
'सूरदास मदनमोहन' जो हौं उन तन चितवऊं,
तौ मेरे हू मन कौं फेरै[1]॥

[७२]

हौं न जैहौं री खरिक दुहाबन कौं,
उहाँ है री नंद कौ साँवरौ।
देखत रूप ठगौरी सी, कछु बौरी सी ह्वै रही,
यहि तन-मन आवै ताबरौ॥
मोहि मिले मारग मैं आवत, हाथ कनक कौ दोहना,
बाम पानि पाट कौ दावरौ।
सूरदास हौं मोहि लई हौं,
मदनमोहन जाकौ नाम रौ[2]॥

[७३]

डगर नंदराय द्वारे ह्वै कैसैं कै निकसिऐ री,
मोहन ठाढ़ेई रहत आगति।
बधिक खग ज्यौं अँखियान सौं,
अँखियाँ उड़ि लागति॥

---

१. संग्रह ७

२. वाणी २१

जब हौं आनाकानी दिएँ चली जात, अनूप भाँति मुरली
मंद-मंद सुरीली स्रबन-रंध्र ह्वै तन-मन अनुरागति।
'सूरदास मदनमोहन' ठगौरी सी मेलि,
सिथिल करत मेरी ए पागति[1] ॥

[७४] राग कान्हरा

हौं तौ या मग निकसी आय अचानक,
कान्ह कुँवर ठाढ़े री अपनी पौर।
दृष्टि हू सौं दृष्टि मिली, रोम-रोम सीतल भईं,
तन मैं उठत कछु काम-रौर ॥

लाल पाग लटकि रही भाल और भौंह पर,
पान खात मुसकरात, अंग किएँ चंदन-खौर।
'सूरदास मदनमोहन' रंगीले बिहारी लाल,
मन मैं आवत किधौं मिलूँगी दौर[2] ॥

[७५] राग विभास

ब्रज की खोर साँकरी ॥
जब-जब भेंट अचानक होवै, हौं सकुचति उर, उलट्यौ चाह री।
जित-जित ह्वै मग रोकत-टोकत, डगर तजति पग गड़त काँकरी॥
ज्यौं-ज्यौं हौं सब अंग दुरावौं, त्यौं-त्यौं चिबुक ग़हि आवै धाँकरी।
'सूरदास मदनमोहन' केतौ करौ बोलिवे कौं, मैं तबहूँ न 'हाँ' करी[3]॥

---

१. संग्रह २२
२. वाणी ३७
३. वाणी ६६, संग्रह ४१

[७६] राग अड़ानौ

ब्रज की पौरी ठाड़ौ सांवरौ ढीटोना, तिन हौं री मोही ।
जब तैं मैं देखे स्याम सुंदर री, चल न सकत काम नृप-द्रोही ।।
को लै आई, का के चरन चलाई, कौनै बहियाँ गहाई, तू को ही ।
'सूरदास मदनमोहन' देखैं मेरी गति आगै कहा भई, बूझौं तोही[1] ।।

[७७] राग मलार, एक ताल

सुंदर मुख देखत पलक हरी ।
कुंडल अरु प्रतिबिंबनि मनि गन चमकति होड़ परी ।।
सुभग कपोलन मधि चंचल दुति, छबि अदभूत करी ।
द्वै-द्वै रबि-ससि घन महिं दुहुँ दिसि, नाँचत परसपरी ।।
जनु त्रिभुवन की सोभा लै, गंडस्थल आनि धरी ।
मरकत चसक मध्य मानहुँ सोई डोलति ढरी-ढरी ।।
नैना एक टक रहे निहारत, तन-मन सुधि बिसरी ।
'सूरदास मदनमोहन' देखत, बिधि-मरजाद टरी[2] ।।

[७८] राग टोड़ी

उरहाने मिस आई, दृष्टि परे कन्हाई,
रह्यौ न जाई, रही उरहिं लगान दै ।

---

१. संग्रह ३१, कीर्तन भाग ३ पृ० १६१
यह पद सूरसागर में इस प्रकार है—
ब्रज की खोरिहिं ठाढ़ौ साँवरौ, तिन हौं मोही री मोही री ।
जब तें देखे स्याम सुंदर सखि, चलि नहिं सकति काम द्रोही री ।।
को ल्याई, किन चरन चलाई, बहियाँ गही सु धौं को ही री ।
सूरदास प्रभु देखि न सुध बुधि, भई विदेह बूझति तोही री ।।२५३६।।
२. संग्रह १०

जसोमति निरखि कहति री कछू,

भुकि सौं रही री, लरिकाए खिलान दै।।

तो सी कोटिक ग्वारि बारौं री लालन पर,

को जानै धौं री, तेरे मन मैं कहा है।

'सूरदास मदनमोहन' तन कौं एक टक,

दीधौ कछु रही री चहा है[१] ।।

[७९] राग पूर्वी

आई हूँ अकेली आज, सांझी के कुसुम लैन,

भलौ मिल गयौ तू मोय, जात घर गाय लै।

बरषत घन घोर मेह, तामैं कछु सूझत नाहिं,

चुंदरी चटक रंग नीर तैं बचाय लै ।।

चपला चमक, अचक चौंधियात रे बीर,

मोहि अंग संग क्यौं न लगाय लै।

'सूरदास मदनमोहन' तुम कहावत सुजान,

छोड़ि मान, तजि सयान, कामरी उढ़ाय लै[२] ।।

[८०] राग नट

हौं कहा करूँ री, कित जाउँ।

जित देखौं तित ही देखियै री, नंदनँदन बिन कतहू ठाँउ ।।

बिन देखै हू न रह्यौ परै री, कहि कैसै री तजौं गाँउ।

'सूरदास मदनमोहन' मेरैं अब यहि आवत हिय,

इनहीं सौं हिल-मिल रहाउँ[३] ।।

---

१. संग्रह ५, पाठ ठीक नहीं है।

२. कीर्तन भाग १, साँझी के पद १

३. वाणी २३

[८१]

जैहौं बलि मदनगोपाल, सुंदर नैन बिसाल, चितवनि लाज की।
सदाई रहति अनुराग भार भरि, सकुचि भक्त जन काज की ॥
परमोदार चतुर-चिंतामनि, सरनागत सुखदाता मूरति बिराज की।
'सूरदास मदनमोहन' आवत मंद-मंद गति,
चाल मत्त गजराज की[1] ॥

[८२] राग भूपाली

सुनो सुनो, री ललिता, ललित बचन लाल के,
लालच लपटाने जिन कहै बीच बात।
कहैं सो कहन दै री, कठिन-कोमल, कटु-मधुर,
स्रवन सुनि सिरात ॥
किएँ नमित मुख, लिखत करज भुब,
मो सनमुख चितवतहिं लजात।
'सूरदास मदनमोहन' देखत सखि,
क्यौं रहि हैं मन-मन गात[2] ॥

[८३]

चपलाई चमकि-चमकि आवति, नैनन मैं लसति।
किधौं स्याम घन तन जानति, किधौं पीतांबर दामिनी जानि,
ईर्षा करति, निकट आवति अंग नाँहि लसति ॥
अपुनौ पति तजि, महा ढीठ सकुचौ नहिं मानति,
मेरे देखति हरि उर मैं धँसति।
'सूरदास मदनमोहन' मेरे अंग-अंग कसौटी कसति[3] ॥

---

१. वाणी २०   २. संग्रह २५, वाणी ६४   ३. संग्रह ५०

[८४]

चले जात नव गजेन्द्र गति, टेढ़ी काम गली !
रस के भरन, अनुसरन बरन के, पग के धरन मानौं प्रेम-कली ।
उमँगि मिले तन-मन हिय-जिय सौं, छबि है मानौं रंग यली ।
'सूरदास मदनमोहन' नीके बने, मोहिनी सी छाय गई रंगरली[१]॥

[८५]

लै-लै स्याम नाम निरमल जल धोबै री मन कौ मैल,
तब भलैं सचु पैहै ।
हरि-रस मैं बोरि-बोर, पाप-मैल डारै निचोरि,
इंद्रिय-निग्रह करि एही धाम दैहै ॥
जब यहि तन जैहै घटि, जीरन पट जैहै फटि,
अनेक जतन किएँ पाछै बहुरचौ हाथ न ऐहै ।
'सूरदास मदनमोहन' जैसे नूतन अमल,
सदा याही तैं अघ जैहै[२] ॥

[८६]

बृंदाबन-द्रुम तुम काम रूप धरि हरि सेवत नित,
मधु रितु हितु संजोगिन कौं ते सदा रहत ।
नव पल्लब तेई नैन,बैन पिक-बानी,स्कंध-भुजा साखा कर-करज,
आभूषन फल, एई अंग ताके भए, जासौं अनंग कहत ॥
सरस सुमन तेई बान पनिच, अलिमाला गुंजन,
टंकोर धुनि सुनि बिरही जन त्रास गहत ।
'सूरदास मदनमोहन' सींचत अमृत दृष्टि,
तातैं सिब जारे की जरनि गई और आनंद-सुख मुख निरखि लहत[३] ॥

---

१. वाणी ६५ २. संग्रह ४१ ३. संग्रह २२, पाठ ठीक नहीं है ।

[८७]

गुन-रूप-आगरी नागरी बाल, पटतर कौं त्रिभुवन मैं तो सी तू ही।
सकल अंग प्रवीन जान मुकटमनि लाल प्यारौ,
रीझि भीजि प्रीति रीति बनि आई दूही ॥
सुर संच ताल-तान-मूर्छना मुखाग्र तेरैं संगीत ग्रन्थ यों ही ।
'सूरदास मदनमोहन' कैं तू तन-मन, तेरौई सुमिरन
प्रेम-नेम उर अंतरमाला गोही[1] ॥

[८८] राग सारंग

तैं कहूँ दई हौ दिखाई, तब तैं स्याम भूल्यौ री बन कौ जाइवौ ।
ग्वालन संग चले जात, चौंकि-चौंकि चकित,
थकित भए, उत पग न परत इत आइवौ ॥
जब हरि इहिं मारग ह्वै निकसे,
ता छिनु री तेरौ चिताइवौ ।
आधौ मुख, आधौ कर-पल्लव बीरी गहैं,
लालन दसन खंडि कैसौ खाइवौ ॥
अज हूँ निकसि, दरस दै री सुखनिधि,
छाँड़ि दै री बड़ी बातन बनाइवौ ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय तैं किए प्रीति बस,
अब छाँड़हिं नाँच नँचाइवौ[2] ॥

---

१. संग्रह ६
२. वाणी ५२, संग्रह ६

[८९]

जब तू चितै चली री सुभाइ, नैनन उपजैं अनेक भाय।
सकुचि सहित जु तिरीछी अँखियाँ चंचलता की,
छबि निरखत मानौं खंजन गए लजाय ॥
अमल-जमल, सेत-असेत बिराजति,
ओरनि कोरनि स्यामता जब चलि जाय।
जानुँ जुगल अलि उड़ि चलि फिर-फिर,
बैठि अंबुज-दल पगनि लगाय ॥
कंचन चख पय भरे, परे तिन मध्य,
सखीरी द्वै मलिंद मानौं आय।
उड़ि न सकत, तर तीर तकत,
यातैं भ्रमत मध्य अकुलाय ॥
अति अधीर मनु नीर मध्य प्रतिबिंब इंदु के,
किए चपल मानौं पवन डुलाय।
'सूरदास मदनमोहन' इहिं छबि देखत रहे लुभाय[1] ॥

[९०]

नव सत करि सखि भूषन, तू चली री जब रुनक-झुनक।
धेनु दुहत भए चपल कमल नैन, मनहुँ बात बस अंबुज अतिही,
चकित भए री परी कान भनक ॥
उठि धाए गोहन दोहन तजि, कहूँ मुरली कहूँ गिरो पीत पट,
पाग छुटे पेच, अटपटी सी बनक।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारे अछन-अछन पाछै,
आवत फिरि चाहै तनक[2] ॥

---

१. संग्रह ५० २. संग्रह ३७

[६१]

जब पिय सनमुख पाँउ धरति कुंज-लता सौं,

चार जति गज गति चाल भू पर।

ओट भए कमल-नैन आनँद भरि निरखति बदन-कांति,

मानहुँ कोटि चंद कियौ प्रकास, रीझि-रीझि मनु वारति छबि ऊपर॥

तऊ प्रतीत न मानत, जानत भ्रम सौं कबहूँ

निकसि देखत कौं ठाढ़े होत पेंड ऊपर।

'सूरदास मदनमोहन' काम इंदु चनक मंद भई,

स्रवन सुनी जब धुनि नूपुर[1]॥

[६२]

अजहुँ न आये री बन तें, कहा बार लाई आजु कन्हाई।

कै कहुँ कुंजन गाय चराय, किधौं हिराय गई पराय,

देहु बताय कहूँ सुधि पाई।

बैठे कहा, सुधि लेहु सबारे, नैनन अधिक ओसिरो लाई।

'सूरदास मदनमोहन' आए बेनु बजावत,

वारति जसोमति देति बधाई[2]॥

[६३]

तल परचित जौलौं हरि आन पुहुप लैन गये,

तौलौं स्यामा जू कौं ललिता लै आई।

जब हरि नहिं देखे, तब सकुचि भई आये की,

चकित नैन चहुँ दिसि, मिसिकै उलट्यौ चाहत,

तब जान्यौ मन मान्यौ, मुरली जब पाई॥

---

१. संग्रह ४६ २. संग्रह २७

आवत जब देखे तब कुंज-ओट दुरि ठाढ़ी भई री,

अधर धरैं मधुर-मधुर ताननि गाई ।

'सूरदास मदनमोहन' संभ्रम ह्वै यौं कहति,

ऐसी को है, जानैं मेरी बंसी बजाई[1] ।।

[६४]

सखी री, आजु दिन कंचन कौ, मिलि हैं लाल मन-भावन ।

हिरदे कौ थार करूँ, नैन-प्रान तामैं धरूँ,

तन-मन न्यौछावरि करूँ, होय ज्यौं आवन ।।

कामिनी कौ मन-रंजन, सज्जन-दुख कौ भंजन री,

माननी कौ री मान छिड़ावन ।

'सूरदास मदनमोहन' मिले तैं सचु पाईयै,

है री काम-तपि कौं बुझावन[2] ।।

[६५] राग ईमन

माई री, सिथिल मेखला बाँधति ही कटि,

हौं हुती आपने आँगन ठाड़ी, लाल अचानक आये ।

ठगि सी रही मुख बोल न आवै, छबि निरखत कछु और न भावै,

काहू सखी बतियन न लगाये ।।

हाथ हू तैं कंकन गयौ गिरि, बहुरिहिं आप

उठाय बनाये, दुख बिसराये ।

'सूरदास मदनमोहन' हौं मोहि न जाने ता छिन,

यह साध रही अँखियाँ भरि-भरि देखन हूँ न पाये[3] ।।

---

१. संग्रह २६ २. संग्रह ४२

३. संग्रह ४६, वाणी ४२. कीर्तन भाग ३, पृ० १७६

अभिसारिका— [९६] राग सारंग

अपने-अपने घरन की किबरिया दै सोय रहे,
ऐसे मैं तू क्यौं न सुख लहै री।
सूर आयौ सीस पर, छाया आई पाँयन तर,
बाट के बटोही थके सब घाम गहै री॥
पहिरै तन सेत सारी, गरैं गुंज-माल धारी,
सोलहै सिंगार अंग क्यौं न सजिहै री।
'सूरदास मदनमोहन' तलफत जैसै चातक-मीन,
माघ की मध्य रात, जैसै जेठ दुपहैरी[1]॥

[९७] राग सारंग

ऐसी दुपहैरी मैं कहाँ चली कामिनी,
कमल सी कुम्हलानी, चरन-लुभानी।

---

१. कीर्तन भाग ३, उष्ण काल के पद २, वाणी ६१, इसका पाठ ठीक नहीं है। इसी से मिलता हुआ सूरदास का निम्न पद है—

सूर आयौ सीस पै, छाया आई पाँइन तर,
पंथी सब झुकि रहे, देखि छाँह गैहरी।
धंधी जन धंधि छाँड़ि रहे री सब धूप ही तैं,
पसु-पंछी जीव-जंतु, चिरैयाँ चुप्प चैहरी॥
ब्रज के सुकुमार लोग दै किंवार सोइ रहे,
उपबन की ब्यार, तामैं क्यौं न सुख लैहरी।
'सूर' अलबेली चलि, काहे कौं डरात जिय,
माघ मधि रात जैसी जेठ की दुपैहरी॥

—पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ, पृ० १४१

मैं तौ आई फूल बिनन, सखियन की सुधि लैन,
मैं जु भई प्यासी, नैक प्यावो पानी ॥
पानी तो कूँ प्याय दैहौं, सखियन मिलाय दै हौं,
आछे नैक कदंब की छैया सुख दानी ।
'सूरदास मदनमोहन' आये अचानक,
रीझि-रीझि रहे दोऊ कंठ लपटानी[1] ॥

नायिका का विरह— [९८] राग आसावरी, जति ताल

सीतल कहत चंद अरु चंदन, दोऊ लागत ताते री ।
जब तें हस्त कमल मेरे उर तें, स्यामसुँदर किए हाँते री ॥
कुसुम सुगंध सजल नलिनी-दल, तें जहुँ नाँहि सुहाते री ।
सजनी आनि धरति छाती पर, तुरतहिं सब जरि जाते री ॥
यह गति मेरी ह्वै गई री सखि, पीउ काके रंग राते री ।
'सूरदास पिय मदनमोहन' बिनु, पल जुग समहिं बिहाते री ॥

खंडिता— [९९] राग विलाबल

आजु कौन धौं बनाय पठये हौ मेरैं, स्याम ! भोर ।
भाल तिलक जाबक कौ कीनौं, अरु कुमकुम कौ मनौं घनेरौ,
पीत बदरिया कहुँ, कहुँ दियौ है चखौड़ा मसि अधर ओर॥
नैन कमल प्रफुल्लित, तामैं स्याम पूतरी,
मानौं मधुप बँधे अरुन डोर ।
'सूरदास मदनमोहन' ऐसी कौन त्रिया,
जाके मुख ससि तुम भए हौ चकोर[3] ॥

---

१. कीर्तन भाग ३, भोग के पद २, वाणी ६२, पाठ ठीक नहीं है ।
२. संग्रह ७ ३. वाणी ४६, पाठ ठीक नहीं है ।

[१००] राग सारंग

कहौ कौन निहोरें, भोरें आये भवन मेरे,

भली कीनों, बसियै जू, भए आलस-बलित।

ह्रिएँ और, जिएँ और, कहति और की और,

याही तैं मेरे जान, हौ त्रिभंगी ललित।।

जाही के गृह जात लाल, ताही के रंग रँगे रहति,

सबै विद्या पढ़ि, तामैं यह कीन्हीं कलित।

'सूरदास मदनमोहन' जू मनाय गरै लगाय,

यौं भये रस-सुख मैं गलित[1]।।

[१०१] राग कान्हरा

पहिलै तौ पाग बनाइयै लालन, तब भलैं बात बनाई बनै।

जैसै-जैसै पग धरत इतकौं, तैसैं मानौं पाछै मन तनै।।

रसन बसन लाल तुम्हारे बसन, कहत कछू कह्यौ चाहत अनै।

'सूरदास मदनमोहन' पिय मुख कत बनाव,तस न तुहैं रावरौ मनै[2]।।

[१०२]

अब नीकी बानक आए अचानक मेरैं,

दरपन लै धौं निहारियै।

सकुचि हू कीनीं मनमोहन काहू की, गोहन काहै न लावत,

अहो तुम अंत हू उलटे पाँव धारियै।।

अब कहा बोलत बोल परतीति के, साँचे हौ नीति के,

अपने मन की लगन बिचारियै।

'सूरदास मदनमोहन' पिय तिनसौं कहा बसाय,

या सौं जीते हू हारियै[3]।।

---

१. वाणी ४७ २. संग्रह ३८, पाठ ठीक नहीं है। ३. संग्रह २८

[१०३]

आजु कहाँ धौं बसे हो लाल, बाल के रँग भीने ।
नैनन ढीले पहरि बसन नीले तिहारी प्रीति, पट कहु कौनैं छीने ।।
राधा भलि आराधी, तेऊ सुप्रीति साधी नकि,
मुख ससि तुम चकोर जु दृष्टि दीने ।
'सूरदास मदनमोहन' तेऊ अब सिथिल भये,
जैसैं जल बिन मीने[1] ।।

[१०४] राग देव गंधार

कित तैं आये हौ तुम लाल, ऐसी कौन बाल,
जाके धोखैं आइ द्वार हौ झाँके ।
दुरति नहीं चितवन हित-चित की,
यहै टेब नित-नित की, मैं पहिचाने नैना बाँके ।।
अब कहा निपट लजाने, रसन बसन मैं तब ही जाने,
रति के चिह्न पीतांबर ढाँके ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय तुम क्यौं आबन पाये,
तिन तौ सुदृढ़ मंत्र करि आँके[2] ।।

[१०५] राग विलावल

नैनन की चंचलता कहा कीनीं,
भीने रंग कौन के हो स्याम, हम सौं कहा दुरावत ।
और कौ बदन देखन कौ नैम लियौ, किधौं पलकनि,
मधि राखि प्यारी, ताके भार भरे नये आवत ।।

---

१. संग्रह ४, २. वाणी ४८,

मधुप गंध लुब्ध रहे ते समीप निसि बसे,
संग लगे आये हैं, रति-कीरति गावत ।
'सूरदास मदनमोहन' मन की प्रीति तन प्रगट होत,
मुख नहीं बनत बनावत[1] ॥

नायक का विरह— [१०६] राग अड़ानो

लाल अनमने कतहिं होत होत हौ,
तुम देखौ धौं कैसै-कैसै करि तिहिं लैहौं ।
जलहिं निकट की बारू जैसें गाढ़े गहियै तैसें,
कठिन होति जु त्रिय की प्रकृतिहिं करहिं कर पिघलैहौं॥
रस और रिस ताकी समुझि, देखिहौं मन की ढरनि,
तैसिए भावती बात चलैहौं ।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारे, बहुरि न ह्वै हौ न्यारे,
जैसै पानी मैं रंग मिलैहौं[2] ॥

---

१. संग्रह ५, वाणी ४४, कीर्तन भाग ३, पृ० ४८

२. संग्रह ४३, सूरसागर में इसका पाठ इस प्रकार है—

लाल अनमने कतहिं होत हौ तुम देखौ धौं कैसें,
कैसें करि तिहिं ल्याइ हौं ।
जलहिं निकट की बारू जैसें ऐसी कठिन त्रिया की प्रकृतिहिं
कर ही कर पघिलाइ हौं ॥
रिस अरु रुचि हौं समुझि देखि वाकी, वाके मन की
ढरनि देखि पुनि भावति बात चलाइ हौं ।
सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं, नेकु न ह्वै हौ न्यारे,
जैसें पानी रंग मिलाइ हौं ॥३३७८॥

[१०७]

काहे कौं अरबरात स्याम, अजहूँ रैन तीन जाम है ।

हौं तौ वाकी प्रकृति लिएँ कहौंगी बानि,जब रिस जानि हौ तौ,

खरी लागि हौं तिहारी पिय लाड़िली बाम है ।।

यहीं लै आवति, पैज किएँ कहौं स्याम,

मोहि तौ तिहारे सुख ही तें सुख, और कौन काम है।

'सूरदास मदनमोहन' पिय तुम जानौं,

बहुरि न आइ है, तौ मेरी राम-राम है[1] ।।

मान—

[१०८]

फूल्यौ री सघन बन, तामैं कोकिला करत गान ।

चलहु बेगि वृषभान-नंदिनी, छाँड़ि कठिन मन मान ।।

तव रितुराज आयौ री नियरै, मिलि कीजै मधु-पान ।

'सूरदास मदनमोहन' पिय कौं रिझाइयै,

गाय सुनाइयै मीठी मधुर तान[2] ।।

[१०९] राग गौरी

वृंदाबन कुंज–सदन बैठे मग जोवत हैं बनवारी ।

सीतल-मंद-सुगंध पवन ब्रहै, बंसीबट जमुना-तट,

निपट निकट नट नागर बोलत है आली री ।।

फूलन की सेज सलित, कुसुमन की लता ललित,

कुंज-भवन राधे चलि, बैठे हैं बिहारी ।

'सूरदास मदनमोहन' तलफत जैसे मीन-चातक,

बेगि चलहु री, तू ही प्रान-प्यारी[3] ।।

---

१. संग्रह २९

२. वाणी ८१

३. संग्रह ८, वाणी ३५

[११०]

तब हौं जाऊँगी बलि,कुंज-सदन ठाड़े देखि अँखियन भरि जलन ।
मापै न देखै परैं, खड़े द्रुम-डारि गहैं,
अकेली नोकैं तुम ठाड़ी हौ, ढिग चलि न ॥
तुम्हारौ बदन प्रफुल्लित अंबुज,
हरि जू के नैना मैं देखे अति आतुर अलिन ।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारे न्यारे तू ही न चाहति,
हा-हा दूर करि मान मलिन[1] ॥

[१११] राग गौरी

गौर गोबिंद नवलकिसोर सखी चित-चोर, ठाड़े हैं द्रुम की छहियाँ ।
अधर धरै मुरली ऊँचे सुर लिएँ, तोहि बुलावत हैं,
माई री, तू कत कहति नहियाँ ॥
बिन ही अंजन खंजन से नैना पिय-मन-रंजन,
रहैं तिरछौंहे पिय मन महियाँ ।
'सूरदास मदनमोहन' कैं ध्यान तेरौ निसि-बासर,
सखी, कौन प्रकृति तो पहियाँ[2] ॥

[११२]

राधा जू, तिहारे भ्रम तैं चंपक-लता सौं लपटाने ।
तिहारे कंठ की माल अवलोकति, नैन-हृदै लालायति,
सीस चढ़ावति, नैन-प्रान सियराने ॥

---

१. संग्रह १७
२. वाणी ३६, ब्रज-माधुरी-सार, पृ० १०४

जहाँ-जहाँ चरन धरैं, रज लै-लै चिहुर भरैं,
पग-पल्लवनि बन-बीथिन हरि जु पहिचाने ।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारी दुरि बैठी,
कोउ न जानत तन-सौरभ गहि आते[1] ।।

[११३] राग भूपाली

बड़री अँखियाँ अमी-सरोबर, राजत अबनी-ओर ।
मान-पबन ज्यौं-ज्यौं लागत,त्यौं-त्यौं उठत तरंग,ऐसी ढरनि ढोर।।
मीन-कटाच्छ बल नीके कुसुम आस-पास,
मृगमद-तिलक कल रोर ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय रीझे, भीजे सींचि हरोर[2] ।।

[११४]

ऊँचे करि नैन, तू देखि री रैन, सिंगार बनाव अनूप भाँति ।
बासर पति के बिरह जरति, अब सिराति अस्नान करति,
सोइवौ सपरति है, पूरन ससि बदन काँति ।।
लघु-दीरघ तारागन आभूषन पोहप, बादर बरन-बरन बस्तर
पहिरैं, तिन महिं दुरि निकसति, कबहुँ हँसति-जल्पात ।
'सूरदास मदनमोहन' बोलत, चलति नाँहि भामिनी,
जामिनी बितात[3] ।।

---

१. संग्रह ४८, पाठ ठीक नहीं है ।
२. वाणी ६०, संग्रह ४४, पाठ ठीक नहीं है ।
३. संग्रह ३८, पाठ ठीक नहीं है ।

[११५]

तुम जु बदन मूकियौ, ससिहिं सुख दियौ,

ए तौ मान कौ दुख न मोहि ।

एक बेर कैसैं हूँ ऊँचे नैना करि, वाके गर्वहिं हरि,

मेरी ए सपथ तोहि ।।

वह मृगंक अति निसंक, सोभा पावत जब लगि

निज मुख नाँहि दिखावति, तौलौं इहिं मंडल गहतु सोहि ।

'सूरदास मदनमोहन' अनुनय करि कहति इहै, मो पर बस कोप

धरैं ही रहिए, बाकी दिसनें सकु जोहि[1] ।।

[११६]

तेरी भौंह की मरोरि मैं त्रिभंगी ललित भए,

अंजन दै चितयै तैं भए स्याम स्याम बाम ।

टेढ़ी चितवनि हिएँ दामिनी सी कौंधि जात,

लियौ नहीं जात लाल राधा राधा आधौ नाम ।।

ज्यौं-ज्यौं नँचाए, त्यौं-त्यौं नाँचे हरि,

अब मया कीजियै, चलियै कुंज-धाम ।

'सूरदास मदनमोहन' लालन कैं कलप बीतें,

तेरी घड़ी–पल–जाम[2] ।।

[११७]

तू हठ छाँड़ि री, मोहन बोलनु पठईं फेरि ।

बात सुनि-समुझि ऊतरु दीजै, पहिलै कहा रिसाइ,

रंचक सूधी आँख आनि हेरि ।।

---

१. संग्रह ३३, पाठ ठीक नहीं है ।

२. संग्रह ३२

रचत-पचत सैया तेरे हित, तोहि धरैं चित,
जपत स्याम तुव नाम भामा, सुनि मुरली टेरि ।
'सूरदास मदनमोहन' कै लाऊ तो हिएँ,
कहि इहिं बातन बेरि-बेरि[१] ॥

[११८] राग केदारौ

एती रिस कब तैं कीजियत री गुन-आगरी ।
प्यारौ लाल तेरे आधीन, तेरौ अन-ऊतरु सुनि-सुनि स्याम,
हँसि-हँसि देत नैक चितैं गुन दल नागरी ॥
तेरौ ही भाग-सुहाग, तोही सौं अनुराग,
तेरे ही माथै रती, तू ही रूप-उजागरी ।
'सूरदास मदनमोहन' तेरौ जग जोबत हैं,
जैसै मृगनि भूली है बागरी[२] ॥

[११९]

देखी अनौखी रूसन हारी, जूठेंहि दूसन देति अदोसनि ।
को जानैं कहा कह्यौ स्याम, पिय परी चटपटी,
कछु न कह्यौ तब तैं मोसौं, अब भरि-भरि स्वांस मसोसनि॥
हौं जानति हरिजू के मन की, तोही सौं सखि प्रीत-रीत,
रीझि कै लागति तेरैं अन रोसनि ।
'सूरदास मदनमोहन' पी की क्यौं मिटै आस,
जैसै प्यास कन ओसनि[३] ॥

---

१. संग्रह ३६

२. संग्रह ४२, पाठ ठीक नहीं है ।

३. संग्रह ४४

[१२०]

मान छिड़ावति तेरेई सुख कौ, सतर भौंहैं कत कौं करति ;
किधौं लाल तू बहुत खिजात, पाई न जिय की बात,
लाड़िली बूझति लोइन भरति ।।
तैं ऊतरु-दूतरु कछु दीनौं, पिय बोले जु भाय,
सु तोकौं हैं धौं मन धरति ।
'सूरदास मदनमोहन' प्यारे न्यारे होहि न चाहत,
तुव छबिहिं चित तैं नहिं टरति[1] ।।

[१२१] राग कान्हरौ

तू सुनि कान दैरी मुरली, तेरे गुन गावै स्याम कुंज-भवन ।
सनमुख होइ करि, ताहि कौं आँकौ भरि,
सो तन परसि आवै जो पवन ।।
तेरौई ध्यान धरति उर अंतर नैन मूँदि,
निकसति उर डरपत, तेरौई आगम सुनि स्रवनन ।
'सूरदास मदनमोहन' सौं तू चलि मिलि,
तोही तैं पायौ नाम राधा-रमन[2] ।।

[१२२] राग ईमन

मुसकौंहे नैन, बैन-भौंहें सतरौंही,
मोहि आवत देखि भई है रुखौंही ।
रूठचौ हौं मनाऊँ, कछु प्रकृति न जानी परै,
मारै डारति चितवनि तिरछौंही

१. संग्रह ४४, पाठ ठीक नहीं है ।
२. वाणी ६३, ब्रज-माधुरी-सार पृ० १०४

अनखौंही सी बातें, लजौंही सी दृष्टि-गात,
आवति ही जात फिर पछितानी हौंही ।
'सूरदास मदनमोहन' पाँय धरौ तुम,
मो तन सचु चितवति बिहँसौंही[१] ॥

[१२३] पट ताल

मानैगी, किधौं न मानैगी, तोसौं कहौंगी ।
कही स्याम कछु करति औरैं तौ, एती रिस कौलौं सहौंगी ॥
हौं पिय पठई बोलन तैं सखि, उलटि ठानी औरै कखु,
हौं भई बावरी आवत-जात, कछु चुपकै रहौंगी ।
'सूरदास मदनमोहन' के तन माँहि काहे कौ सुख,
महि राखि बढ़ावत और ही री औंगामौंगी[२] ॥

[१२४]

त्रै जाम घटि गई री, तऊ तेरौ मान होत घटि न ।
प्रान प्यारे न्यारे तोतैं कैसै करि देखौं,
इन नैननि सखि, हा-हा अजहु नटिन ॥
नेंक बोलौ मुख सुख के बचन,
हाँती करौ रिसि, भौंहनि तैं गति ठटिन ।
'सूरदास मदनमोहन' जब देखौं अंग संग,
तौ मेरी प्रीति जाए दुहुँ दिसि तैं अटिन[३] ॥

१, वाणी ४२

२. संग्रह ४३, पाठ ठीक नहीं है ।

३. संग्रह ४४

[१२५]

अबहिं-अबहिं करति रजनि गई सब हू री, बतिअनि लै राखी।
आपुन चलति न ऊतरु देती, चेति अजहु बोल्यौ तमचुर साखी ।।
ज्यौं-ज्यौं सतर भई स्याम-प्रीति पर, त्यौं-त्यौं अधिक दीनता भाखी।
'सूरदास मदनमोहन' पिय प्यारी को जानै कहा ठगी-मुरि राखी[1] ।।

[१२६] राग पूर्वी

ऊतरु कहिहौं कहा जाय पिय सौं, हौं आई अथएकी ।
अरध निसा बीती, हौं हारी तू जीती,
कोटिक कही तोसौं, तेरे भाएँ बूँद तए की ।।
तासौं कहा कहियै री आली,
जाहि न अपनी बुधि सिखए की ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय कब के ठाड़े मग जोवत,
तू बैठी छाँह छए की[2] ।।

[१२७] राग भूपाली

तू को है री, कौनैं पठाई, कापै आई, ह्याँ को मानैं ।
तू जो कहति स्याम नाम के सौं,
स्याम कैसै है, देख्यौ न सुन्यौ, को पहिचानैं ।।
स्रवननि पर कर धरति, भरति नैना कबहू,
मंद मुसकाय कबहुँ भृकुटि तानैं ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय तुम जासौं कहति आपुने प्रानैं[3] ।।

---

१. संग्रह १३, पाठ ठीक नहीं है ।

२. वाणी ४५, संग्रह १८, नित्य कीर्तन, पृ० १४६ और २३६

३. संग्रह २७

[१२८] झप ताल

तू कतकौं करति बतियाँ बनाय, मैं जानो री तेरी बसोठी।
आन की आन बानैं, कह्यौ क्यौं हू न मानैं तू,
बीच-बीच फिरति है कत देखी ढीठी ॥
छाड़हिं किन अधिकाई, मोहू सौं चतुराई,
मै नीकै जानि पाई, कपट की सब ईठी।
'सूरदास मदनमोहन' पिय की तुही तू अहिकौं पत्याई,
तिहिं जो चिकरई मुख मीठी[1] ॥

[१२९]

स्यामा जू आधि रात लौं सिंगार कीनौं, मोहि भरोसौ दीनौं,
पाछैं उठि परिजंक पौढ़ि रही।
मोसौं कह्यौ न रह्यौ जात, यातैं हौं जकि रही,
नैंन मूँद मुख मौन गही ॥
फिर दुखद चितयौं हँसी मो तन,
तब मैं जिय की उनमान गही।
'सूरदास मदनमोहन' कैसै कै हौ न्यारे मानियै मेरी कही[2] ॥

[१३०]

लालन तिहारो प्यारी, आजु मनाएँ न मनति।
बूझ्यौ न परै निदान, काहे तैं कियौ है मान,
जो गुन बरनौं, तौ तिहारे कोटि औगुन गनति ॥

---

१. संग्रह २०, पाठ ठीक नहीं है।
२. संग्रह ४३

भरि-भरि अँखियाँ नीर लेति, पै ढारति नाहिंन,
अति रिस फरकत अधर, कोपिकै भ्रकुटि तनति ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय आपुन ही चलियै जू,
वे भलौ मानि हैं, ऐसी हौं जानति[१] ॥

[१३१] राग केदारौ

काहे मनाऊँ स्याम लाल, बाल जोरैं नहिं डीठ ।
मन की तब लखियै, मुख तैं जो बोलै, ऐसी तिहारी अहीठ ॥
मैं अपनी सी बहौत कही, सुनि-सुनि उन सबै सही,
बारू की बूंद, ताहि कहा करै बसीठ ।
'सूरदास मदनमोहन' आपुन जाय मनाय लीजै,
जैसी बहै बयारि, तैसी दीजियै जु पीठ[२] ॥

[१३२]

हौं कैसै कै ल्याऊँ, मरम न पाऊँ स्याम,
मेरैं जान वाकौ मान, मानगढ़ भयौ ।
तन कंचनगिरि सुदृढ़ कियौ, अरु बसन कोट रच्यौ,
अंचर ड्यौढ़ी ओट दयौ ॥
बचन पौरिया बोलै न खोलै मुख, पौरि मूंदि रह्यौ,
भौंह धनुष, नैना रिस के बान, तातै जाय न गयौ ।
साम-दाम-भेद-दंड सब मैं करि देखे,तब हौं आई उलटि,
'सूरदास मदनमोहन' आपुन चलियैं जू, जो तुम हू पै जायै लयौ[3]॥

---

१. वाणी ५३, संग्रह ४५
२. वाणी ५०, संग्रह ५४
३. संग्रह १४ नाणी ४६

[१३३]

चुप करि रहति, कछु न कहति, मो तन चितवति टेढ़ी भौंहै ।
हौं जानती मानती सी, आतैं देखति नैन मनौंहै ।।
स्रबननि बचन सुहात सुनत सो कछु कपोल मुसुकौंहै ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय आपुन ही चलियै,
अब मनायवे की गौंहै[1] ।।

[१३४]

स्याम बिचारियै वाके मन की,
और घन तन देखति अँखियाँ भरि-भरि लेति ।
जब उठि चलति तब बोलि लेति,
जब बैठौ तौ सूधैं न चितवति, बूझै तैं ऊतरु न देति ।
मेरैंऊ गुंजनि की माला बिलोकति बरन पलटि गयौ,
बदन का और नैन मूँदि-मूँदिकै होत अचेति ।
'सूरदास मदनमोहन' आपुन ही पाँउ धारियै,
कहि न सकति कछु एति[2] ।।

[१३५]

बदिहौं तेरी अधिकाई, अब कैसै धौं छिड़ावै वाकौ मान,
रहीं सकल पचिहारि नारि एहीं री, तू जानति आन सयान ।।
जाहि न काम कौ डरु, और न बुद्धि कौ बरु,
तासौं कहा बसावै सिखबन मान ।
'सूरदास मदनमोहन' की सौंहे करति,
मैं कही बार-बार, पै न धरै कान[3] ।।

---

१. संग्रह २६ २.संग्रह २३, पाठ ठीक नहीं है । ३. संग्रह ३५

[१३६]

अब मैं नीके जानी-पहिचानी,अनुहारि नारि नहिं मानति मनाए।
हौं पचिहारी तौऊ नहिं बोली, खोली जिय की गाँठ न,
रिस की अँखियाँ देति जनाए ॥
किलकि चित्त कौ उपाय भाय कछु देखियै,
क्रोध-हरष-भीति रहो सतरौंहे भौंह तनाए।
'सूरदास मदनमोहन' पिय अब तुम जानौं,
जासौं कोटिक जतन बनाए[1]।

[१३७]

जानत वाके मन की लाल, आपुन हीं पाँउ धारौ।
आवत जात सबै निसि बीती, एहू खेल खेलि देखियै,
प्यारे जू एई जीती, तुम हारौ।
ऐसी धौं कहा बातें होति हैं मोहन,
तुमहिं गये वे नहिं मानै, इहिं जिय बिचारौ।
'सूरदास मदनमोहन' तुम हौ चतुर,
राखियै जू वाकौ गारौ[2] ॥

[१३८] राग पूर्वी

कबहु हरषि, कबहू डरपति सी, कबहु क्रोध-आँसू ढारति,
स्याम ! समुझौ जू, यह कौन भाव।
नहीं मान, अभिमान नहीं और नहिं हठ, नहिं रिस,
रस नहीं, तुम ही जानौं वाकौ सुभाव ॥

---

१. संग्रह ४६
२. संग्रह ४८

बहुत बेर मैं ही जु मनाई, अबकै मैं देखी औरै कछु,
तब मेरे जिय उपज्यौ आन उपाव।
'सूरदास मदनमोहन' प्रभु आपुन ही चलियै, सोच कहा ?
सोई खेल खेलिए, जैसौई परै दाव[1] ॥

मान मोचन— [१३९] राग आसावरी

गुरुजन मैं दुरि बैठी स्यामा, स्याम मनाबन जाहीं।
सनमुख ह्वै कै चरन छुहावत, मुकट की परछाहीं ॥
दरपन मैं प्रतिबिंब निहारति, करतहिं नाँही-नाँहीं।
'सूरदास मदनमोहन' पाछै ह्वै दुरि-दुरि हा-हा खाहीं[2] ॥

[१४०]

जो पै आपुन ही आयौ चाहत, तौ पहिलैं ही हौं कतकौं पठई ?
अनेक जतननि मैं मान मनायौ, पै बहुरचौ स्याम तुमहीं आनि हठई॥
कोमल बचन, कोमल दृष्टि, चितयौ मो तन,
जो एकै छिनु औरै तुम धीरज किए रहति, तो देखत मेरी होड़ ठई।
'सूरदास मदनमोहन' जोई आजु तजै मान मैं ऐंठई[3] ॥

---

१. संग्रह १२
२. संग्रह २, यह पद सूरसागर (परिशिष्ट २) में इस प्रकार है—
गुरुजन मैं डटि बैठी स्यामा, स्याम मनावन जाहीं।
सनमुख ह्वै कै चरन छुवाई, मोर-मुकुट परछाँहीं ॥
तब दरपन लै निरखन लागी, कहि तिय नाहीं नाहीं।
सूरदास मोहन पाछें ह्वै छबि निरखत सुख माहीं ॥ २६१ ॥
३. संग्रह ८, पाठ ठीक नहीं है।

[१४१]

ऐसौ मोहि अपुनपौ लागत,
जैसी तुमहु कौं भावति प्यारी।
तन सोहै सारी फीकी लगै उजियारी,
तोसी तुही वृषभान-दुलारी ॥
तुमहुँ न चाहति आपुकौं एतौ मान,
ऐसैं हौं चाहति कहति बिहारी।
'सूरदास मदनमोहन' राधे एती बातैं,
सुनि-सुनि मुसकि निहारी[1] ॥

[१४२] राग पूर्बी

पाछैं ललिता, ता आगैं स्यामा प्यारी,
ता आगैं पिय मारग फूल बिछावत जात।
कठिन कली बीनि करत न्यारी-न्यारी,
प्यारी के चरन कोमल जानि,सकुचित गड़िबे डरात॥
अरुझी लता सु कर निरवारत,
पाछैं डारत द्रुम पल्लव-पात।
'सूरदास मदनमोहन' पिय की अधीनताई,
देखत मेरे नैंन सिरात[2] ॥

---

१. संग्रह २७
२. संग्रह १३, वाणी ५५, कीर्तन भाग ३, पृ० १४६
यही पद सूरसागर में इस प्रकार है—
पाछैं ललिता आगैं स्यामा, आगैं पिय फूल बिछावत जात।
कठिन-कठिन कलि बीनि करति न्यारी, प्यारी पग गड़िबेंहि डरात॥
दीरघ लता करनि निरवारत, लै डारत द्रुम बेली पात।
सूरदास प्रभु की अधीनता देखत, मेरे नैंन सिरात॥३२३४॥

[१४३] राग कान्हरा

राधा जू कौं ललिता मनाय लिएँ आवति,
हरि जू के कान परी नूपुर-भनक ।
तलप रचित किसलै-दल हाथ रहे,
प्रतिधुनि हिएँ भई, बाजत झनक ।।
जब जाय मिलि लपटाने हरि हियौ भरि,
जैसें फिरि परसें रहति काँसे की ठनक ।
'सूरदास मदनमोहन' लाल राधा रीझे,
हँसति-हंसति बैठे परियंक कनक[1] ।।

मुरली— [१४४] राग देस

चलो री मुरली सुनियै, कान्ह बजाई जमुना-तीर ।
तजि लोक-लाज, कुल की कान, गुरुजन की भीर ।
जमुना जल थकित भयौ, बछरा न पीवैं छीर ।
सुर बिमान थकित भये, थकित कोकिल-कीर ।।
देह की सुधि बिसर गई, बिसरचौ तन कौ चीर ।
मात-तात बिसर गये, बिसरचौ घर बालक बीर ।।
मुरली धुनि मधुर बाजै कैसै कै धरैं धीर ।
'सूरदास मदनमोहन' जानत हौ पर-पीर[2] ।।

---

१. वाणी ५४, संग्रह ४०, कीर्तन भाग ३, पृ० २१२

२. वाणी १८, ब्रज-माधुरी-सार, पृ० १०७

[१४५] राग खंभाज

बाँसुरी बजाई आजु, रंग सौं मुरारी ।।
सिव समाधि भूल गई, मुनि-जन की नारी ।
बेद भनत ब्रह्मा भूले, भूले ब्रह्मचारी ।।
रंभा सब ताल चूकी, भूली नृत्यकारी ।
जमुना जल उलटि बह्यौ, सुधि ना संभारी ।।
वृंदाबन बंसी बजी, तीन लोक प्यारी ।
ग्वाल-बाल मगन भये ब्रज की सब नारी ।।
सुंदर स्याम मोहन मूरति, नटवर बपुधारी ।
'सूरदास मदनमोहन' बरनौं बलिहारी[1] ।।

[१४६] राग पूर्वी

नंदनँदन सुघर-राय, मोहन बंसी बजाय,
स र ग म प ध नि सप्त सुरनि गावै ।

---

१. वाणी १७
सूरसागर में इसका राग बिलावल और पाठ निम्न प्रकार है—

बाँसुरी बजाइ आछे, रंग सौं मुरारी ।
सुनिकै धुनि छूटि गई, संकर की तारी ।।
बेद पढ़न भूलि गए, ब्रह्मा ब्रह्मचारी ।
रसना गुन कहि न सकै, ऐसी सुधि बिसारी ।।
इंद्र-सभा थकित भई, लगी जब करारी ।
रंभा कौ मान मिटचौ, भूली नृत्यकारी ।।
जमुना जू थकित भई, नहीं सुधि सँभारी ।
सूरदास मुरली है, तीन लोक प्यारी ।। १२६७ ।।

अतीत अनागत संगीत सुधर,
सुर नीके औघट तान मिलावै ॥
सुर ध्याय, ताल ध्याय, नृत्य ध्याय निपुन,
लघु-गुरु जति-पुलक भेद मृदंग बजावै ।
'सूरदास मदनमोहन' सकल कला-गुन प्रबीन,
आपुन रीझि रिझावै[1] ॥

[१४७]

साँवरे मुरली अधर धरी । सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥
सुनि थके देव विमान । सुर-बधू चित्र समान ॥
ग्रह-नछत्र तज तन रास । बाहन बँधे धुनि पास ॥
सुनि आनंद-उमँग भरे । चर थकि रहे, अचर चरे ॥
चल-अचल गति विपरीत । सुनि बेनु कल पद गीत ॥
झरना झरति पाषान । गंधर्ब मोहे गान ॥
सुनि चंचल पवन थक्यौ । सरिता-जल चलि न सक्यौ॥

---

१. संग्रह १४, कीर्तन भाग १ पृ० ३२६, पद २६
यह पद सूरसागर में इस प्रकार है—

नंद-नँदन सुघराई, बाँसुरी बजाई ।
सरगम सुनीकैं साधि, सप्त सुरनि गाई ॥
अतीत अनागत संगीत, बिच तान मिलाई ।
सुर तालरु नृत्य ध्याइ, पुनि मृदंग बजाई ॥
सकल कला गुन प्रबीन, नवल बाल भाईं ।
सूरज प्रभु अरस परस, रीझि सब रिझाईं ॥१७६६॥

सुनि थक्यौ मलय-समीर। उलट्यौ सु जमुना-नीर ॥
सुनि धुनि चलीं ब्रज-नारि। सुत–देह–गेह बिसारि ॥
द्रुम–बेली चपल भई। नव पल्लव प्रकट नई ॥
नव बिटप चंचल पात। हरि-मिलन कौं अकुलात ॥
अंकुरित पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात ॥
सुनि खग-मृग मौन धरी। फल-तृनहु की सुधि बिसरी ॥
सुनि बेनु मृग थकि रहे। तृन दंतहु तैं सु गहे ॥
बछरा न पीवत छीर। पंछी मनौं मुनि धीर ॥
मनमोहन रूप धरयौ। तब काम कौ गर्व हरयौ ॥
नव नील घन तन स्याम। नव पीत पट अभिराम ॥
नव मुकुट नव बन दाम। लावन्य कोटिक काम ॥
मनमोहन मदन गोपाल। तन साँवल नैन बिसाल ॥
श्री मदनमोहन लाल। संग नागरी नव बाल ॥
नव कुंज जमुना-कूल। देखत सूरदासहिं फूल[1] ॥

[१४८]

सुनि आधी सी रात मोहन मुरली बजावै।
नींद उचटि गई, मन मुरझात प्रानहिं और न भावै ॥
मन हर लियौ, देह-गति भूली, गृह आँगन न सुहावै।
सूरदास प्रभु मदनमोहन पिय, मुनि-जन ध्यान लगावै[2] ॥

---

१. वाणी १५, संग्रह ३

२. संग्रह ५१

[१४९]

बंसी न काहू के बस, बँसी नें कौने री बस,
बंसी कौं बजाय जानैं, बंसी जाके बस है ।
अधर-रस-प्रेम माती, नैक न होत हाँती,
कान परै प्रान लेत, वे चसिकै रस है ।।
नये-नये मोह बाढ़ी, मोहनलाल चाहि छाड़ी,
ललित त्रिभंगी कान्ह मोहन सो अस है ।
'सूरदास मदनमोहन' प्रीति बाढ़ी परस्पर,
वृषभान-नंदिनी प्रीतम सौं रस है[1] ।।

[१५०]

सुर-नर-मुनि मोहति, सोहति मुरली अधर मधु पिय तैं ।
सप्त सुरनि भेदति तान मदन बान से लागत,
जागत मैन धुनि सुनि, सौंधें परसि जिय तैं ।।
रति-पति की गति हरी, जाके यहि कान परी,
धुनि री सुनि रीझि रहीं तिय तैं ।
'सूरदास मदनमोहन' बेनु बजाय,
काढ़ि लियौ मन हिय तैं[2] ।।

---

१. वाणी १६
२. संग्रह २३

रास — [१५१] राग मालकोष

चलियै जु नैक कौतुक देखियै, रच्यौ है रास मंडल,
राधे ! हौं आई हूँ तुमहिं लैन ।
मृद-मद घसि अँग लगाय, मुकट काछिनी बनाय,
मुरली-पीतांबर बिराजत, इहिं छबि मोपै कहि न परै बैन ।।
सब सखि मिलि नाँचति-गावति, ताल-मृदंग मिलि बजावति,
नृत्य करैं मध्य, मूरति मानौं मैन ।
'सूरदास मदनमोहन' हँसति कहा हौ जू, पाँउ धारियै,
जो पै सुर पियौ चाहौ नैन[1] ।।

[१५२] राग गौरी

घोष-नागरी मंडल मध्य नाँचत गिरधारीलाल,
लेत गति अनेक भाँति, चरन पटकनी ।
गिड़गिड़ता–गिड़गिड़ता, ताता तत–तातातत, थेई-थेई,
बीच बीच अधर मधुर मुरलिया मटकनी ।
भुज सौं भुज जोरि जोर, लेत तान नव किसोर,
गावत श्रीराग, मिल ग्रीव लटकनी ।
सूरदास प्रभु सुजान, नंदनँदन कुँवर कान्ह,
मदनमोहन छवि निरखत काम सटकनी[2] ।।

---

१. वाणी ३१, संग्रह १५

२. कीर्तन भाग १, पृ० ३१३, यह पद श्री राग में भी गाया जाता है । यह पद सूरसागर में नहीं है, किंतु इसके सूरदास कृत होने की भी संभावना है ।

[१५३]

तैसैहिं नाँचत मोर, नाँचत लाल री त्रिभंगी।
जैसे-जैसे धुनि मुरली बाजत, तैसे-तैसे घन गरजत,
मुरज बजावत मघबा मृदंगी॥
सप्त सुरनि अलाप गावत तान-बंधान-मूर्छा,
सुरति देत मधुप उपंगी।
'सूरदास मदनमोहन' जान-मुकट मनि उघटत सब्द गति भेद,
मिलावत उपजत अंग अनंगी[1]॥

[१५४] राग श्री

जेते नृत्य भेद-भाव, जानत हरि जान-राय,
रास मधि नाँचत छबि मोर-मुकट डोलनी।
झं झं झं झकुट कुटक, नागड़दी थोंगड़दी, थेई-थेई-थेई,
ततथेई-ततथेई सब्द उघट बोलनी॥
चंद धुरु ध्रुरपद सु देसी सुधंग नैम,
बिरस नैनन की ओलनी।
लाग-डाट उरपति रपहु रम ईसु,
उलटि-पलटि अंग-अंग तोलनी॥
बदनु चटकि, ग्रीव लटकि, भौंह मटकि, चरन पटकि,
गुन-समुद्र कल्लोलनी।
'सूरदास मदनमोहन' नृत्य करत रस रास्यौ,
ब्रज-त्रिया मन-मोहनी[2]॥

---

१. संग्रह २५.
२. संग्रह १८, पाठ ठीक नहीं है।

[१५५]

तैसौई त्रिबट मुख उघट पाँयनि लेत,
तैसौई मृदंग बाजै धा-धि-लंग ।
जहीं हस्त, तहीं दृष्टि, तहीं मन, ताही भाव-गति,
ग्रीव लटक-मटक, भृकुटी भंग ॥
तिरप हुरमई लाग-डाट, कत्तर सु देस लैन,
अनाघात फरकत सब अंग ।
'सूरदास मदनमोहन' रीझे, माथैं हाथ दै,
अपा-अपा करि डोलत संग[1] ॥

[१५६]

पिय सौं खेलति तोहि अधिक स्रम भयौ,
तू आ उरै, हौं हांकौं बयारि ।
अपने आँचर सौं सुखाऊँ सखी री,
रुचिर बदन परिस्रम कौ बारि ॥
स्रबन-नासिका उलटि आभूषन,
छूटे चिहुर बाँधौं सँभारि ।
'सूरदास मदनमोहन' मिलिवै कौ सुख जाहि,
न भावै ताहै वारि-डारि[2] ॥

---

१. संग्रह ३०, पाठ ठीक नहीं है ।

२. संग्रह ५३, वाणी ३३, सूरसागर में यह पद इस प्रकार है—

पिय संग खेलत अधिक भयौ स्रम, अब हांकौं हौं आउ बयारि ।
अपनौ अंचल लै सुखऊं री, रुचिर बदन स्रमकन के बारि ॥
निरतन उलटि गए अंग-भूषन, बांधौं बिथुरी अलक संवारि ।
सूरदास ललिता की बानी, सुनि चित हरष कियौ सुकुमारि ॥३७७०॥

[१५७]

नागर-नागरी आनंद मन भए मगन ।
श्री जमुना पुलिन समीर त्रिगुन तहाँ रास रच्यौ वृंदाबन ।।
जोरै भुजा परस्पर मोहन, रची मंडली गोपी-जन ।
मनहु नीलमनि कंचन बीचहिं बिच, नायक मध्य रतन तन ।।
राका जामिनी सरद सरोबर फूले कमल बदन ।
फरहरात अंचल अति चंचल, छबि लागति दामिनि-घन ।।
सूख्यौ चंचन बंदन, आभूषन टूटे, छूटि गये बसन ।
अपने हाथ सँभारत मोहन, देखि सिथिल कटि रसन ।।
कुटिल अलक तें मुख-छबि ऊपर, बरसत स्वेद अंबु-कन ।
मनहु पराजित भयौ ही कोटि तम, देत दंड मुकता-गन ।।
बढ़ी रैन, बिधु-बाहन मोहे, मुरली धुनि सुनि स्रबन ।।
सूरदास प्रिय मदनमोहन कैं, आयौ है काम सरन[1] ।।

[१५८]   राग नट

अरुझ्यौ कुंडल लट बेसरि सौं,
पीतपट बनमाला बीच आन अरुझे हैं दोऊ जन ।
प्राननि सौं प्रान, नैन नैन सौं अटकि रहे,
चटकीली छबि देखि, लपटानौ स्याम घन ।।
होड़ा-होड़ी नृत्य करैं, रीझि-रीझि आंकौं भरैं,
ततथेई ततथेई रटति मन मगन ।

---

१. संग्रह ५२.

'सूरदास मदनमोहन' रास मंडल में प्यारी कौ,
अंचर लै-लै पौंछति हैं स्रम-कन[1] ॥

[१५९] राग केदारो

आली री, रास मंडल नृत्य करत मदनमोहन,
अधिक सोहन लाड़िली रूप-निधान ।
चरन चारु हस्तभेद निरतत आछी भाँति,
मुख हास, भ्रू विलास लेत नैनन ही मैं मन ॥
गावत, बेनु बजावत दोऊ, रीझि परस्पर आँकौं भरि-भरि,
ततथेई–ततथेई करत मन मगन ।

---

१. वाणी ३०, संग्रह १७, कीर्तन भाग १, पृ० ३०६, अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ० ४४८

सूरसागर में इसका राग मलार कमोद और पाठ निम्न है—

अरुझी कुंडल लट, बेसरि सौं पीतपट,
बनमाल बीच आनि उरुझे हैं दोऊ जन ।
प्राननि सों प्रान, नैन नैननि अँटकि रहे,
चटकीली छबि देखि लपटात स्याम धन ॥

होड़ा-होड़ी नृत्य करैं, रीझि-रीझि अंक भरैं,
ता ता थेई थेई उघटत हैं हरषि मन ।
सूरदास प्रभु प्यारी, मंडली जुवति भारी,
नारि कौ अंचल लै लै, पौंछत हैं स्रम-कन ॥१७६७॥

'सूरदास मदनमोहन' रासमंडल में प्यारी कौ,
अंचर लै पौंछति हैं स्याम-घन[1] ।।

बसंत — [१६०] राग केदारो

जोबन मौर, रोमावलि बल्ली सुफल फली,
कंचुकी बसंत ढाँपि, लै चली बसंत-पूजन ।
बरन-बरन कुसुम प्रफुल्लित नव अंब-मौर,
ठौर-ठौर लागीरी कोकिला कूजन ।।
बिबिध सुगंध संभारि अरगजा,
गावत रितुराज राग चलीं ब्रजबधू बन ।
'सूरदास मदमोहन' प्यारी ओर पिय सहित,
चाहत कुसल सदा दोऊ जन[2] ।।

---

१. वाणी २८
इसी से मिलता हुआ परमानंददास का निम्न पद है—

आली री, रासमंडल मध्य नृत्य करत मदनमोहन,
अधिक सोहन लाड़िली रूप-निधान ।
चलन चारु हस्त भेद मिलवत आछी भाँति-भाँति,
मंद हास भ्रू-विलास, लेत नैनन ही मैं मान ।।
दोऊ मिल राग केदारौ अलापत,
होड़ा-होड़ी उघटत विकट तान ।
'परमानंद' निरखि गोपीजन बारत हैं निज प्रान ।।
—नित्य कीर्तन, भाग १, पृ० ३२५

२. बसंत-कीर्तन के पद १२५, वाणी ७६

[१६१]

मधु रितु जो इच्छा वर कियौ स्याम कौं,
ताकौं देखन कौं पठई प्रथम चतुर पिक अली।
रीझि मदनमोहन संग सोहन नवल जाइ कह्यौ,
जैसौ देख्यौ नैनन तैसी बाढ़ी अबला बल्ली लली ॥
सु नछत्र पंडित लगन धरी श्री पंचमी सगाई आई,
मोर-बधू रूप वारी, बन-उपबन द्रुम नव पल्लव पहिरि चली।
आगौनी कारन भँवर गुंजार नाद-धुनि,
पुहुप-बाटिका सखी प्रफुलित आनन कमल-कली।
उठि चलि बेगि, मिलि 'सूरदास मदनमोहन',
सीतल मंद सुगंध पवन चली[1] ॥

[१६२]

बन-बन खेलन चली कमल-कली बिकसि,
हँसि अनुराग भरी ब्रज-नारी।
अपुने-अपुने घर तैं निकसि एक ठौर भईं सकल,
फूलि परी मानों फुलवारी ॥
तरु तमाल लाल मध्य ठाड़े राजति, चहुँ दिसि तैं कनक-बेलि,
गोपी भरि भाजन ल्याईं, मानौं आगै-पाछै पवन डुलावै बनबारी।
'सूरदास मदनमोहन' अंग संग बसंत सोहै,
अनंग अदभुत बारि संबारी[2] ॥

---

१. वाणी ७७, पाठ ठीक नहीं है।
२. वाणी ८०, पाठ ठीक नहीं है।

होरी—　　　　　　　[१६३]　　　　　　　राग गौरी

हो–हो हो–हो होरी बोलै। गोरस कौ री माँतौं डोलै ।।
ब्रज के लरिकन संग लिएँ डोलै। घर-घर के री खिरका खोलै ।।
जो कोउ डरपि जाय घर बैठे। कर बरजोरि ताहि कै पैठै ।।
आय अचानक अँखियाँ मींचै। रूप-सुधा रस नैनन सींचै ।।
गनत नाँहिं प्रमुदित नर-नारी। बचत नाँहिं बिन दीएँ गारी ।।
कुमकुम-कींच मची अति भारी। उड़ि गुलाल अटे अटा-अटारी ।।
अलिकाबली सिथिल अति राजत। धावत मत्त गयंद लजावत ।।
ब्रज मैं डोलत भूल्यौ-भूल्यौ। भ्रमर उड़े मानौं अंबुज फूल्यौ ।।
ब्रज-जुबती मोहन गहि आने। कुमुदिन मानौं भ्रमर लुभाने ।।
तारी देय घेर जब लीने। क्यौं छूटौ बिन फगुवा दीने ।।
गुंजाबलि मुकताबलि टूटे। पीतांबर गहने दै छूटे ।।
सखी-सखा मिलि खेलैं होरी। कहा बरनौं री मो मति थोरी ।।
खेलत फागु बढ्यौ सुख-सागर। सूरदास मदनमोहन नागर[1] ।।

[१६४]　　　　　　　राग धनाश्री

होरी के खिलार भावते, यौं ही जान न दैहौं।
रँगभोने बानक बनि आये, जागे हो भाग हमारे,
नैननि मैं भरि राखौं, फगुवा न लैहौं ।।
न्यारे ह्वै मुख माँड़िहौं, अँखियन अजैहौं,
बीरी पलटि न लेहु और सौं काहू की,
प्यारे औरै भरन न दैहौं, न्यारे ही खिलैहौं।

---

१. वाणी ७६, बसंत-धमार के पद २५६

मोहन मूरति साँवरी हँसि हृदै लगैहौं,
'सूरदास मदनमोहन' संग हिलि मिलि दोऊ,
जल की तरंग जैसें जल ही समैहौं[1] ॥

[१६५] धमार राग गौरी

खेलत हैं हरि हो-हो होरी । ब्रज-तरुनी रससिंधु झकोरी ॥
बाला वयसंधी नव तरुनी । जोबन भरी चपल दृग हरनी ॥
नवसत सजि गृह-गृह तैं निकसीं । मानहु कमल कली सी बिकसी ॥
पिक बचनी तन चंपक बरनी । उपमा कौं नहिं मनसिज घरनी ॥
बरन-बरन कंचुकि अरू सारी । मानहुँ काम रची फुलबारी ॥
द्वादस आभरन सजि कंचन तन । मुख ससि आभूषन तारागन ॥
मानौं मनोभव मन तैं कीनीं । और त्रिभुवन की सोभा लीनीं ॥
देखत दृष्टि न छिन ठहराई । जनु जल झलमलात रवि छांई ॥
ताल मृदंग उपंग बजावत । डफ-आवज सुर एक सजावत ॥
मधुरितु कुसुमित बन भई बौरी। गावत फाग राग रति गौरी ॥
आईं सबै नंद जू के द्वारै । अगनित कलस सुगंध संभारै ॥
झूमि-झूमि झूमक सब गावत । नमित भेद दुहूँ दिसि तें आवत ॥
रस-सागर उमग्यौ न समाई। मानहु लहरि चहूँ दिसि धाई ॥
खोर खिरक गिरि जहाँ हीपावैं । धाय जाय ताहीं गहि लावैं ॥
करि छाँड़त अपनौ मनभायौ । उड़त गुलाल सकल नभ छायौ ॥
मोहन आय द्वार तैं झाँकें । दूर भये तब जुबतिन ताके ॥

---

१. वाणी ७८

यह पद सूरसागर के संदिग्ध पदों में परिशिष्ट १ सं० १२४ पर भी है।

एकहिं बेर सबै जुरि धाईं । पौरि तोरि मंदिर मैं आईं ॥
मोहन गहत-गहत छुटि भागे । पीतांबर तजि तन भये नाँगे ॥
दौरि अटा चढ़ि दए हैं दिखाई । मानौं स्याम घटा घिरि आई ॥
सुंदर स्याम मनिगन तन राजे । गिरा गंभीर मेघ लौ गाजे ॥
टेरि-टेरि पीतांबर मांगै । गोपी कहैं आउ लेहु आगै ॥
पीतांबर राधिका उढ़ायौ । हरिजू निरखि परम सुख पायौ ॥
पीतांबर तहाँ सोभा पाई । घन तजि दामिनि खेलन आई ॥
तबहिं अरगजा स्याम मँगायौ । अपने कर वर घोरि बनायौ ॥
ऊँचे चढ़ि घन लौ बरसायौ । धाराधर जानौं ऊंवैं आयौ ॥
तब इन जसुमति ठाड़ी पाई । सौंधे गागरि सिर तैं नाई ॥
उततैं निरखि रोहनी धाई । बिच ठाड़ी ह्वै महरि बचाई ॥
आँगन भीर भई अति भारी । जसुमति देत दिबावत गारी ॥
गोपिन नंद दुरे गहि काढ़े । कंचन गिरि से आँगैं ठाड़े ॥
जनु जुबती ऐरावत लाई । पूजति हस्ति गौरि की नाईं ॥
नंद--जसोदा गौरा--गौरी । छिरकति चंदन बंदन--रोरी ॥
पूजि-पूजि माँगत वरमोहन । बिन पाये छाँड़त नहिं गोहन ॥
एक कहति मोहनहिं बतावहु । तब तुम हम पै छूटन पावहु ॥
एक सिखावत, एक बचावत । तारी दै-दै एक नचावत ॥
एक गहे कर फगुवा माँगै । एक नैन काजर दै भागै ॥
बसन आभूषन नंद मँगाए । दये सबन जैसे जाहि भाए ॥
देत असीस चलीं ब्रजबाला । जुग-जुग राज करौ नंदलाला ॥
मदनमोहन पिय के गुन गावै । सूरदास चरनन रज पावै[1] ॥

१: वाणी ८२, नित्य कीर्तन भाग ३, पृ० १७७

फूलडोल-- [१६६] राग सारंग

झूलति फूलडोल पिय-प्यारी ।
अति सुकुमार फूलि दोऊ बैठे, नवल कुँवरि-गिरधारी ॥
बरन-बरन फूलन की रचना, चंपक बेलि निवारी ।
फूली सखी झुलावति-गावति, रंग रह्यौ अति भारी ॥
बरषत कुसुम, देव-मुनि हरषत, फूलन की बरसा री ।
मदनमोहन की या छबि ऊपर, सूरदास बलिहारी[1] ॥

[१६७]

रच्यौ डोल-मंडप निकुंज मैं, झूलत हैं री स्यामा-स्याम ।
उपमा कहि न जाय या छबि की, अंग-अंग प्रति कोटिक काम ॥
ललितादिक सखी सारंग-नैनी, गावति सारंग सुर विस्राम ।
अलि समूह पिक-कीर धीर मिलि,
मिलवत धुनि मुरली अभिराम ॥
कंधन बाहुँ धरे जु परस्पर, आलस बस जागे निसि-जाम ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय की उपमा कौं नाहिंन रति-काम[2] ॥

[१६८] राग जयतिश्री

झूलति जुगल किसोर-किसोरी दोउ,
सखि चहुँ ओर झुलावति डोल ।
ऊँचे धुनि सुनि चकित मुसकि मिल, गावत राग हिंडोल ॥

---

१. वाणी ९०
२. वाणी ८५

ऐसै सब तारा मधि राकापति,

नव तरुनी हरिनी-मृग दृग लोल ।

भांति-भाँति कंचुकी कसी उर, बरन-बरन पहरैं तन चोल ॥

बन-उपबन द्रुम-बेली फूलीं, बनहिं मोर-पिक करहिं कलोल ।

यह धुनि सुनि मोहीं ब्रज-बनिता,

बिरम-बिरम बोलति मधु बोल ॥

कबहुँक डोल तैं उतरि स्याम पिय, कौतुक हेत देत झकझोल ।

एक प्रेम भरि डारति नैनंनि, झूमक देत लेत मन मोल ॥

गिरत तरौना गह्यौ स्याम पिय, स्रबन दैन मिस छुवत कपोल ।

प्रिया मंद मुसिकात मुदित हिय, चितवत नैन सलोल ॥

सखी जबादि कुमकुमा-केसरि लाईं अपुने-अपुने टोल ।

एक तौ भरि पिचकारिन ताकति, एक लिऐं कर कनक-कपोल ॥

झांझ-भेरि-दुंदुभी-पखावज अरु ढप-आबज बाजत ढोल ।

डोलत सखी समूह संग लिए, द्वारैं बोलत हो–हो बोल ॥

रतन जटित आभषन दीनें, और दीनें मुकता अनमोल ।

'सूरदास मदनमोहन' पिय सुख,

मुख फगुवा दै राखौ मन ओल[1] ॥

[१६६]   राग ईमन

फूलन के खंभ, फूलन कौ मयारि-मरुवे,

फूलन कौ डोल बनायौ ॥

फूलन की पटुली, डांड़ी फूलन की,

फूलन कौ छत्र तनायौ ।

---

१. वाणी ८४

फूलन की चोली-सारी, फूलन के हार डारी,
फूली गोपी गोबिंद झुलायौ ।।
फूलन की पाग, फूलन कौ सेहरौ,
फूली सखियन मिलि गायौ ।
'सूरदास मदनमोहन' फूलि बैठे ढिंग, फूली सी दुलहिन,
जिन नव रंग दूलह पायौ[1] ।।

[१७०]

फूली-फूली डारें फूलन की कर, फूले कान्ह फूले बोलत ।
फूली राधिका फूली सखियन संग, फूले कुंज मध्य डोलत ।।
फूली कोकिला, चातक-मोर फूले,
मधुकर मुरली धुनि सुनि फूले, कुसुम रंग लिएँ कलोलत ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय फूलि फूले बिबिध रंग,
घ्रान लैन मिस बेनी गुहत कर फूल्यौ बदन टकटोरत[2] ।।

वर्षा-विरह— [१७१]

ससकि-ससकि रही मोरन की कूक सुनि,
अजहुँ न आये पिया, मुरझानी मन मैं ।
चहुँ ओर बादर तंबुआ से छाय रहे,
पावस कौ पेसखानौ आन परचौ बन मैं ।।

---

१. संग्रह २६, वाणी ८६
२. संग्रह ५१, पाठ ठीक नहीं है।

बालम बिदेस-देस, कैसै राखूँ बेस,
कोकिला की कूक सुनि हूक उठै तन मैं ।
'सूरदास मदनमोहन' बिन दुख पावै बाम,
काम करै टूक-टूक, सूर जैसै रन मैं[1] ॥

[१७२]

गरजि उठे बादर चहुँ दिसि तैं,
बरषा रितु माई, आगम जनायौ ।
मानहुँ मनसिज दल सजि बिरहिन पर,
कोप सहित सुरपति ह्वै सहाय धनुष तनायौ ॥
आबन अवधि मनभाबन पहिलैं ही आय,
इतनौ अंतर मोहि तब न गनायौ ।
'सूरदास मदनमोहन' मिले तेही छिनु प्यारे,
अंक भरि प्यारी पीउ अपनायौ[2] ॥

वर्षा-विनोद-- [१७३] राग आसावरी

प्रीतम-प्यारी राजत रंग-महल,
गरजि-गरजि रिमझिम-रिमझिम बूँदन लाग्यौ बरसनि घन ।
बोलत चातक-मोर, दामिनी दमकि आवै,
झूमि-झूमि बादर अवनि परसन ॥

---

१. वाणी ८९
२. संग्रह ११, वाणी ८८, पाठ ठीक नहीं है ।

तैसौ हरियारौ सावन मन-भावन,

आनँद उर उपजावन, इंद्रवधू दरसन ।

'सूरदास मदनमोहन' प्रिया संग गावत मल्हार,

ललित लता लागी सुनि-सुनि सरसन[१] ॥

[१७४] राग मल्हार

श्री राधा-माधौ प्रान-अधार, जब मिलि गावैं ।

बोलत चातक-मोर, कोकिला करैं कलोल,

उमड़ि-घुमड़ि घन घटा आवैं ॥

उतहिं दामिनि-घन, इतहिं स्यामा-स्याम तन,

मंद-मंद घोर सुर मुरली बजावैं ।

'सूरदास मदनमोहन' ललना लालन दोउ,

कुसुम-लतान पर बैठे मन भावैं[२] ॥

[१७५] राग कान्हरा

बरन-बरन बादर मनहरन, उदै करन काम,

धाम तैं निकसत ही ऐसे लागे ।

राजत दुरि जात कबहूँ, कबहूँ प्रगट होत,

अरुन भए नैना मानहुँ निसि के जागे ॥

बीच-बीच पीत बसन इंद्र धनुष मुकट मनि,

मंद-मंद गरजि बोलन पिय मन अनुरागे ।

---

१. वाणी ९२

२. संग्रह ३२, वाणी ९१

'सूरदास मदनमोहन' पिय की उपमा पावत,
गावत कबि छबि तिनके बड़ भागे[१] ॥

[१७६]

दामिनी चमकि-चमकि जात, दुरति स्याम घन मैं ।
मेरे मन-नैननि ऐसैई लागै, मानौं स्याम राजै स्याम तन मैं ॥
दूसरौ घन दामिनि जानति, तऊ न मानति देखन आवति,
लाजति, फिरि भाजति, सोचत आय सदन मैं ।
'सूरदास मदनमोहन' राधा सँग राजति बन,
जहाँ सुख मेरौई मन मानैं, यह कह्यौ न परै बचन मैं[२] ॥

---

१. संग्रह ५४, यह पद सूरसागर में निम्न प्रकार है—

बरन-बरन बादर मन हरन उदै करन मंजु,
निकसत बन-धाम तैं ऐसे दोऊ लागे ।
राजत, दुरि जात कबहुँ, कबहुँ पुनि प्रगट होत,
अरुन भये जु नैन सबही निसि जागे ॥
मोर मुकुट पीत बसन इंद्र धनुष बीच बीच,
मंद मंद गरजनि बोलनि अनुरागे ।
सूरदास प्रभु प्यारी की छबि प्रिय गावत नित,
पावत कबि उपमा जे ते बड़भागे ॥२७९५॥

२. संग्रह ११

[१७७]

स्यामा जू स्याम सौं कहति,
देखियै कुंज तैं निकसि उठे घन घोर ।
चहुँ दिसि तैं बादर आवत-धावत,
दुरद मत्त मानहुँ निज बंधन तोर ।।
दामिनि-दमक-चमक अंकुस रतन-जटित धरैं,
कुंभस्थल पाँति बलाक दंत, इंद्र धनुष मनौं पचरंग डोर ।।
'सूरदास मदनमोहन' इहिं समै जु मल्हार गावहु,
बिनती करति पाँयनि परि निहोर[1] ।

[१७८]

अब घन घोरि-घोरि बरसत,
हरि देखैं हरषत, लाड़िलौ चरावै गैया बन ।
पत्रिन के छता किएँ, सुभग सीसनि दिएँ,
पीतांबर भीजि लपटानौ तन ।।
गुंजा बनी बनमाल, धातु विचित्र अंग सब,
रंग छूटि चले साँवरे सजन ।
'सूरदास मदनमोहन' मुरली बजावै गावै,
लालन की यह छबि सदा रहो मेरे मन[2] ।।

---

१. संग्रह ४४

२. संग्रह ३१

[१७९] राग जैतश्री

श्री राधे जू देखियै बन-सोभा ।
बरषा रितु अति कुंज सुहाई । जहाँ-तहाँ कोकिल कल गाई ॥
सब्द परस्पर बोलत बोल । देखत तेरे नैन सलोल ॥
जहाँ-तहाँ प्रफुलित बन जुही । मानौं फूलन अलकैं गुही ॥
पीत-अरुन रंग फूले फूल । मानौं राजत अंग दुकूल ॥
फूले डोलत मधुप डुलावैं । उत्कंठा सौं तुमहिं बुलावैं ॥
हालति लता लता पै जात । हिलमिल करत तिहारी बात ॥
बृंदा बिपिन भूमि हरियारी । इंद्रबधू डोलत हैं न्यारी ॥
मानौं बये काम के बीज । तुम भूलौ सुख साबन तीज ॥
राधा प्रति यौं कहति बिहारी । बसियै आज कुंज मैं प्यारी ॥
'सूरदास मदनमोहन' स्यामा । केलि करौ मिलि मन अभिरामा[1]॥

हिंडोरा-झूलन— [१८०] राग ईमन

आयौ री साबन हरियारौ, सोहत बन ।
हरति भूमि पर इंद्रबधू सी राधिका,
सब सखियन सँग लीनैं, पहिरैं कसूमी सारी, कंचन तन ॥
रंग भर सुरँग हिंडोरैं, झूलति नव नागरि-नागर,
मानौ रंग च्वै चल्यौ है एड़ी-अँगुरिन ।
'सूरदास मदनमोहन' पिय के गुन गाबत,
यह सुख अति आनंद मगन मन[2] ॥

---

१. वाणी ९८, कीर्तन कुसुमाकर, पृ० ९८
२. वाणी ९७, वर्षोत्सव कीर्तन भाग २, पृ० ३४६

[१८१] राग ईमन

माई री, झूलत हैं रंग हिंडोरैं, सोभा तन स्याम-गोरैं,
नील-पीत पट घन-दामिनी के भौरैं ।
गोपीजन चहुँ ओरैं, झुलावति थोरैं-थोरैं,
पवन गमन आवै सौंधे की झकोरैं ॥
सोभा-सिंधु मन बोरैं, नैनन सौं नैना जोरैं,
रीझि-रीझि प्रान वारत, छबि पर तृन तोरैं ।
'सूरदास मदनमोहन' चित चोरयौ मुरली की घोर,
धुनि सुनि सुर-बधू सीस ढोरैं[1] ॥

[१८२]

झूलत हिंडोरैं ऐसी सोभा भई ।
बरन-बरन सारी, पहिरैं ब्रज की नारी,
मानौं अनंग फुलवारी बई ॥
कंचन हिंडोल रच्यौ, मुकतनि-मनिन खच्यौ,
गौर-स्याम तहाँ केलि ठई ।
पटुली-डांड़ी अरु खंभन बीच, प्रतिबिंबन आन छई[2] ॥

[१८३] राग केदारो

दोऊ रीझे-रीझे डोलत हैं रस-रंग हिंडोरैं ।
नेह खंभ, डाँड़ी चतुरई, हाव-भाव मरुवे, चौंप पटुली,
अनुपम भाव कटाच्छ, रमकि चित चोरैं ॥
रस अनंत, बरसि मंद, गरजि हँसन, किलक दसन,
चमकति चपला हुलास, पवन झकोरैं ।

---

१. वाणी ९६, वर्षोत्सव कीर्तन, भाग २, पृ० ३४६

२. वाणी १००

बललित बलय नूपुर मानौं बिहंग बोलैं,
'सूरदास मदनमोहन' दंपति बतरात जात काम-रस मोरैं[१]।।

[१८४]

सहचरि सब आईं,सुख सौं देति झुलाईं, गावति अपुने चौंप रईं।।
बारंबार देखि सुख उपजै, अधिक झुलाई देति,
बिरमि-बिरमि मृदु बान चईं ।
मानौं कनक-बेल और द्रुम-पल्लव, पवन झकझोर अध-ऊर्ध गईं ।।
झूलनके झककोरन टूटि गये हार-डोर,पियकी ओर रिस भरि चितईं ।
बेसरि निकसि गई,लाल अधबीच लई,बदन छुबन मिस नासिका छुई।।
आरस के झकझोन भरि गये स्वांस,
तन बिथकित जानि, भुज बीच लई ।
'सूरदास मदनमोहन'निज पीत पट करत ब्यार,बाढ़ी प्रीति नई[२]।।

[१८५]

रमकि-झमकि झूलैं, झुलावैं जुबति राधा प्यारी कौं हिंडोरैं ।
तैसिय सुरंग सारी कसूँभी बर-बरन,
बादर राजत चहुँ दिसि घन घोरैं ।।
याहीं तैं दुरि-दुरि जात दामिनी, उपमा न पावत गात गोरैं ।
'सूरदास मदनमोहन' रीझि-रीझि डारत हैं तृन तोरैं[३] ।।

---

१. वाणी ९९, अंतिम चरण का पाठ ठीक नहीं है ।
२. वाणी १०१, पाठ ठीक नहीं है ।
३. वाणी ९३

पदानुक्रमणिका

★

सूचना—

(१) पुष्पांकित क्रम संख्या के पदों से मिलते हुए पद सूरदास के नाम से भी प्राप्त हैं, जो अधिकतर ना० प्र० सभा के सूरसागर में और कुछ कीर्तन पोथियों में मिलते हैं।

(२) मुद्रित पद तीन मुख्य प्रतियों से संकलित किये गये हैं, जिनके नाम और संकेताक्षर इस प्रकार हैं—

१. विद्याविभाग काँकरौली का हस्त लिखित संकलन (सं)

२. श्री सूरदास मदनमोहन की सुहृदय वाणी—मुद्रित प्रति (वा)

३. नित्योत्सव, वर्षोत्सव एवं बसंत धमार के कीर्तन (की)

क्रम सं०	पदों की प्रथम पंक्ति	पद सं०	प्रतियों का संकेत		
१२	आजु कछु भोर ही तें माई मोहन करति है	११	सं	...	...
१३	आजु कहाँ धौं बसे हो लाल, बाल के रंग	१०३	सं	...	...
१४	आजु कौन धौं बनाय पठये हौ मेरैं	९९	...	वा	...
१५	आजु तिहारे खिरक में हमारी गौरी गैया	४४	सं	...	...
*१६	आधौ मुख नीलांबर सौं ढाकैं	३९	सं	वा	...
१७	आभूषन अंग-अंग तेरेई अनुचर	३५	सं	...	...
१८	आयौ री सावन हरियारी सोहत बन	१८०	...	वा	की
१९	आली री रास मंडल मध्य नृत्य करत	१५९	...	वा	...
२०	ईंडुरिया के पलटै मुरली लै भाजी	४२	सं	...	...
२१	उरहाने मिस आई, दृष्टि परे कन्हाई	७८	सं	...	...
२२	ऊँचे करि नैन, तू देखि री रैन	११४	सं	...	...
२३	ऊतरु कहिहौं कहा जाय पिय सौं	१२६	सं	वा	की
२४	एक प्रीति बस जिनि किये मोहन	३	...	वा	...
२५	एती रिस कब तें कीजियत री गुन–आगरी	११८	सं	...	...
२६	एरी, पाँयन की चंचलता क्रम-क्रम ऊँचे चढ़ि	३२	सं	...	...
२७	ऐसी दुपहरी में कहाँ चली कामिनी	९७	...	वा	की
२८	ऐसौ मोहि अपुनपौ लागत	१४१	सं	...	...
२९	कबहु हरषि, कबहू डरपति सी	१३८	सं	...	
३०	कहौ कौन निहोर, भोरैं आये भवन मेरे	१००	...	वा	...
३१	काहे कौं अरबरात स्याम	१०७	सं	...	...
३२	काहै मनाऊँ स्याम लाल, बाल जोरै नहिं	१३१	सं	वा	...
३३	कित तें आये हो तुम लाल, ऐसी कौन बाल	१०४	...	वा	...
३४	कुंजन माँझ बिराजत मोहन-राधिका	५३	...	वा	...
३५	कै मेरे स्याम लाल हो, नैन बिसाल हो	३०	सं	...	...
३६	कौन बटावनी सी ठाड़ी	७०	सं	वा	...